एक कहानी कई रंग–9 ः

बूट पहने हुए बिल्ला जैसी कहानियॉ

संकलन और अनुवाद
सुषमा गुप्ता

2022

Book Title: Boot Pahane Hue Billa Jaisi Kahaniyan (Like Puss in Boots)
Cover Page picture : Puss in Boots
Published Under the Auspices of Akhil Bhartiya Sahityalok

E-Mail: hindifolktales@gmail.com
Website: www.sushmajee.com/folktales/index-folktales.htm

Copyrighted by Sushma Gupta 2018
No portion of this book may be reproduced or stored in a retrieval system or transmitted in any form, by any means, mechanical, electronic, photocopying, recording, or otherwise, without written permission from the author.

Map of the World

विंडसर, कैनेडा

2022

Contents

एक कहानी कई रंग 5
बूट पहने हुए बिल्ला जैसी कहानियॉ 7
1 बूट पहने हुए बिल्ला–**1697** 9
2 बूट पहने हुए बिल्ला–**1562** 20
3 पिप्पो 28
4 डोमिंगो का बिल्ला 38
5 लौर्ड पीटर 43
6 हामदानी 55
7 सुलतान सूले 102
8 जियोवानूज़ा लोमड़ी 118
9 छोटा लोमड़ा और अनार राजा 134
10 एक लोमड़ा और एक राजा का बेटा 144
11 सूरज और चॉद की बेटी 157
12 शादी कराने वाला गीदड़ 176
13 होशियार गीदड़ 191
14 मटर और बीन्स का व्यापारी 198
15 डौन जोसफ़ पेयर 209

एक कहानी कई रंग

लोक कथाओं के महत्व को ध्यान में रखते हुए कुछ समय पहले हमने संसार के सब देशों से कुछ लोक कथाऐं संकलित की थीं। उनको हमने "देश विदेश की लोक कथाऐं" सीरीज़ में प्रकाशित किया था। वे कथाऐं जब काफी संख्या में इकट्ठी हो गयीं, करीब करीब **2500,** तो उनमें एक तस्वीर देखी गयी। वह थी कि उनमें से कुछ कहानियॉ एक सी थीं और आपस में बहुत मिलती जुलती थीं।

तो लोक कथाओं की एक और सीरीज़ शुरू की गयी और वह है "एक कहानी कई रंग"। कितना अच्छा लगता है जब एक ही कहानी के हमें कई रूप पढ़ने को मिलते हैं। इन पुस्तकों में कुछ इसी तरह की कहानियॉ दी गयी हैं। सबसे पहले इसमें मूल और सबसे ज़्यादा लोकप्रिय कहानी दी गयी है और उसके बाद ही उसके जैसी दूसरी कहानियॉ दी गयी हैं जो दूसरी जगहों पर पायी जाती हैं। हम यह दावा तो नहीं करते कि हम वैसी सारी कहानियॉ यहॉ दे रहे हैं पर हमारी कोशिश यही रहेगी कि हम वैसी ज़्यादा से ज़्यादा कहानियॉ एक जगह इकट्ठा कर दें।

इस सीरीज़ में बहुत सारी पुस्तकें हैं जो यह बताती हैं कि केवल **2–4** कहानियॉ ही ऐसी नहीं हैं जो सारे संसार में कई जगह पायी जाती हों बल्कि बहुत सारी कहानियॉ ऐसी हैं जो अपने अपने तरीके से भिन्न भिन्न जगहों पर कही सुनी जाती हैं। इनमें सिन्डरैला, टाम थम्ब, बिल्ला और चुहिया, सोती हुई सुन्दरी, छह हंस[1] आदि मशहूर कहानियॉ दी गयी हैं।

इस बात का विशेष ध्यान रखा गया है कि ये सब लोक कथाऐं हर वह आदमी पढ़ सके जो थोड़ी सी भी हिन्दी पढ़ना जानता हो और उसे समझता हो। ये कथाऐं यहॉ तो सरल भाषा में लिखी गयी है पर इनको हिन्दी में लिखने में कई समस्याऐं आयी है जिनमें से दो समस्याऐं मुख्य हैं।

एक तो यह कि करीब करीब **95** प्रतिशत विदेशी नामों को हिन्दी में लिखना बहुत मुश्किल है चाहे वे आदमियों के हों या फिर जगहों के। दूसरे उनका उच्चारण भी बहुत ही अलग तरीके का होता है। कोई कुछ बोलता है तो कोई कुछ। इसको साफ करने के लिये इस सीरीज़ की सब किताबों में फुटनोट्स में उनको अंग्रेजी में लिख दिया गया हैं ताकि कोई भी उनको अंग्रेजी के शब्दों की सहायता से कहीं भी खोज सके। इसके अलावा और भी बहुत सारे शब्द जो हमारे भारत के लोगों के लिये नये हैं उनको भी फुटनोट्स और चित्रों द्वारा समझाया गया है।

ये लोक कथाऐं आप सबका मनोरंजन तो करेंगी ही साथ में यह जानने की प्रेरणा भी देंगी कि एक ही तरह की कहानी दूसरे देश में किस तरह से पहुँची। आशा है कि हिन्दी साहित्य जगत में इनका भव्य स्वागत होगा।

सुषमा गुप्ता
2022

[1] Cinderella, Toma Thumb, Cat and Rat, Sleeping Beauty, Six Swans etc stories

बूट पहने हुए बिल्ला जैसी कहानियॉ

बूट पहने हुए बिल्ला एक ऐसी विदेशी कहानी है जो हम सबको दूसरों की सहायता करना सिखाती है।

हमने एक नयी सीरीज़ शुरू की है "एक कहानी कई रंग"। इसमें वे कथाऐं शामिल की गयीं हैं जो सुनने में एक सी लगती हैं पर अलग अलग जगहों पर अलग अलग तरीके से कही सुनी जाती हैं। बच्चों जैसे तुम लोग कहानियॉ सुनते हो वैसे ही दूसरे देशों में भी वहॉ के बच्चे कहानियॉ सुनते हैं। क्योंकि कहानियॉ हर समाज की अलग अलग होती हैं इसलिये उन बच्चों की कहानियॉ भी तुम्हारी कहानियों से अलग हैं।

पर कुछ कहानियॉ ऐसी भी हैं जो भिन्न भिन्न देशों में कही सुनी जाती हैं पर सुनने में एक सी लगती हैं। यहॉ कुछ ऐसी ही कहानियॉ दी जा रही हैं। ये सब कहानियॉ कुछ इस तरह से चुनी गयी हैं कि ये सब कहानियों एक सी कहानियों की श्रेणी में रखी जा सकती हैं। ऐसी बहुत सी कहानियॉ हैं। इन पुस्तकों की पहली कहानी वह कहानी है जो बहुत लोकप्रिय कहानी है उसके बाद ही फिर उसकी जैसी और कहानियॉ दी गयी हैं। ऐसी कहानियॉ हम "एक कहानी कई रंग" की सीरीज़ के अन्तर्गत प्रकाशित कर रहे हैं। अगर इन कहानियों के अलावा भी तुम और कोई ऐसी कहानी जानते हो तो हमें जरूर लिखना। हम उसको इसके अगले आने वाले संस्करण में शामिल करने का प्रयास करेंगे।

अब तक इस सीरीज़ में हम आठ पुस्तकें प्रकाशित कर चुके हैं। इन सब पुस्तकों के नाम इस पुस्तक के पीछे दिये हुए हैं। इन कहानियों की सीरीज़ में सबसे पहली पुस्तक थी "बिल्ला और चुहिया जैसी कहानियॉ"। "एक कहानी कई रंग–1" में "बिल्ला और चुहिया" जैसी कहानियॉ हैं जिनमें कोई एक किसी से कोई काम कराना चाहता है पर वह उस काम को तब तक नहीं करता जब तक उसकी अपनी शर्त पूरी नहीं हो जाती सो उसको उसकी शर्त पूरी करने के लिये कहीं और जाना पड़ता है। और यह कड़ी तब तक चलती रहती है जब तक उसका अपना काम नहीं हो जाता।[2] इसकी तीसरी पुस्तक में "टौम थम्ब" जैसी कहानियॉ दी गयीं हैं। इसमें बहुत छोटे बच्चे की करामातों की कथाऐं हैं।[3]

अब इस सीरीज़ की इस नवीं पुस्तक में "बूट पहने हुए बिल्ला"[4] जैसी कुछ लोक कथाऐं दी जा रही हैं। इन कथाओं में कोई जानवर गरीब आदमियों की सहायता कर के उनकी शादी राजकुमारियों या अमीर लड़कियों से करवाता है और उसकी ज़िन्दगी बदल देता है। तो लो पढ़ो ये अजीबो गरीब लोक कथाऐं "पुस इन बूट्स" जैसी या हिन्दी में "बूट पहने हुए बिल्ला" जैसी कहानियॉ।

यह कहानी मूल रूप से इटली की कहानी है जिसे सबसे पहले जियोवानी स्ट्रापरोला ने इसे अपनी "द फ़ेसशस नाइट्स औफ स्ट्रापरोला" में लिखा था जो **1550–1553** में लिखी गयी थी।[5] चार्ल्स परौ ने इसे **1697** में प्रकाशित किया गया था। बाद में यह यूरोप महाद्वीप की साहित्यिक कहानी बन गयी। इसको "मास्टर कैट" और "बूटैड कैट" भी कहते हैं। हमें विश्वास है कि ये लोक कथाऐं भी तुम लोगों को इन लोक कथाओं की सीरीज़ में प्रकाशित की गयी दूसरी पुस्तकों की तरह ही बहुत पसन्द आयेंगी।

---

[2] "One Story Many Colors-1" – like "Cat and Rat"

[3] "One Story Many Colors-3" – like "Tom Thumb"

[4] "One Story Many Colors-8" – like "Puss in Boots"

[5] It was originally written by Giovanni Straparola in his "Facetious Nights" between 1550 and 1553. Charles Perrault published it in 1697. Later it was adapted by several story writers and it became a literary story. It is titled as "Master Cat" or Booted Cat" also.

1 बूट पहने हुए बिल्ला–1697[6]

“पुस इन बूट्स” अंग्रेजी में, या “बूट पहने हुए बिल्ला” हिन्दी में, यूरोप महाद्वीप के इटली देश की एक बहुत ही मशहूर और लोकप्रिय लोक कथा है।[7] पर यह कथा यूरोप महाद्वीप के फ्रांस देश की लोक कथाओं से ली गयी है। इस कथा का यही रूप सबसे अधिक लोकप्रिय है। तो लो पढ़ो यह कथा अब हिन्दी में।

एक बार एक चक्की चलाने वाला था जिसने अपने तीन लड़कों के लिये विरासत में केवल अपनी एक चक्की, एक गधा और एक बिल्ला छोड़ा था।

उसके बच्चों ने अपने पिता की छोड़ी हुई चीज़ों को आपस में बॉटने के लिये न तो किसी क्लर्क से बात की और न ही किसी वकील की सलाह ली क्योंकि वे लोग तो उनके पिता की छोड़ी हुई सारी चीज़ें ही खा जाते। इसलिये उन्होंने उन तीनों चीज़ों को आपस में ही बॉट लिया।

---

[6] Puss in Boots – a fairy tale from France, Europe. Written by Charles Perrault in 1697.
Edited by D. L. Ashliman. 2002 – DL Ashliman has taken it from “The Blue Fairy Book”, by Andrew Lang, ca. 1889.
Andrew Lang took it from, “Histoires ou contes du temps passé, avec des moralités: Contes de ma mère l'Oye:, by Charles Perrault. Paris, 1697.
Its English version may be read at https://sites.pitt.edu/~dash/perrault04.html

[7] You may read its original version in my book “Facetious Nights of Straparola” in Hindi available from hindifolktales@gmail.com

बडे लड़के ने पिता की चक्की ले ली। दूसरे लड़के ने पिता का गधा ले लिया और तीसरे वाले ने पिता का बिल्ला ले लिया। सबसे छोटा लड़का बहुत परेशान था क्योंकि उसको अपने पिता की चीज़ों में से सबसे कम हिस्सा मिला था।

वह बोला — "मेरे भाई तो अपनी दोनों चीज़ों को मिला कर भी काफी पैसा कमा लेंगे पर मेरा क्या होगा। अपना बिल्ला खाने के बाद और उसकी खाल का मफलर बनाने के बाद तो मैं भूखों ही मर जाऊँगा।"

उसका बिल्ला यह सब सुन रहा था पर उसने ऐसा बहाना किया जैसे उसने कुछ सुना ही नहीं। वह बोला — "मेरे मालिक, आप इतने चिन्तित न हों।

अगर आप मुझे एक थैला दे देंगे और मेरे लिये एक जोड़ी जूते बनवा देंगे ताकि मैं मिट्टी में भी चल सकूँ तो आप देखेंगे कि आप इतने गरीब भी नहीं हैं।"

बिल्ले के मालिक ने हालाँकि बिल्ले के इस कहने पर ज़्यादा ध्यान नहीं दिया पर फिर भी उसने यह देखा था कि वह बिल्ला चूहों और चुहियों को पकड़ने के लिये काफी चालाकियों का इस्तेमाल करता था जैसे कभी वह अपनी एड़ी पर लटक जाता तो कभी वह खाने में छिप कर मरे जैसा पड़ने का बहाना करता आदि आदि।

इससे उसने सोचा कि शायद वह इन खराब दिनों में उसकी कोई सहायता कर सके इसलिये उसने उस बिल्ले ने जो कुछ मॉगा वह उसने उसको बनवा कर दे दिया।

बिल्ले ने भी अपने जूते पहने, अपना थैला अपने गले में लटकाया और उस थैले की रस्सी अपने अगले पंजे में पकड़ी और एक ऐसी जगह गया जहॉ बहुत सारे खरगोश रहते थे।

उसने अपने थैले में कुछ भूसा और हरे पत्ते भर लिये और वहॉ जा कर ऐसे लेट गया जैसे कि वह मरा पड़ा हो। वहॉ लेट कर वह कुछ ऐसे बच्चे खरगोशों का इन्तजार करने लगा जो बेचारे दुनियॉ की चालाकियों से बिल्कुल ही बेखबर थे और आ कर उसका थैला देखने वाले थे कि उस थैले में क्या था।

वह कुछ ही देर वहॉ लेटा था कि उसको वह मिल गया जो वह चाहता था। एक बेवकूफ बच्चा खरगोश दौड़ता हुआ वहॉ आया और उसके थैले में आ कर घुस गया।

बस बिल्ले को इसी का तो इन्तजार था। मालिक बिल्ले ने तुरन्त ही उस थैले की रस्सी कस कर बन्द कर दी।

अपना शिकार पकड़ कर शान के साथ वह वहॉ से एक राजा के महल पहुॅचा। वहॉ जा कर उसने महल के चौकीदार से कहा कि वह मैजेस्टी से मिलना चाहता था।

चौकीदार उसको सीढ़ियों से ऊपर राजा के कमरे में ले गया तो बिल्ले ने राजा से कहा — "मैजेस्टी, मैं अपने लौर्ड कैरैबास के

मालिक[8] की तरफ से आपके लिये भेंट में एक खरगोश ले कर आया हूँ।"

राजा बोला — "अपने मालिक को कहना कि हम उनकी भेंट पा कर बहुत खुश हैं और उनको धन्यवाद देते हैं।"

दूसरी बार वह एक अनाज के खेत में चला गया और वहॉ जा कर छिप गया। उसने फिर से अपना थैला खुला रखा और जब कई तीतर[9] उस थैले में आ कर बन्द हो गये तो उसने अपने थैले के मुँह को रस्सी खींच कर बन्द किया और उनको भी राजा को भेंट में दे दिया जैसे पहले उसने खरगोश को दिया था।

राजा ने भी पहले की तरह से इन तीतरों को भी बड़ी खुशी से ले लिया और इस बार उसको इनाम भी दिया।

इस तरह वह बिल्ला **2–3** महीने तक समय समय पर राजा के लिये अपने मालिक की तरफ से कुछ कुछ भेंटें ले जाता रहा।

इस राजा की एक बेटी थी जो दुनियॉ की सबसे सुन्दर लड़कियों में से एक थी।

एक दिन बिल्ले को पता चला कि आज राजा नदी के किनारे अपनी बेटी के साथ घूमने जायेगा तो बिल्ले ने अपने मालिक से कहा — "अगर आप मेरी बात मानें तो आज आपकी किस्मत खुल

[8] Master of Carabas – this is the name the Cat wanted to give to his master.
[9] Translated for the word "Partridge". See its picture above.

सकती है। आपको बस इतना करना है कि आपको जा कर नदी में उसी जगह नहाना है जहॉ मैं कहूँ। बाकी का मामला आप मुझ पर छोड़ दें।"

कैरैबास के मारकिस[10] ने वही किया जो उसके बिल्ले ने उससे करने को कहा पर वह यह नहीं जानता था कि वह वैसा क्यों कर रहा था।

जब वह नहा रहा था तो राजा वहॉ से गुजरा। बिल्ले ने चिल्लाना शुरू किया — "मेरी सहायता करो, मेरी सहायता करो। मेरे मालिक कैरैबास के मारकिस डूब रहे हैं।"

यह सुन कर राजा ने अपनी गाड़ी की खिड़की से बाहर सिर निकाल कर झॉका तो देखा कि वहॉ तो वह बिल्ला था जो उसके पास कैरैबास के मारकिस की भेंटें ले कर आया करता था।

उसने तुरन्त ही अपने रक्षकों को हुक्म दिया कि वे कैरैबास के मारकिस को डूबने से बचायें।

जब वे रक्षक बेचारे कैरैबास के मारकिस को नदी में से बाहर निकाल रहे थे तो वह बिल्ला गाड़ी के पास आया और राजा से बोला — "जब मेरे मालिक नहा रहे थे तो कुछ चोर आये और उनके कपड़े ले कर भाग गये। हालॉकि वह ज़ोर ज़ोर से "चोर चोर" चिल्लाये भी पर उससे कोई फायदा नहीं हुआ।"

[10] Marquis of Carabas - A marquis is a nobleman of hereditary rank in various European peerages and in those of some of their former colonies.

असल में उस बिल्ले ने ही अपने मालिक के कपड़े एक पत्थर के पीछे छिपा दिये थे।

राजा ने अपने औफीसरों को हुक्म दिया कि वे कैरैबास के मारकिस के लिये उसके कपड़ों में से उसका सबसे अच्छा सूट ले कर आयें।

राजा के रक्षक अब तक कैरैबास के मारकिस को नदी में से निकाल कर ले आये थे। उधर उसके औफीसर भी उसके लिये कपड़े ले कर आ गये थे। राजा ने मारकिस को वे कपड़े पहना दिये तो वह लड़का तो राजा के कपड़ों में बहुत सुन्दर लगने लगा।

राजा की बेटी तो उसको देख कर मन ही मन उससे प्यार करने लगी। कैरैबास के मारकिस को तो इस काम के लिये बस उस राजकुमारी की तरफ केवल **2–4** बार प्यार भरी नजरों से ही देखना था पर यहॉ तो राजकुमारी खुद ही उससे प्यार करने लगी थी तो उसको उसकी भी जरूरत नहीं पड़ी।

राजा ने मारकिस को गाड़ी के अन्दर बुला लिया और उसको अपने साथ घुमाने के लिये ले चला। यह देख कर बिल्ले को बहुत खुशी हुई कि उसका प्लान ठीक काम रहा था। वह राजा की गाड़ी के आगे आगे चल दिया।

आगे जा कर उसने देखा कि कुछ लोग एक घास के मैदान की घास काट रहे थे। उसने उनसे कहा — "ओ मेरे अच्छे साथियो। देखो वह पीछे राजा आ रहा है।

अगर तुम लोग राजा से यह नहीं कहोगे कि तुम लोग कैरैबास के मारकिस के घास के मैदान की घास काट रहे हो तो तुम लोग पीस दिये जाओगे।" वे बेचारे डर के मारे यह कहने के लिये राजी हो गये।

जब राजा वहाँ तक आया तो उसने उन घास काटने वालों से पूछा कि वे किसके घास के मैदान की घास काट रहे हैं। उन्होंने जवाब दिया कि वे कैरैबास के मारकिस के घास के मैदान की घास काट रहे हैं।

कैरैबास का मारकिस बोला — "देखिये इस घास के मैदान में हर साल बहुत अच्छी घास होती है। कोई साल ऐसा नहीं जाता जब यहाँ की घास अच्छी न होती हो।"

वह बिल्ला अभी भी आगे ही आगे भागा जा रहा था।

आगे जा कर वह कुछ फ़सल काटने वालों से मिला तो उनसे बोला — "ओ मेरे अच्छे साथियो। देखो वह राजा आ रहा है अगर तुम लोग राजा से यह नहीं कहोगे कि तुम लोग कैरैबास के मारकिस के खेतों की फसल काट रहे हो तो तुम लोग पीस दिये जाओगे।"

वे बेचारे भी डर के मारे यह कहने पर राजी हो गये।

जब राजा उधर से गुजरा तो उसने उनसे भी पूछा कि ये खेत किसके हैं जिनका अन्न तुम लोग काट रहे हो। वे सभी एक आवाज में बोले — "हम कैरैबास के मारकिस के खेतों का अन्न काट रहे हैं।"

यह सुन कर राजा और कैरैबास के मारकिस दोनों बहुत खुश हुए। राजा ने कैरैबास के मारकिस को इतनी अच्छी उपज के लिये बधाई दी।

बिल्ला इस तरह से आगे और और आगे भागा जा रहा था और जो लोग भी रास्ते में मिलते जाते थे वे सब लोग राजा के पूछने पर यही जवाब दिये जो बिल्ले ने उनसे कहने के लिये कहा था।

इस सबको सुन कर राजा और कैरैबास के मारकिस दोनों ही बहुत खुश थे। राजा कैरैबास के मारकिस का राज्य देख कर बहुत प्रभावित हुआ।

इसके बाद बिल्ला एक बहुत बड़े शाही महल के पास आ पहुॅचा। उस महल का मालिक एक ओगरे[11] था। यह ओगरे वहॉ का सबसे अमीर आदमी था।

वह उस ओगरे के पास गया और उससे कहा कि वह उसी से मिलने आया था क्योंकि उससे मिले बिना तो वह वहॉ से जा ही नहीं सकता था। ओगरे ने उसको एक अच्छे भले आदमी की तरह से अपने महल में बुलाया और बिठाया।

बिल्ला बोला — "मैंने सुना है कि आप अपने आपको किसी भी जीव में बदल सकते हो जिसके बारे में भी आप सोचें जैसे शेर हाथी या फिर कोई और।"

[11] An ogre (feminine ogress) is a being usually depicted as a large, hideous, manlike monster that eats human beings.

ओगरे बोला — "हाँ यह सच है और तुमको यह विश्वास दिलाने के लिये कि मैं यह कर सकता हूँ मैं अभी शेर बन जाता हूँ।" यह कह कर वह तुरन्त ही शेर बन गया।

शेर को अपने इतनी पास देख कर बिल्ला तो इतना डर गया कि वह कूद कर छत पर चढ़ गया। इसने उसको और ज़्यादा मुश्किल में डाल दिया क्योंकि उसके जूते छत पर लगे टाइल्स पर नहीं चल सकते थे।

तभी ओगरे अपना शेर वाला रूप बदल कर अपने असली रूप में आ गया सो वह बिल्ला भी छत पर से नीचे उतर आया और बोला — "मैं तो वाकई बहुत डर गया था।"

बिल्ला फिर बोला — "और मैंने यह भी सुना है कि आप अपने आपको सबसे छोटे जानवर में भी बदल सकते हैं जैसे चूहा, चींटी आदि। पर मुझे इस बात पर विश्वास नहीं होता। मुझे लगता है कि यह काम आप कर ही नहीं सकते।"

ओगरे बोला — "क्या कहा यह काम मैं नहीं कर सकता? देखो ज़रा मैं कर सकता हूँ या नहीं।"

कह कर वह तुरन्त ही एक चूहे में बदल गया और फर्श पर इधर उधर घूमने लगा। बिल्ले ने जैसे ही चूहे को इधर इधर घूमते देखा वह चट से उसे खा गया।

इसी बीच राजा उधर आ निकला तो उसने ओगरे का इतना अच्छा किला देखा तो उसने सोचा कि उस किले को देखा जाये।

उधर बिल्ले ने भी राजा की गाड़ी की आवाज किले के अन्दर आती सुनी तो दौड़ कर बाहर गया और बोला — "मैजेस्टी का मेरे कैरैबास के मारकिस के महल में स्वागत है।"

"क्या? मेरे कैरैबास के मारकिस का किला?"

फिर उसने कैरैबास के मारकिस से पूछा — "क्या यह किला आपका है? इससे सुन्दर और बढ़िया किला तो कोई हो ही नहीं सकता जिसके चारों तरफ इतनी सुन्दर शाही इमारतें हैं। अगर आप को कोई ऐतराज न हो तो हम इसके अन्दर चलें?"

कैरैबास के मारकिस बोला — "हॉ हॉ क्यों नहीं। मुझे क्या ऐतराज हो सकता है बल्कि यह तो मेरे लिये बड़ी खुशी की बात होगी।"

मारकिस ने अपना हाथ बढ़ा कर राजकुमारी को उस शाही गाड़ी से उतारा और राजा के पीछे पीछे चला। राजा और उसकी बेटी दोनों मारकिस के अच्छे स्वभाव और उसके गुणों से बहुत प्रभावित थे। और राजकुमारी को तो उससे बहुत ही बुरी तरह प्यार हो गया था।

किले के अन्दर जा कर राजा को शाही शान से बिठाया गया और उसको बढ़िया शराब पेश की गयी। राजा ने **5–6** गिलास शराब पी और मारकिस का इतना बड़ा राज्य देख कर बोला — "ओ मारकिस, अगर तुम मेरे दामाद नहीं बने तो बस यह समझ लो कि यह तुम्हारी ही गलती होगी।"

यह सुन कर मारकिस ने राजा के सामने कई बार सिर झुकाया और मैजेस्टी ने जो इज़्ज़त उसको दी थी उसको खुशी से स्वीकार किया। उसकी शादी राजकुमारी से उसी दिन हो गयी।

बिल्ले को एक बड़ा लौर्ड बना दिया गया। बिल्ला भी चूहों के पीछे फिर कभी नहीं भागा सिवाय कभी कभी आनन्द लेने के लिये। क्योंकि अब तो वह एक बड़ा लौर्ड बन गया था न।

2 बूट पहने हुए बिल्ला–1562[12]

इससे पहले जो हमने इस कहानी का रूप दिया था वह अजकल का सबसे अधिक लोकप्रिय रूप है इसलिये हमने उसे सबसे पहले दिया हुआ है। इसे चार्ल्स परौ ने **1697** में लोकप्रिय बनाया। पर इससे पहले भी इन्होंने ही इसे लिखा था – **1562** में। सबसे पुराना इसका यही रूप मिलता है। इस रूप का अंग्रेजी अनुवाद थोमस फ़ैडैरिक थोमस केन ने अपनी पुस्तक में दिया है जिसका हिन्दी अनुवाद हम यहॉ प्रस्तुत कर रहे हैं।

एक बार की बात कि बोहेमिया में एक बहुत ही गरीब स्त्री रहती थी जिसका नाम था सोरियाना। उसके तीन बेटे थे – दुसोलीनो, तैसीफ़ोन और तीसरा खुशकिस्मत कौन्स्टैन्टाइन।[13]

उसके पास केवल तीन चीज़ें थीं – आटा मलने के बाद उसको रखने का एक बर्तन, एक चकला और एक बिल्ला। जब सोरियाना काफी बूढ़ी हो गयी और वह मरने वाली हो रही थी तो उसने अपने बच्चों में से अपना बर्तन अपने बड़े बेटे को दिया चकला अपने दूसरे बेटे को दिया और बिल्ला अपने सबसे छोटे बेटे को दिया।

जब उनकी मॉ मर गयी तो उसको दफ़न कर दिया गया। उसके बाद क्योंकि पड़ोसियों को कभी आटा रखने के बर्तन की

[12] Puss in Boots. This translation of Perrault's edition of 1562 (Venice version) tale in English is given in the "Notes" section of the Book "Italian Popular Tales" by Thomas Frederick Crane. 1885. I have translated the same version here in HIndi for our Hindi readers.

[13] There lived an old woman named Soriana who had three sons – Dusolino, Tesifone and Constantine the Luckey in Bohemia.

जरूरत होती तो कभी बेलन की जरूरत होती तो वे उनको उन्हें उधार दे देते।

क्योंकि वे जानते थे कि दोनों भाई बहुत गरीब थे सो इनके बदले में वे उनको कुछ केक बेक कर के दे देते जिसे वे खा लेते पर वे कौन्स्टैन्टाइन को उसमें से कुछ नहीं देते।

और अब अगर कौन्स्टैन्टाइन उनसे कुछ मॉगता भी तो वे उसे उसकी बिल्ली के पास जाने के लिये कहते कि जो उसे चाहिये वह वह उसी से ले ले। इससे कौन्स्टैन्टाइन और उसकी बिल्ली दोनों को बहुत तकलीफ उठानी पड़ती।

अब यह बिल्ली तो जादू की बिल्ली थी। उसको कौन्स्टैन्टाइन पर दया आने लगी और उसके दोनों बड़े भाइयों पर गुस्सा जो उसके साथ इतनी बुरी तरह से बर्ताव करते थे।

एक दिन उसने कौन्स्टैन्टाइन से कहा — "कौन्स्टैन्टाइन तुम इतने दुखी मत हो क्योंकि मैं तुम्हारी और अपनी दोनों की देखभाल करूँगी।"

सो वह कौन्स्टैन्टाइन को छोड़ कर मैदानों में चला गयी। फिर उसने सोने का बहाना किया और एक बड़ा खरगोश[14] पकड़ कर उसे मार

[14] Translated for the word "Hare" – hare is a type of rabbit but is bigger than the rabbit. See its picture above.

दिया। फिर वह शाही महल चली गयी और दरबारियों के सामने बोली कि वह राजा से मिलना चाहती थी।

राजा ने जब यह सुना कि एक बिल्ली उससे मिलना चाहती थी उसको अपने सामने बुलाया और उससे पूछा कि वह क्या चाहती तो बिल्ली बोली कि उसके मालिक कौन्स्टैन्टाइन ने एक बड़ा खरगोश पकड़ा था जिसे उसने आपके पास भेजा है।

राजा ने उसकी भेंट स्वीकार कर ली और उससे पूछा कि यह कौन्स्टैन्टाइन कौन है। बिल्ली ने बताया कि दुनियॉ में सुन्दरता ताकत और अच्छेपन में कौन्स्टैन्टाइन से बढ़ कर और कोई नहीं है। यह सुन कर राजा ने उसका बहुत अच्छे से स्वागत किया और उसको बहुत कुछ खाने पीने को दिया।

जब बिल्ली खा पी चुकी तो उसने चालाकी से राजा से छिपा कर अपना पंजा भर कर अपना थैला भर लिया। फिर उसने राजा से जाने की इजाज़त मॉगी और उसे कौन्स्टैन्टाइन के पास ले गयी।

कौन्स्टैन्टाइन के भाई लोगों ने जब कौन्स्टैन्टाइन के पास वह खाना पीना देखा तो उन्होंने उससे उनको देने के लिये कहा पर उसने उनको साफ मना कर दिया। इस वजह से उन लोगों में आपस में जलन हो गयी जो उनके दिलों को काटती रही।

कौन्स्टैन्टाइन हालॉकि बहुत सुन्दर था लेकिन वह अकेलेपन की वजह से बहुत परेशान था। उसको खुजली हो गयी जिससे वह बहुत परेशान था। पर बिल्ली के साथ नदी पर जाते समय बिल्ली ने

उसके शरीर को सिर से पैर चाटा उसके बालों में कंघी की। कुछ दिन में ही वह बिल्कुल ठीक भी हो गया।

बिल्ली राजा को भेंटें देती रही और कौन्स्टैन्टाइन की सहायता करती रही। पर कुछ समय बाद वह इस तरीके से आते जाते इतनी थक गयी कि उसको लगा कि वह राजा के दरबारियों को इस तरह आ जा कर नाराज कर देगी।

सो उसने अपने मालिक से कहा — "अगर आप जैसा मैं आपसे कहूँ वैसा ही करें तो मैं आपको बहुत थोड़े समय में ही अमीर बना सकती हूँ।"

उसके मालिक ने पूछा — "कैसे।"

बिल्ली बोली — "आओ मेरे साथ आओ और अब मुझसे कोई और सवाल मत पूछना क्योंकि मैं अब तुम्हें अमीर बनाने के लिये बिल्कुल तैयार हूँ।"

सो वे दोनों एक नदी की तरफ गये जो महल के पास ही थी।

वहॉ पहुँच कर बिल्ली ने अपने समझौते के अनुसार उससे उसके कपड़े उतरवाये और उसको नदी में फेंक दिया। फिर वह ज़ोर ज़ोर से चिल्लाने लगी — "बचाओ बचाओ। मास्टर कौन्स्टैन्टाइन डूब रहे हैं।"

राजा ने जब यह सुना तो उसे याद आया कि इस नाम के आदमी ने तो उसको कई भेंटें भेजी हैं। सो उसने अपने कई लोग उसकी सहायता के लिये भेज दिये। जब कौन्स्टैन्टाइन को नदी के

बाहर निकाल लिया गया और उसे बढ़िया कपड़े पहना दिये गये तब उसको राजा के सामने ले जाया गया।

राजा ने उसका बड़े प्रेम से अपने महल में स्वागत किया और उससे पूछा कि उसको नदी में क्यों फेंका गया। कौन्स्टैन्टाइन तो पहले से ही दुखी था सो वह कुछ नहीं बोल सका पर बिल्ली जो हमेशा उसके साथ रहती थी बोली —

"ओ राजा। कुछ डाकुओं को अपने लोगों से यह पता चल गया कि इनके पास कुछ जवाहरात थे जो ये आपको भेंट में देने आ रहे थे। सो उन्होंने वे इनसे छीन लिये और इनको मारने के विचार से इन्हें नदी में धकेल दिया। पर इन लोगों का लाख लाख धन्यवाद है कि समय पर आ कर इन लोगों ने इनकी जान बचा ली।"

यह देख कर कि कौन्स्टैन्टाइन सुन्दर है और यह जान कर कि वह अमीर भी है राजा ने अपनी बेटी ऐलीसैत्ता[15] को उसको देने का विचार कर लिया। बेटी के लिये उसने बहुत सुन्दर कपड़े भी बनवाये और उसको जवाहरात भी दिये।

जब उन दोनों की शादी हो गयी तो राजा ने दस खच्चरों पर पैसा लदवाया और पॉच खच्चरों पर कपड़े लदवाये और बहुत सारे नौकर चाकरों के साथ अपनी बेटी को उसके पति के घर भेजा।

[15] Elisetta – name of the Princess

जब कौन्स्टैन्टाइन ने देखा कि वह तो अब कितना अमीर हो चुका है तो उसे यही पता नहीं चला कि वह अपनी पत्नी को कहॉ ले कर जाये। उसने अपनी बिल्ली से सहायता ली।

तो बिल्ली बोली — "मालिक आप चिन्ता न करें क्योंकि हम आपको सब कुछ देने वाले हैं।"

सो वे सब खुशी खुशी घोड़ों पर सवार हुए और बिल्ली उन सबके आगे आगे तेज़ी से भाग ली। सबको पीछे छोड़ कर वह आगे निकल गयी और कुछ घुड़सवारों से मिला तो उनसे कहा — "तुम लोग यहॉ क्या कर रहे हो। तुम यहॉ से तुरन्त ही चले जाओ। वह देखो यहॉ बहुत सारे लोग आ रहे हैं वे तुम्हें बन्दी बना लेंगे। वे लोग तुम्हारे पास ही हैं। तुम्हें उनके घोड़ों की आवाज तो सुनायी पड़ ही रही होगी।"

वे घुड़सवार बेचारे डर गये सो बोले — "तो फिर अब हम क्या करें।"

बिल्ली बोली — "तुम लोग ऐसा करना कि वे लोग अगर तुमसे यह पूछें कि तुम लोग कौन हो तो तुम कहना कि हम कौन्स्टैन्टाइन के लोग हैं। तब तुम्हें कोई परेशान नहीं करेगा।"

यह कह कर बिल्ली आगे चल दी तो उसे भेड़ों का एक बहुत बड़ा झुंड मिला। उसने उनके मालिकों से भी यही कहा और फिर आगे चल दी। जो भी उसे उस सड़क पर मिला उसने उससे वही कहने के लिये कहा जो उसने घुड़सवारों से कहने के लिये कहा था।

जो लोग ऐलीसैत्ता के आगे आगे चल रहे थे उन्होंने घुड़सवारों से पूछा — "आप लोग किसके नाइट हैं।" उन्होंने कहा कि हम कौन्स्टैन्टाइन के नाइट्स हैं। सुन कर वह बहुत खुश हुई। फिर उन्होंने गड़रियों से पूछा कि वे भेड़ें किसकी हैं तो उन्होंने कहा कि ये सब भेड़ें कौन्स्टैन्टाइन की हैं।

उन्होंने कौन्स्टैन्टाइन से कहा कि वे अब उसके राज्य की सीमा में आ चुके हैं। उसने अपना सिर हॉ में हिलाया और फिर जो कुछ उससे पूछा गया उसका उसने उसी तरह से जवाब दे दिया। इससे सारे लोग उसको बहुत अमीर समझने लगे।

आखिर बिल्ली एक बहुत सुन्दर किले के पास आ गयी उसमें केवल कुछ नौकर ही दिखायी दे रहे थे। उसने उनसे पूछा — "भले लोगों तुम लोग क्या कर रहे हो। क्या तुम्हें अपनी बरबादी की भी कुछ खबर है जो तुम्हारे सिर पर मॅडरा रही है।"

नौकर बोले — "क्या। यह तुम क्या कह रही हो।"

बिल्ली बोली — "एक घंटे के अन्दर अन्दर ही यहॉ बहुत सारे सिपाही आने वाले हैं और तुम्हारे टुकड़े टुकड़े कर देंगे। क्या तुम्हें घोड़ों की हिनहिनाहट की आवाज नहीं सुनायी दे रही।

अगर तुम लोग मरना नहीं चाहते तो जब वे तुमसे पूछें कि तुम लोग किसके नौकर हो तो कहना कि हम कौन्स्टैन्टाइन के नौकर हैं। तब वे तुमको छोड़ देंगे।"

उन्होंने ऐसा ही किया। जब सब लोग वहॉ आये तो उन्होंने पूच कि वह सुन्दर किला किसका है तो उन्होंने जवाब दिया कि कौन्स्टैन्टाइन का। तब वे लोग उस किले में घुसे और उनका बहुत आदर किया गया।

पर वास्तव में उस किले का मालिक एक बहुत ही बहादुर सिपाही वैलैन्टीनो[16] था। कुछ देर पहले ही वह अपना किला छोड़ कर अपनी पत्नी को लाने के लिये गया हुआ था जिससे उसकी अभी अभी शादी हुई थी।

पर उसके साथ ऐसा कुछ बुरा हुआ कि इससे पहले कि वह अपनी पत्नी के घर पहुॅचता उसका एक जान लेवा ऐक्सीडैन्ट हो गया जिसमें वह तुरन्त ही मर गया। सो अब कौन्स्टैन्टाइन ही उस किले का मालिक बन गया।

जल्दी ही बोहेमिया का राजा मोरैन्डो[17] भी मर गया तो वहॉ के लोगों ने कौन्स्टैन्टाइन को ही अपना राजा चुन लिया क्योंकि वह उनके मरे हुए राजा की बेटी का पति था और उस राज्य के ऊपर उसी का अधिकार था।

इस तरह कौन्स्टैन्टाइन एक गरीब से ऊपर बढ़ कर एक राजा बन गया और अपनी पत्नी के साथ बहुत समय तक ज़िन्दा रहा और राज किया। फिर उसके बच्चों ने राज किया।

[16] Valentino
[17] Morando

3 पिप्पो[18]

एक बार की बात है कि मेरे प्यारे शहर नैपिल्स में एक ऐसा बूढ़ा रहता था कि उसके जैसा कोई और गरीब नहीं था। वह बेचारा इतना अभागा था इतना नंगा था इतना हल्का था कि उसकी जेब में एक सिक्का भी नहीं था। वह पिस्सू की तरह से नंगा घूमता था।

अपनी जिन्दगी की टॉगों को इतना लड़खड़ाता देख कर उसने अपने दोनों बेटों ओराटीलो और पिप्पो[19] को अपने पास बुलाया और उनसे कहा — "मुझे प्रकृति का कर्ज चुकाने के लिये बुलावे का दिन आ गया है। मेरा यकीन करो कि मुझे दुखों का और दुश्मनों का यह घर छोड़ने में बहुत खुशी हो रही है।

पर मैं अपने पीछे अपने दो बेटे छोड़ कर जा रहा हूँ जो एक चर्च के बराबर बड़े हैं। जिनमें कोई भी टॉका नहीं लगा है[20]। जो इतने साफ हैं जितना की नाई का तसला।

वे किसी सार्जेन्ट की तरह से तेज़ हैं। वे इतने सूखे हैं जितनी कि एक आलूबुखारे की गुठली होती है। वे इतने हल्के हैं कि उनको एक मक्खी भी अपने पैरों पर ले कर उड़ सकती है।

[18] Pippo. From "Il Pentamerone". Its Tale No 4 told on Second day.
[19] Oratiello and Pippo – names of the old man's two sons.
[20] Means "there is no vice in them"

ताकि तुम लोग अगर सौ मील भी दौड़ो तो भी तुमसे एक सिक्का भी न गिरे।

मेरी बदकिस्मती ने ही मुझे इतना गरीब बनाया है कि मैं एक कुत्ते की ज़िन्दगी जी रहा हूँ। जैसा कि तुम लोग जानते हो मैं सारी उम्र भूखा ही रहा हूँ और सोते समय भी मेरे पास कोई मोमबत्ती नहीं रही।

फिर भी अब मैं क्योंकि मर रहा हूँ तो मैं तुम लोगों के लिये अपने प्यार की कुछ निशानी छोड जाना चाहता हूँ। सो ओराटीलो तुम जो मेरे सबसे बड़े बेटे हो यह छलनी लो जो दीवार पर टँगी हुई है। तुम इससे अपनी रोजी रोटी कमाना। और तुम मेरे छोटे बेटे। तुम यह बिल्ली लो और अपने पिता को याद रखना।"

इतना कह कर उसका गला रुकने लगा वह बोला — "अब रात हो गयी है। भगवान तुम्हारे ऊपर दया करें।"

ओराटीलो ने अपने पिता को उधार ले कर दफ़नाया। चलनी उठायी और इधर उधर घूमता चल दिया ताकि वह अपनी रोजी रोटी कमा सके। जितना ज़्यादा वह घूमता था वह उतना ही ज़्यादा कमाता था।

पर पिप्पो का क्या हुआ?

उसके पास तो केवल एक बिल्ली ही थी। जब वह बिल्ली को लिये हुए जा रहा था तो बोलता जा रहा था — "उँह। देखो मेरे पिता जी मेरे लिये क्या छोड़ गये हैं। केवल एक बिल्ली। मैं अपनी

रोटी तो कमा नहीं सकता और वह सोचते हैं कि मैं दो को खिला दूँगा। किसने इतनी बदनसीब विरासत देखी होगी।"

बिल्ली ने जब पिप्पो का यह रोना धोना सुना तो वह बोली — "तुम बिना किसी बात के परेशान हो रहे हो। तुम्हारी तो किस्मत बहुत अच्छी है। तुम्हारे लिये तुम्हारी खुशकिस्मती तो तुम्हारी जेब में रखी है। अगर तुम मुझे छोड़ दो तो मैं तुमको अमीर बना दूँगी।"

पिप्पो उसकी यह बात सुन कर बहुत खुश हुआ। उसने तीन चार बार अपना हाथ उसके ऊपर फेरा और उसकी बार बार प्रशंसा करने लगा। यह सब देख कर बिल्ली को भी पिप्पो पर दया आ गयी।

हर सुबह जब सूरज अपने सुनहरे कॉटे पर रोशनी का चारा ले कर रात की मछली पकड़ने के लिये आता था तो बिल्ली समुद्र के किनारे चली जाती।

वहॉ पहुँच कर वह बहुत बढ़िया मछली पकड़ती और राजा के पास ले जाती और कहती — "मेरे लौर्ड पिप्पो ने जो योर मैजेस्टी के बहुत ही वफादार नौकर हैं यह मछली बहुत ही आदर के साथ आपको भेजी है और कहलवाया है कि "बड़े राजा को एक छोटी सी भेंट।"

यह सुन कर राजा ऐसे मुस्कुराया जैसे कि वह हर भेंट लाने के लिये मुस्कुराता और उससे कहा — "इस लौर्ड जिसको मैं नहीं जानता कहना कि मैं उसका दिल से धन्यवाद देता हूँ।"

बिल्ली फिर से दलदल या खेतों की तरफ भाग जाती और जब बहेलिये चिड़ियें मार कर लाते तो वह उनमें से कुछ को उठा लाती और उसी सन्देश के साथ राजा को ला कर दे देती। राजा भी उसको अपना वही सन्देश दे कर वापस भेज देता।

बिल्ली यह चाल कई दिनों तक खेलती रही कि एक दिन राजा ने उससे कहा — "मैं लौर्ड पिप्पो का दिल से धन्यवाद करता हूॅ पर अब मैं उनको जानना चाहता हूॅ ताकि मैं उनकी दया का कुछ हिस्सा उनको लौटा सकूॅ।"

बिल्ली बोली — "लौर्ड पिप्पो की इच्छा तो यही है कि वह लौर्ड मैजेस्टी के ताज के लिये अपनी जान भी दे दें। कल सुबह जब सूरज निकल कर अपनी आग खेतों पर बिखेर देगा वह आपकी सेवा में आयेंगे।"

सो अगले दिन जब सुबह हुई बिल्ली राजा के पास गयी और बोली — "सर योर मैजेस्टी। मेरे मालिक लौर्ड पिप्पो आपके पास न आने के लिये आपसे माफी चाहते हैं क्योंकि कल रात ही उनके नौकरों ने उनको लूट लिया। यहॉ तक कि उनको पास तो अब पहनने के लिये एक कमीज भी नहीं बची है।"

जब राजा ने यह सुना तो उसने अपने नौकरों से अपने कपड़े निकलवाये और उनमें से कई जोड़े और बिस्तर की चादरें आदि लौर्ड पिप्पो के लिये भेजे। दो घंटे के अन्दर अन्दर ही लौर्ड पिप्पो राजा के सामने हाजिर थे।

उनके राजा ने हजारों धन्यवाद दिये अपने पास बिठाया और उनको बहुत ही बढ़िया दावत खिलायी।

जब वे लोग खाना खा रहे थे तो पिप्पो बार बार बिल्ली की तरफ देखता और उससे कहता — "मेरी प्यारी बिल्ली। भगवान से प्रार्थना करो कि मेरे वे पुराने चिथड़े कपड़े कहीं खो न जायें।"

तो बिल्ली बोली — "चुप रहो यहॉ कम से कम ऐसी गरीबी वाली बातें न करो।"

राजा उनकी बातों को जानना चाह रहा कि वे किस बारे में बात कर रहे थे तो बिल्ली बोली — "लौर्ड को अभी अभी एक छोटे से नीबू से प्यार हो गया है।"

यह सुन कर राजा ने तुरन्त ही अपने आदमियों को बागीचे भेज कर नीबुओं की एक टोकरी मॅगवा दी। पर पिप्पो अपनी फिर उसी बात पर आ गया – अपने पुराने कोट और कमीज की बातों पर। बिल्ली ने इस बारे में उसको फिर से सावधान किया।

राजा ने फिर पूछा कि क्या मामला है तो बिल्ली को उसकी इस बदतमीजी के लिये फिर से कोई बहाना बनाना पड़ा।

जब उन सबने खाना खा लिया और थोड़ी बहुत बातें भी कर लीं तो पिप्पो ने जाने की इजाज़त मॉगी। पिप्पो तो वहॉ से चला गया पर बिल्ली वहीं रह गयी राजा के पास। वह पिप्पो की योग्यता अक्लमन्दी और फैसला लेने की होशियारी के बारे में राजा से काफी देर तक बात करती रही।

इसके अलावा उसने राजा को यह भी बताया कि लौर्ड पिप्पो के पास रोम और लोम्बार्डी में कितनी सारी जमीन है। इससे वह तो किसी अच्छे खासे राजा की बेटी से शादी कर सकते हैं।

इस पर राजा ने उससे पूछा कि उसके पास और क्या क्या है। बिल्ली ने बताया कि अभी तक उनकी चल सम्पत्ति तो कोई गिन ही नहीं पाया है। इस आदमी के घर में क्या क्या है यह तो इसको खुद भी नहीं पता।

अगर राजा को यह बात जाननी हो तो राजा बस एक काम कर सकता था वह यह कि वह अपने कुछ दूत इस बिल्ली के साथ भेज सकता था जो यह बात साबित कर देती कि दुनियॉ भर में उसकी सम्पत्ति के बराबर तो किसी के पास भी सम्पत्ति नहीं है।

तब राजा ने अपने कुछ भरोसे के लोग बुलाये और उनसे कहा कि वे बिल्ली की बात की सच्चाई का पता लगा कर लायें। सो वे बिल्ली के पीछे पीछे चल दिये। समय समय पर बिल्ली उनके लिये रास्ते में कुछ खाने का इन्तजाम करने के बहाने उनसे कभी कभी आगे निकल जाती पर फिर वापस आ जाती।

जैसे ही वे सब राज्य की सीमा से बाहर निकले उनको पहले एक भेड़ों का झुंड मिला फिर गायों का झुंड मिला फिर घोड़ों का एक झुंड मिला और सबसे बाद में सूअरों का एक झुंड मिला।

वह उनके रखवालों के पास जाती और कहती — "इनकी ठीक से देखभाल करना। पीछे डाकुओं का एक झुंड आ रहा है जो देश

की हर चीज़ बाहर ले जाना चाहते हैं। तो उनके गुस्से से अगर तुम बचना चाहते हो तो उनसे कह देना कि ये सब लौर्ड पिप्पो का है तो कोई तुम्हारा कुछ नहीं बिगाड़ेगा।

यह बात उसने हर खेत वाले से भी कही सो राजा के लोग जहॉ कहीं भी गये लोग उनसे एक ही बात कह रहे थे कि "वह सब लौर्ड पिप्पो का है।"

आखिर जब वे पूछते पूछते थक गये तो राजा के पास लौट गये और जा कर उसको बताया कि लौर्ड पिप्पो के पास तो खजाना ही खजाना है।

यह जानने के बाद राजा ने बिल्ली को एक बहुत बढ़िया शराब पिलाने का वायदा किया अगर वह लौर्ड पिप्पो के तरफ से रिश्ता बना दे। बिल्ली अब दोनों के बीच शटल की तरह घूमने लगी और अन्त में उसने दोनों की शादी करवा दी।

लौर्ड पिप्पो आया और राजकुमारी से शादी कर ली राजा ने भी उसको अपने राज्य का बहुत सारा हिस्सा दिया। यह सब एक महीने तक चला।

एक महीने बाद पिप्पो ने अपनी दुलहिन को अपने घर ले जाने की इजाज़त मॉगी। राजा अपनी बेटी की विदा के लिये उसको अपने राज्य की सीमा तक छोड़ने गया। वहॉ से लौर्ड पिप्पो

लोम्बार्डी की तरफ चला गया जहॉ उसने बिल्ली की सलाह के अनुसार बहुत बड़ी जायदाद खरीदी और "बैरन"[21] बन गया।

पिप्पो ने देखा कि वह तो अब बहुत बड़ा आदमी बन गया है बिल्ली को बहुत बहुत धन्यवाद दिया। उसने यह भी कहा कि वह तो अपनी ज़िन्दगी सब कुछ उसी की दी हुई समझता है बल्कि वह तो अपने पिता से ज़्यादा इस बिल्ली का आदर करता है। इसलिये उसने कहा कि उसकी ज़िन्दगी और जायदाद को वह जैसे उसकी खुशी हो वैसे रखे।

इसके अलावा उसने बिल्ली से यह भी कहा कि उसके मरने के बाद उसके शरीर को सुरक्षित करवा कर एक सोने के ताबूत में रखवा कर अपने कमरे में रख लेगा ताकि उसकी याद हमेशा उसके सामने रहे।

बिल्ली ने उससे जब अपनी इतनी तारीफ सुनी तो तीन दिन गुजरने से पहले ही उसने मरने का बहाना किया। वह बागीचे में जा कर पैर फैला कर लेट गयी।

जब पिप्पो की पत्नी ने उसे ऐसे लेटे हुए देखा तो वह चिल्लाती हुई अपने पति के पास गयी "देखो देखो। कितनी बदकिस्मती की बात है कि हमारी बिल्ली मर गयी है।"

[21] Baron – Baron is a rank of nobility or title of honour in England, often hereditary. The female equivalent is Baroness.

पिप्पो बोला — "उसके साथ शैतान को भी मरने दो। वह बजाय हमारे उसके साथ मरे तो ज़्यादा अच्छा है।"

पत्नी बोली — "पर अब हम इसका क्या करें।"

पिप्पो बोला — "उसको टॉग से पकड़ कर उठाओ और बाहर फेंक दो।"

बिल्ली ने जब अपना यह बढ़िया इनाम सुना तो इस इनाम की तो उसको कोई आशा ही नहीं थी। वह बोली — "क्या मेरे इतना कुछ किये का तुम्हारे पास यही इनाम है। क्या तुम्हें गरीबी से यहॉ तक पहुँचाने का मेरा यही इनाम है। क्या तुम्हें बढ़िया कपड़े पहनाने का मेरा यही इनाम है।

जब तुम गरीब थे चिथड़े पहनते थे भूखे रहते थे टूट गये थे दुखी थे और तब मैंने तुम्हें यह इनाम दिया तो तुमने मुझे यह इनाम दिया। जाओ मैं तुम्हें शाप देती हूँ कि मैंने जो कुछ भी तुम्हें दिया है वह सब खत्म हो जाये। तुम तो मेरे लिये सोने का ताबूत बनवाना चाहते थे न। तुम तो तो मुझे एक बहुत बढ़िया दफ़न देने वाले थे न।

अब तुम जाओ। मजदूर की तरह से काम करो जमीन जोतो और इस हालत तक आने के लिये बहुत समय तक पसीना बहाओ।

वह आदमी सुखी नहीं रहता जो किसी बदले की आशा में अच्छा काम करता है। किसी दार्शनिक ने ठीक ही कहा है कि जो गधे को गिराता है वह खुद ही गधा है। सबको दूसरों के लिये बहुत

करना चाहिये और किसी बदले की आशा नहीं रखनी चाहिये। मीठे शब्द और बुरे काम अक्लमन्द और बेवकूफ दोनों को एक ही तरह से धोखा देते हैं।"

ऐसा कह कर उसने अपने शरीर पर से अपना बिल्ली वाला कोट उतारा और अपने रास्ते चली गयी।

पिप्पो ने बहुत ज़्यादा नम्रता से उसको तसल्ली देने की कोशिश की पर उससे कोई फायदा नहीं हुआ। वह नहीं लौटी बल्कि वह तो बिना पीछे मुड़ कर देखे वहॉ से भागती चली गयी।

भागते भागते वह कहती जा रही थी —

हे भगवान मुझे अमीर से गरीब बन जाने वालों से दूर रखना
और गरीब से अमीर बनने वालों से भी दूर रखना

4 डोमिंगो का बिल्ला[22]

एक बिल्ले के एक आदमी को अमीर बनाने की एक और कहानी। यह कहानी हमने तुम्हारे लिये दक्षिणी अमेरिका महाद्वीप के ब्राज़ील देश की लोक कथाओं से ली है।

इसमें भी एक बिल्ला अपने मालिक को एक राजा की बेटी से शादी करा कर उसको अमीर बनाता है। आओ देखते हैं कैसे।

एक बार की बात है कि एक आदमी था जो बहुत बहुत बहुत ही गरीब था। वह इतना गरीब था कि उसको अपना पेट भरने के लिये अपने घर की कोई न कोई चीज़ बेचनी पड़ती थी।

ऐसा करते करते एक दिन ऐसा भी आया जब उसके घर की सारी चीज़ें बिक गयीं बस एक बिल्ला रह गया उसके पास।

उसको अपने बिल्ले से पहुत प्यार था। वह उससे बोला — "ओ बिल्ले, चाहे कुछ भी हो जाये पर मैं तुझको अपने से कभी अलग नहीं करूँगा। तुझको बेचने से तो मैं भूखा रहना ज़्यादा पसन्द करूँगा।"

बिल्ला बोला — "ओ मेरे अच्छे मालिक। भगवान आपको शान्ति दे। जब तक आपके पास मैं हूँ आप भूखे नहीं मरेंगे। मैं

[22] Domingo's Cat – a folktale from Brazil, South America. Taken from the Web Site : http://www.worldoftales.com/South_American_folktales/South_American_Folktale_34.html Taken from the Book : "Tales of Giants From Brazil", by Elsie Spicer Eells. NY, Dodd, Mead and Company, Inc. 1918. 12 Tales. This book is given at the above Web Site.

आपको और अपने आपको दोनों को अमीर बनाने के लिये दुनियॉ में बाहर जा रहा हूँ।"

कह कर वह बिल्ला जंगल की तरफ भाग गया। वहॉ जा कर वह एक जगह खोदता रहा खोदता रहा। जितनी बार भी उसने वहॉ जमीन खोदी उसमें से चॉदी के सिक्के निकले। बिल्ले ने उनमें से बहुत सारे सिक्के उठाये और उनको अपने मालिक के पास ले गया ताकि वह उनसे खाना खरीद सके। बाकी बचे हुए सिक्के वह राजा के पास ले गया और उसको दे आया।

अगले दिन बिल्ला फिर जंगल गया और वहॉ उसने सोने के सिक्के खोदे और उनको राजा को दे आया। उसके अगले दिन वह फिर जंगल गया वहॉ उसने अबकी बार हीरे खोदे और उनको राजा के पास ले गया।

तो राजा ने पूछा — "ये कीमती भेंटें तुम्हें कौन दे रहा है और इतनी बढ़िया भेंटें मुझे कौन भेज रहा है।"

बिल्ला बोला — "यह मेरे मालिक डोमिंगो हैं जो इतनी कीमती भेंटें आपको भेज रहे हैं।"

अब राजा के एक बहुत ही सुन्दर बेटी थी। डोमिंगो की भेजी हुई भेंटें देख कर राजा ने सोचा कि यह डोमिंगो तो लगता है कि राज्य का कोई सबसे अमीर आदमी है। सो उसने निश्चय किया कि वव्ह अपनी बेटी की शादी उससे तुरन्त ही कर देगा। उसने बिल्ले की सहायता से शादी का इन्तजाम कर लिया।

जब बिल्ले ने डोमिंगो का बताया कि वह उसकी शादी राजा की बेटी से तय कर आया है तो डोमिंगो बोला पर मेरे पास तो शादी में पहनने के लिये कपड़े तक नहीं हैं मैं राजा की बेटी से शादी कैसे कर सकता हूँ।

बिल्ला बोला — "तुम बिल्कुल चिन्ता न करो। यह सब तुम मेरे ऊपर छोड़ दो मैं सब सॅभाल लूँगा।"

बिल्ला राजा के पास गया और बोला — "राजा साहब। हमारे साथ एक बहुत ही खराब घटना घट गयी है। जिस दर्जी के पास हमारे मालिक डोमिंगो के शादी के कपड़े सिल रहे थे उसकी दूकान में आग लग गयी है और वह दर्जी और उसके सब नौकर उसमें जल कर मर गये हैं।

यहॉ तक कि मेरे मालिक के सब कपड़े भी उस आग में जल गये हैं। योर मैजेस्टी के पास कुछ कपड़े तो होंगे जो वह उनको शादी के लिये उधार दे सकें।"

राजा ने यह सुन कर बहुत दुख प्रगट किया और अपने पास से कीमती से कीमती कपड़े निकाल कर उसके पहनने के लिये भेज दिये। इस तरह डोमिंगो राजा के कीमती कपड़ों में तैयार हो कर शादी के लिये गया।

शादी के बाद डोमिंगो बिल्ले से बोला — "पर मेरे पास तो राजकुमारी को ले जा कर ठहराने के लिये कोई ढंग का घर भी नहीं है। मैं उसको ले कर जाऊँगा कहॉ।"

बिल्ला बोला — "तुम चिन्ता न करो मैं देखता हूॅ।"

बिल्ला फिर से जंगल चला गया। वहॉ जंगल में एक बहुत बड़ा किला था जिसमें एक बड़े साइज़ का आदमी[23] रहता था।

बिल्ला सीधा उस बड़े साइज़ के आदमी के पास गया और बोला — "ओ बड़े साइज़ के आदमी, मैं तुम्हारा किला अपने मालिक डोमिंगो के लिये उधार लेना चाहता हूॅ। क्या तुम मेहरबानी कर के मुझे इसे कुछ देर के लिये उधार दोगे?"

यह सुन कर वह बड़े साइज़ का आदमी तो बहुत गुस्सा हो गया और अपनी सबसे भयानक आवाज में चिल्ला कर बोला — "नहीं बिल्कुल नहीं। मैं तुमको अपना यह किला तुम्हारे मालिक डोमिंगो या किसी और के लिये किसी भी हालत में बिल्कुल उधार नहीं दूॅगा।"

बिल्ला बोला — "ठीक है मत दो।" कह कर उसने बड़े साइज़ के आदमी को पलक झपकते ही एक मॉस के टुकड़े में बदल दिया और खा गया। अब वह सारा किला उसका था और खाली था।

बड़े साइज़ के आदमी का महल तो बहुत ही बढ़िया था। उसमें एक कमरा चॉदी की चीज़ों से सजा था। एक दूसरा कमरा सोने की चीज़ों से सजा था। और एक तीसरा कमरा हीरों की चीज़ों से सजा था।

उसके बागीचे के दरवाजे के पास एक बहुत सुन्दर नदी बहती थी।

[23] Translated for the word "Giant"

यह इन्तजाम कर के वह तुरन्त ही अपने मालिक डोमिंगो के पास भाग गया और बोला — "मालिक आपका महल तैयार है। चलें।"

वह डोमिंगो और उसकी दुलहिन को उसी नदी में एक शाही नाव में बिठा कर उस महल में ले कर आया। जब डोमिंगो अपनी दुलहिन के साथ उस महल तक आया तो उसने देखा कि बिल्ला तो उस महल की एक खिड़की में बैठा हुआ गा रहा था।

वे खुशी खुशी अपने महल में घुसे और वहॉ रहने लगे।

इसके बाद उन्होंने उस बिल्ले को फिर कभी नहीं देखा। वह जंगल में चला गया और वहीं गायब हो गया। शायद वह वहॉ से किसी और गरीब आदमी को अमीर बनाने चला गया होगा।

यह भी हो सकता है कि वह वहॉ से वह कभी तुम्हारे सामने आ जाये और तुमको अमीर बना दे। ख्याल रखना। कौन जाने।

5 लौर्ड पीटर[24]

जूते पहने हुए बिल्ला जैसी कहानियों की यह कहानी यूरोप के नोर्वे देश की लोक कथाओं से ली गयी है। इसमें भी एक बिल्ली ही एक आदमी की सहायता करती है।

एक बार की बात है कि एक बहुत ही गरीब पति पत्नी रहते थे। उनके पास कुछ नहीं था सिवाय उनके तीन बेटों के। उनके दोनों बड़े बेटों के नाम क्या थे यह तो मुझे नहीं मालूम पर उनके तीसरे बेटे का नाम था पीटर।

कुछ समय बाद माता पिता मर गये तो तीनों बेटों में उनके छोड़े हुए सामान का बॅटवारा हो गया। उन गरीब माता पिता का सामान भी क्या था एक दलिया बनाने का बर्तन, एक तवा और एक बिल्ली।

सबसे बड़े बेटे को उन तीनों में से पहले चुनना था सो उसने दलिया बनाने वाला बर्तन ले लिया क्योंकि "मैं जब कभी भी किसी के दलिया बनाने के लिये दूॅगा तो मुझे उसमें से कुछ न कुछ खुरचन तो मुझे मिल ही जायेगी।

[24] Lord Peter – a folktale from Norway., Europe
Taken from the Web Site: http://oaks.nvg.org/ntales43.html

दूसरे वाले बेटे ने तवा ले लिया। उसने सोचा कि "जब भी मैं इसको किसी को उधार दूँगा तो उसमें से थोड़ा बहुत आटा मुझे भी मिल जायेगा।"

जब दो चीज़ें दोनों बड़े भाइयों ने ले ली थीं तो अब सबसे छोटे भाई के पास तो कुछ लेने के लिये बचा ही नहीं था सिवाय बिल्ली के।

उसने सोचा कि "चलो कोई बात नहीं अगर मैं किसी को अपनी बिल्ली किराये पर दूँगा तो मुझे उससे क्या मिलेगा। जैसे अगर बिल्ली को किसी ने कुछ दिया भी तो वह उसे दूध की कुछ बूँद देगा तो फिर मैं उससे क्या ले सकता हूँ। दूध तो बिल्ली खुद ही पी जायेगी।

फिर भी काम से कम वह मेरे साथ तो चलेगी। मैं उसको अपने साथ ही रखूँगा। मैं उसको भूखा घूमने के ल्यि ऐसे ही नहीं छोड़ दूँगा।"

सो तीनों भाई अपना अपना हिस्सा ले कर दुनियॉ में अपने अपने रास्ते अपनी अपनी किस्मत आजमाने निकल पड़े।

जब सबसे छोटा भाई पीटर कुछ दूर चल लिया तो बिल्ली बोली — "अब तुम्हारे अच्छे दिन आ गये हैं क्योंकि तुमने मुझे उस पुराने घर में भूखा मरने के लिये नहीं छोड़ा है।

अब मैं कोई मोटा सा शिकार पकड़ने के लिये जंगल जाती हूँ और मेरे आने के बाद तुम राजा के महल जाना जो यहीं पास में है।

तुम राजा के पास पहुँच कर कहना कि तुम राजा के लिये एक भेंट ले कर आये हो। और वह अगर तुमसे यह पूछे कि यह भेंट किसने भेजी है तो तुम उससे कहना "लौर्ड पीटर के अलावा ऐसा और कौन हो सकता है।"

कह कर बिल्ली जंगल भाग गयी। पीटर को बहुत देर तक इन्तजार नहीं करना पड़ा कि बिल्ली एक रेन्डियर को अपने साथ ले कर वापस आ गयी।

वह रेन्डियर के सिर के ऊपर उसके दोनों सींगों के बीच में बैठ गयी और उससे बोली — "अगर तुम सीधे राजा के महल नहीं गये तो मैं अपने पंजों से तुम्हारी दोनों ऑखें निकाल लूँगी।"

अब तो रेन्डियर को राजा के महल जाना ही पड़ा चाहे वह जाना चाहता था या नहीं।

जब पीटर महल पहुँचा तो वह सीधे महल के रसोईघर में पहुँचा और बोला — "मैं राजा के लिये एक भेंट ले कर आया हूँ। अगर वह इसे मना न करें तो।"

यह सुन कर राजा रसोईघर से यह देखने के लिये बाहर गया कि देखूँ यह आदमी क्या चीज़ ले कर आया है तो उसने देखा कि वहॉ तो एक बहुत सुन्दर मोटा सा रेन्डियर खड़ा है तो उसका तो जी बहुत खुश हो गया।

पर उसने पीटर से पूछा कि दुनियॉ में ऐसा कौन है जिसने यह भेंट उसको भेजी है तो पीटर बोला — "ऐसी भेंट आपको और कौन भेज सकता है सिवाय लौर्ड पीटर के।"

राजा बोला — "लौर्ड पीटर, लौर्ड पीटर। पर यह लौर्ड पीटर रहता कहॉ है।"

क्योंकि उसको यह सुन कर बहुत खराब लग रहा था कि वह इतने बड़े आदमी को नहीं जानता था पर वह लड़का जो कह रहा था वह भी तो ठीक नहीं बता रहा था।

सच बोलने की तो वह हिम्मत ही नहीं कर सकता था क्योंकि उसके मालिक ने उसके यह बताने से मना किया था और यही बात वह बताना नहीं चाहता था। यही बात बताने की हिम्मत नहीं कर रहा था।

सो राजा ने उसके बदले में उसे अच्छा खासा पैसा दे दिया और उसने उससे कहा कि जब वह घर पहुॅचे तो वह लौर्ड से राजा के बार में कुछ अच्छा कहे।

अगले दिन बिल्ली फिर से जंगल गयी और फिर से एक मोटा शिकार उठा लायी। इस बार वह कोई लाल हिरन उठा लायी थी।

वह इसके भी सिर के ऊपर बैठी और उसे धमकी दी कि वह अगर सीधा राजा के महल में नहीं गया तो वह अपने पंजों से उसकी दोनों ऑखें निकाल लेगी। सो उसको भी राजा के महल जाना ही पड़ा।

बाद में पीटर भी राजा के महल में पहुॅचा और सीधा रसोईघर में पहुॅच कर बोला — "मैं राजा साहब के लिये एक बहुत ही छोटी सी भेंट लाया हूॅ अगर वह उसको स्वीकार कर लें तो।"

राजा तो उस लाल हिरन को देख कर पहले से भी ज़्यादा खुश हो गया। उसने उससे फिर पूछा कि वह भेंट उसको किसने भेजी है। तो पीटर ने फिर वही जवाब दिया — "ऐसी भेंट आपको और कौन भेज सकता है सिवाय लौर्ड पीटर के।"

पर जब राजा ने यह जानना चाहा कि यह लौर्ड पीटर कहॉ रहता है तो पीटर से पिछले दिन की तरह का जवाब पा कर वह यह नहीं जान सका कि लौर्ड पीटर कहॉ रहता है। सो उस दिन भी उसने पीटर को लाल हिरन के बदले में काफी सारा पैसा दे कर विदा किया।

तीसरे दिन बिल्ली एक ऐल्क ले कर आयी। जब पीटर उसको ले कर महल पहुॅचा तो वह फिर से रसोईघर में पहुॅचा। राजा ने जब इतना बड़ा ऐल्क[25] देखा तो वह तो बहुत खुशी के मारे नाचने लगा। उस दिन भी उसने पीटर को बहुत सारे डौलर दिये। वे कम से कम **100** डौलर तो थे ही।

अब वह यह चाहता था कि उसको जल्दी से जल्दी यह पता चल जाये कि यह लौर्ड पीटर आखिर रहता कहॉ है। उसने इधर

[25] Elk is a big bull type animal. See its picture above.

पूछा उधर पूछा पर उसे पता नहीं चला। पीटर की तो उसके रहने की जगह बताने की हिम्मत ही नहीं हो रही थी क्योंकि उसको मालिक ने उसको यह बताने से सख्ती से मना कर रखा था।

तब राजा ने कुछ दूसरा तरीका अपनाया। उसने पीटर से कहा कि वह अपने लौर्ड पीटर से कहे कि राजा उससे मिलना चाहता है। हॉ यह सन्देश तो वह लड़का ले जा सकता था।

पर जब पीटर महल के कम्पाउंड से बाहर निकला और बिल्ली से मिला तो उसने बिल्ली से कहा — "इस बार तुमने मुझे बहुत मुश्किल में डाल दिया है। क्योंकि अब तो राजा मुझसे मिलना चाहता है और तुम्हें तो मालूम है कि मेरे पास तो यही फटे कपड़े हैं। अब मैं क्या करूँ।"

बिल्ली बोली — "ओह तुम डरो नहीं। तीन दिन में तुम्हारे पास एक बहुत सुन्दर घोड़ा गाड़ी होगी और कीमती कपड़े होंगे। इतने बढ़िया कि उनसे सोना टपकता हुआ नजर आयेगा। तब तुम राजा से मिलने जा सकते हो।

हॉ मगर एक बात का ध्यान रखना। तुम जो कुछ भी तुम राजा के महल में देखो तुम्हें यही कहना है कि तुम्हारे पास वह चीज़ उससे भी बढ़िया है। इस बात को भूलना नहीं।"

"नहीं नहीं पीटर यह कभी नहीं भूलेगा तुम डरो नहीं।"

सो जब तीन दिन बीत गये तो बिल्ली उसके लिये एक बढ़िया घोड़ों वाली गाड़ी और कपड़े ले कर आयी। साथ में वह सब भी जो

कुछ पीटर को चाहिये था। सब कुछ बहुत सुन्दर और बढ़िया था। बिल्ली गाड़ी के साथ साथ भागी जा रही थी।

जब वह महल पहुँचा तो राजा ने उसका बड़े प्यार से स्वागत किया। राजा ने जो कुछ भी उसको दिया और जो कुछ भी उसको दिखाया तो पीटर ने यही कहा — "यह सब बहुत अच्छा है। पर इससे भी कहीं ज़्यादा अच्छी चीज़ें तो मेरे घर में ही हैं।"

राजा को उसकी इस बात पर विश्वास नहीं हुआ पर पीटर अपनी बात पर जमा रहा। आखीर में राजा यह सुनते सुनते इतना गुस्सा हो गया कि वह उससे आगे नहीं सह सका।

वह बोला — "अच्छा। अगर ऐसा है तो मैं अभी तुम्हारे साथ तुम्हारे घर चलता हूँ और चल कर देखता हूँ कि यह बात वाकई सच है कि नहीं जो तुम मुझसे इतनी देर से कहे जा रहे हो। पर अगर तुम झूठ बोल रहे हो तो भगवान तुम्हारे सहायता करे। बस अभी तो मैं यही कह सकता हूँ।"

पीटर ने बिल्ली से कहा — "अब तो तुमने मुझे और भी ज़्यादा मुश्किल में डाल दिया है। क्योंकि राजा तो मेरे घर अभी चलने को तैयार है। और मेरा तो घर भी ढूँढना आसान नहीं है।"

बिल्ली बोली — "तुम बिल्कुल चिन्ता मत करो। मैं आगे आगे चलता हूँ और बस तुम मेरे पीछे पीछे चलते चले आओ।"

और इस तरह से वे चल दिये – सबसे आगे बिल्ली, उसके पीछे पीटर, पीटर के पीछे राजा और राजा के पीछे पीछे उसके दरबारी।

जब वे कुछ दूर चल लिये तो उनको एक बहुत ही बढ़िया भेड़ों का झुंड मिला। उनकी ऊन इतनी लम्बी थी कि वह जमीन को छू रही थी।

बिल्ली ने चरवाहे से कहा — "कोई तुमसे अगर यह पूछे कि ये भेड़ें किसकी हैं तो तुम यह कहना कि ये भेड़ें लौर्ड पीटर की हैं तो मैं तुम्हें यह चॉदी की चम्मच दूँगी।" यह चम्मच उसने राजा के महल से उठा ली थी।

चरवाहा यह काम करने के लिये तुरन्त ही तैयार हो गया। जब राजा वहॉ तक आया तो उसे वे बढ़िया भेड़ें देख कर बहुत अच्छा लगा। उसने चरवाहे से पूछा — "मैंने इतनी बढ़िया भेड़ों का इतना बड़ा झुंड कहीं नहीं देखा। ये भेड़ें किसकी हैं।"

चरवाहा बोला — "ये भेड़ें और किसकी हो सकती हैं सिवाय लौर्ड पीटर के।" राजा यह सुन कर बहुत खुश हुआ।

कुछ दूर चल कर वे एक बहुत ही बढ़िया नस्ल के जानवरों के एक बड़े से झुंड के पास आये जो इतना सुन्दर चमक रहा था जैसे सूरज चमक रहा हो।

बिल्ली ने उस चरवाहे से भी यही कहा कि उससे पूछने पर कि ये जानवर किसके है अगर वह यह जवाब दे कि ये तो लौर्ड पीटर के हैं तो वह उसे चॉदी का एक चमचा देगी। यह चमचा उसने राजा के रसोईघर में चुराया था। चरवाहा बोला — "खुशी से।"

सो जब राजा वहॉ तक आया तो इतना सुन्दर और बड़ा जानवरों का झुॅड देख कर दंग रह गया। उसने चरवाहे से पूछा कि ये जानवर किसके हैं तो चरवाहे ने जवाब दिया — "और किसके हो सकते हैं जनाब सिवाय लौर्ड पीटर के।" राजा फिर यह सुन कर दंग रह गया।

कुछ दूर आगे चले तो बिल्ली को बहुत सारे बहुत ही बढ़िया नस्ल के घोड़े मिले जो हर रंग में छह छह घोड़े थे – काले हरे कत्थई और चेस्टनट रंग में।

तो उसने उससे भी यही कहा कि अगर तुमसे कोई यह पूछे कि ये घोड़े किसके हैं तो तुम यह कह देना कि "ये घोड़े और किसके हो सकते हैं सिवाय लौर्ड पीटर के।" तो मैं तुम्हें चॉदी का यह डंडा दूॅगी।" यह डंडा भी उसने महल से चुराया था।

जब राजा आया तो उसने पूछा ये इतने सुन्दर घोड़े किसके हैं। सईस ने जवाब दिया कि "ये घोड़े सिवाय लौर्ड पीटर के और किसके हो सकते है।"

राजा यह सब देख कर बहुत प्रभावित हुआ।

काफी दूर चलने के बाद अब वे सब एक किले के पास आ गये थे जिसका पहला फाटक टीन का था दूसरा चॉदी का था और तीसरा सोने का था। महल सारा चॉदी का बना हुआ था जिस पर सूरज की किरनें पड़ती थीं तो नजर नहीं ठहरती थी। जब वे वहॉ

पहुॅचे तो सूरज की किरनें उसके ऊपर पड़ रही थीं सो राजा उसको देख पाने की भी हालत में नहीं थे।

सब उस महल के अन्दर घुसे तो बिल्ली ने पीटर से राजा से यह कहने के लिये कहा कि यह उसका घर था। यह महल जितना बाहर से सुन्दर था उससे कहीं ज़्यादा अन्दर से सुन्दर था। उसकी हर चीज़ सोने की थी – कुर्सियॉ मेजें बैन्चें और सब कुछ।

जब राजा ने सब देख लिया इधर उधर ऊपर नीचे तो उसको खुद को बहुत शर्म महसूस हुई और नीचा लगने लगा। आखिर में वह बोला — "हॉ लौर्ड पीटर को पास तो मुझसे भी बहुत ज़्यादा अच्छी चीज़ें हैं। इसमें कोई दो राय नहीं हैं।"

अब वह घर जाना चाहता था पर लौर्ड पीटर ने उसको शाम के खाने के लिये रुक जाने की जिद की तो राजा को वहॉ रुकना पड़ा पर यकीनन वह सारा समय दुखी ही होता रहा।

वे लोग शाम का खाना खाने बैठे तो वह राक्षस[26] वहॉ आया जिसका वह महल था। उसने दरवाजे पर ज़ोर की दस्तक देते हुए कहा — "यह कौन है जो मेरी खाने की मेज पर बैठ कर मेरा मॉस खा रहा है और मेरी शराब पी रहा है।

[26] Translated for the word "Troll" – troll is a giant size demon

जैसे ही बिल्ली ने यह सुना तो वह फाटक तक भागी गयी और बोली — "ज़रा रुको। मैं बताती हूँ कि किस तरह से किसान ने अपने जाड़ों में काम करने का तय किया है।"

बस उसके बाद तो उसने राक्षस को एक बहुत लम्बी कहानी सुनायी। वह बोली — "तुमको पता होना चाहिये कि पहले उसको खेत में हल चलाना पड़ता है। फिर वह उसमें खाद डालता है। उसके बाद वह उसमें फिर हल चलाता है। फिर वह... ।

इस तरह उसने कहानी सुनाने में ही सारी रात निकाल दी। सुबह बिल्ली ने कहा — "देखो ज़रा अपने पीछे देखो कि कितनी सुन्दर स्त्री जा रही है।"

यह सुन कर राक्षस ने अपने पीछे देखा तो जैसे ही उसको सूरज दिखायी दिया तो वह तो फट गया।

बिल्ली बोली — "लौर्ड पीटर। बस अब यह सब मेरा है। और जो मेरा है वह तुम्हारा है सो अब तुम इसे रख सकते हो। अब जो कुछ भी मैंने तुम्हारे लिये किया है उसको बदले में मैं यह चाहती हूँ कि तुम मेरा गला काट दो।"

लौर्ड पीटर चिल्लाया — "ओह नहीं नहीं। यह काम तो मैं कभी नहीं कर सकता।"

बिल्ली बोली — "अगर तुम ऐसा नहीं करोगे तो मैं अपने पंजों से तुम्हारी दोनों ऑखें निकाल लूँगी।"

मजबूरन पीटर को यह करना पड़ा हालॉकि वह इस काम को बिल्कुल करना नहीं चाह रहा था। जैसे ही उसने बिल्ली का सिर काटा तो बिल्ली तो वहॉ से गायब हो गयी और उसकी जगह एक बहुत ही सुन्दर राजकुमारी खड़ी थी। लौर्ड पीटर तो उसको देखते ही उसके प्रेम में पड़ गया।

राजकुमारी ने कहा — "पहले ये सब चीज़ें मेरी थीं पर बाद में इस राक्षस ने मुझ पर जादू डाल कर मुझे एक बिल्ली बना दिया और मुझे तुम्हारे माता पिता के साथ रख दिया। अब तुम जो चाहो सो करो चाहे तुम मुझे अपनी रानी बना लो क्योंकि अब तुम इस पूरे राज्य पर राज करने वाले हो।"

अब तो कोई शक ही नहीं था कि पीटर ने उसको अपनी पत्नी बना लिया था। उनकी शादी का जश्न पूरे आठ दिन चला। हर रोज दावत का इन्तजाम था।

इसके बाद मैं फिर पीटर और उसकी सुन्दर रानी के पास नहीं रहा सो मुझे नहीं पता कि उसके बाद उनके साथ क्या हुआ।

Drawing by Gustav Dore. Taken from the Book with gratitude.

6 हामदानी[27]

बूट पहने हुए बिल्ला जैसी कहानियों की यह कहानी हमने तुम्हारे लिये पूर्वीय अफ्रीका के तनज़ानिया देश के ज़न्ज़ीबार द्वीप की लोक कथाओं से ली है। इसे पढ़ो और देखो कि इसमें एक हिरन अपने मालिक की सेवा कैसे करता है।

एक बार हामदानी नाम का एक आदमी था जो इतना गरीब था कि वह बेचारा दरवाजे दरवाजे भीख मॉग कर गुजारा करता था।

कुछ दिनों बाद लोग उसको शक की नजर से देखने लगे और उन्होंने उसको भीख देना भी बन्द कर दिया ताकि वह उनके घर से दूर ही रह सके।

इसके बाद तो उसकी यह हालत हो गयी कि अब वह बेचारा सुबह सुबह कूड़े के ढेर पर जाता और वहॉ से उसको अगर खाने की कोई चीज़ मिलती तो वह खा लेता या फिर कुछ बाजरे के दाने उठा कर खा लेता नहीं तो भूखा ही रह जाता।

एक दिन वह जब कूड़े के ढेर में कुछ ढूँढ रहा था कि उसको एक दस सैन्ट का सिक्का मिल गया। उसने उसको अपने फटे कपड़े के एक कोने में बॉध लिया। वह उस कूड़े के ढेर में बाजरे के दाने भी ढूँढता रहा पर वे उसको कहीं मिले ही नहीं।

[27] Haamdaanee –a folktales of Zanzibar, East Africa. Taken from the Web Site : http://www.worldoftales.com/African_folktales/African_Folktale_45.html

उसने सोचा कि अब तो उसके पास दस सैन्ट हैं सो वह अब घर जा कर सोयेगा। वह घर गया, ठंडा पानी पिया, ज़रा सा तम्बाकू अपने मुँह में रखा और सो गया।

अगली सुबह जब वह कूड़े के ढेर में फिर कुछ ढूँढ रहा था तो उसको एक आदमी डंडियों की बनी बहुत बड़ी टोकरी ले जाता हुआ दिखायी दे गया।

उसने उस आदमी को पुकार कर पूछा — "तुम्हारी इस टोकरी में क्या है?"

उस आदमी का नाम मुहादीम[28] था, वह बोला — "हिरन।"

हामदानी बोला — "यहाँ लाओ उनको, मैं ज़रा देखूँ तो।"

पास में ही तीन अमीर आदमी खड़े थे वे मुहादीम से बोले — "तुम बेकार में ही उनको हामदानी के पास ले जाने की तकलीफ कर रहे हो।"

मुहादीम ने पूछा — "क्यों जनाब?"

"क्योंकि इस आदमी के पास तो एक सैन्ट भी नहीं है। यह हिरन क्या खरीदेगा।"

[28] Muhadeem – name of the deer seller

मुहादीम बोला — "मुझे पता नहीं था कि इस आदमी के पास बिल्कुल ही पैसे नहीं हैं मुझे लगा कि इसके पास बहुत सारे पैसे होंगे।"

वे बोले "नहीं, इसके पास कुछ भी नहीं हैं।"

एक बोला — "तुम देख नहीं रहे हो कि यह कूड़े के ढेर के पास बैठा है? यह यहाँ रोज आ कर इस कूड़े के ढेर को बाजरे के कुछ दानों के लिये मुर्गी की तरह कुरेदता है ताकि यह ज़िन्दा रह सके।

अगर इसके पास पैसे होते तो अपनी ज़िन्दगी में क्या यह अपने लिये एक वक्त का खाना नहीं खरीद लेता? यह एक हिरन क्या खरीदेगा? और फिर उसका यह करेगा भी क्या। यह अपने लिये तक तो खाना जुटा नहीं पाता फिर हिरन को क्या खिलायेगा?"

मुहादीम बोला — "जनाब, मैं तो यहाँ अपनी कुछ चीज़ बेचने आया था। जो भी मुझे बुलायेगा मुझे उसके पास तो जाना ही पड़ेगा। मेरा कोई प्रिय नहीं है और कोई मेरा दुश्मन भी नहीं है। इसने मुझे बुलाया तो मैं इसके पास जा रहा हूँ।"

पहला आदमी बोला — "ठीक है। तुम्हें हमारे ऊपर विश्वास नहीं है न तो तुम जाओ इसके पास पर हम इसके बारे में सब जानते हैं कि यह कहाँ रहता है और यह क्या खरीद सकता है।"

दूसरा आदमी बोला — "हाँ हाँ यही बात है। तुमको उससे बात कर के पता चल जायेगा कि हम ठीक कह रहे हैं या गलत।"

इसके बाद तीसरा आदमी बोला — "बादलों से पता चलता है कि बारिश आने वाली है पर हमको कहीं कुछ ऐसा नहीं लगता कि यह कोई पैसा खर्च कर सकता है।"

मुहादीम बोला — "ठीक है। पर बहुत सारे लोग जो इस आदमी से देखने में कहीं ज़्यादा अमीर लगते हैं मुझे बुलाते हैं और जब मैं उनके पास जा कर अपने हिरन दिखाता हूँ तो कहते हैं कि ये बहुत मँहगे हैं। सो अगर यह आदमी भी यही कहेगा तो मुझे बुरा नहीं लगेगा। इसलिये मैं इसके पास जाता हूँ।"

उन तीनों में से एक ने कहा — "देखते हैं यह भिखारी क्या खरीदता है।"

दूसरा बोला — "हुँह, वह क्या कुछ खरीदेगा? जहाँ तक मैं जानता हूँ उसने तीन साल में एक खाना तक तो खरीदा नहीं है वह हिरन क्या खरीदेगा। ऐसा आदमी हिरन खरीद भी कैसे सकता है।

खैर, चलो चल कर देखते हैं। और अगर वह इस बेचारे आदमी को केवल यह बोझा ही यहाँ से वहाँ तक ले जाते हुए देखना चाहता है ताकि वह हिरन देख सके तो हम उसको कसके एक एक छड़ी मारेंगे ताकि वह सीखे कि किसी भले व्यापारी से कैसे बर्ताव किया जाता है।"

जब वे सब हामदानी के पास आये तो उन तीनों में से एक ने कहा — "ये रहे हिरन। अब एक खरीदो। तुम उनको केवल देख सकते हो पर खरीद नहीं सकते।"

लेकिन हामदानी ने उनके कहने पर कोई ध्यान नहीं दिया और उस आदमी से पूछा — "तुमने एक हिरन कितने का दिया है?"

तभी दूसरा आदमी बीच में बोला — "तुम बहुत भोले बन रहे हो। यह तो तुम भी जानते हो और हम भी जानते हैं कि हिरन तो रोज ही **25** सैन्ट के दो बिकते हैं।"

फिर भी हामदानी ने उनकी बातों पर कोई ध्यान नहीं दिया और उस आदमी से बोला — "मैं दस सैन्ट में एक हिरन खरीदना चाहता हूँ, बोलो दोगे मुझे?"

वे तीनों हँसे और बोले — "दस सैन्ट में एक हिरन? क्यों नहीं, क्यों नहीं। फिर कहोगे कि हिरन खरीदने के लिये मुझे दस सैन्ट भी दो। क्यों?" और एक आदमी ने उसके गाल पर हाथ से हल्का सा चपत लगा दिया।

इस पर हामदानी ने उससे कहा — "तुमने मेरे गाल पर चपत क्यों मारी जबकि मैंने तुम्हारा कुछ नहीं बिगाड़ा? मैं तो तुमको जानता तक नहीं। मैंने तो इस आदमी को बुलाया था कुछ खरीदने के लिये और तुम अजनबी लोग हमारी खरीद खराब कर रहे हो।"

फिर उसने अपने फटे कोट के एक कोने में से दस सैन्ट का एक सिक्का निकाला और मुहादीम को देते हुए कहा — "मेहरबानी कर के मुझे दस सैन्ट का एक हिरन दे दो।"

इस पर उस आदमी ने पिंजरे में से एक छोटा सा हिरन निकाला और यह कहते हुए उसको थमा दिया कि "यह लो, मैं इसको कीजी पा[29] नाम से बुलाता हूँ।"

फिर वह हिरन बेचने वाला उन तीनों आदमियों की तरफ देख कर हँसा और बोला — "कैसा रहा? तुम लोग जो बढ़िया सफेद कपड़े पहनते हो, पगड़ी बॉधते हो, तलवार रखते हो और पैरों में जूते पहनते हो और जिनके पास बहुत सारी जायदाद है।

और तुमने कहा था कि यह आदमी तो इतना गरीब है कि कुछ भी नहीं खरीद सकता फिर भी उसने दस सैन्ट का एक हिरन खरीद लिया। मुझे लगता है कि तुम्हारे पास तो आधा हिरन खरीदने के लिये भी पैसे नहीं हैं अगर पॉच सैन्ट का भी एक हिरन होता तो।"

उसके बाद मुहादीम और वे तीनों आदमी अपने अपने रास्ते चले गये।

हामदानी उस कूड़े के ढेर को तब तक उलटता पलटता रहा जब तक उसको उसमें से बाजरे के कुछ दाने नहीं मिल गये – कुछ अपने लिये और कुछ अपने कीजी पा हिरन के लिये। फिर वह भी

[29] Eastern Africans and Southern African call a deer as Kiji Pa

अपने घर चला गया। उसने अपनी चटाई बिछायी और दोनों साथ साथ सो गये।

कूड़े के ढेर पर जाना, बाजरे के दाने ढूँढना और फिर घर आ कर चटाई बिछा कर सो जाना, यह सब करीब एक हफ्ते तक ही चला था कि एक रात हामदानी की ऑख कोई आवाज सुन कर खुल गयी। उसे लगा कि कोई पुकार रहा था "मालिक, मालिक"।

उसने जवाब दिया — "मैं यहॉ हूँ। कौन बुला रहा है मुझे?"

हिरन बोला — "मालिक, मैं पुकार रहा हूँ आपको।"

हामदानी ने चारों तरफ देखा तब भी उसे कोई नहीं दिखायी दिया। वह घबरा गया तभी वह हिरन फिर बोला — "मालिक, मैं पुकार रहा हूँ आपको। आपका हिरन।"

अब तो हामदानी की समझ में ही नहीं आया कि वह बेहोश हो जाये या उठ कर भाग जाये। उसको परेशान सा देख कर कीजी पा बोला — "क्या बात है मालिक, आप इतना क्यों परेशान हो रहे हैं?"

हामदानी बोला — "यह मैं क्या आश्चर्य देख रहा हूँ।"

हिरन बोला — "आश्चर्य? आपने ऐसा कौन सा आश्चर्य देख लिया मालिक जिसकी वजह से आप इतने परेशान हो गये?"

हामदानी बोला — "यह तो वाकई आश्चर्य है। मैं जाग रहा हूँ या सपना देख रहा हूँ? कौन विश्वास करेगा कि कोई हिरन भी बोल सकता है।"

कीजी पा हँसा और बोला — "बस इसी लिये? अभी तो इससे भी ज़्यादा आश्चर्यजनक चीज़ें हैं देखने के लिये। पर अब आप वह सुनिये जिस बात के लिये मैंने आपको पुकारा था।"

"यकीनन, मैं तुम्हारी हर बात सुनूँगा क्योंकि तुम्हारी बात सुने बिना तो मैं रह ही नहीं सकता।"

कीजी पा बोला — "तो हुआ यों कि मैंने ही आपको अपना मालिक चुना और मैं अब आपके पास से भाग भी नहीं सकता इस लिये मैं चाहता हूँ कि आप मुझसे एक समझौता कर लें और मैं आप से एक वायदा कर लूँ जिसको मैं कभी नहीं तोड़ूँगा।"

हामदानी बोला — "बोलो, क्या बोलते हो?"

हिरन आगे बोला — "किसी को भी आपको बहुत ज़्यादा देर तक यह जानने की जरूरत नहीं है कि आप बहुत ही गरीब हैं।

ज़िन्दा रहने के लिये यह कूड़े के ढेर से रोज रोज बाजरे के दाने चुनना आपके लिये तो ठीक हो सकता है क्योंकि आपको इसकी आदत पड़ी हुई है क्योंकि इसके बिना आपका काम भी नहीं चल सकता।

पर अगर मैं आपके साथ कुछ दिन और रहा तो आपके पास कोई हिरन नहीं रह जायेगा क्योंकि मैं तो भूख से मर जाऊॅगा। कीजी पा मर जायेगा मालिक।

इसलिये अपना खाना खाने के लिये मैं रोज बाहर जाना चाहता हूॅ और मैं वायदा करता हूॅ कि मैं रोज शाम को आपके पास वापस आ जाऊॅगा।"

हामदानी ने बेमन से उसको बाहर जाने की इजाज़त दे दी।

इतने में सुबह हो गयी था सो कीजी पा बाहर भाग गया। हामदानी उसके पीछे पीछे गया। पर हिरन तो बहुत तेज़ भागता है सो कुछ ही पल में वह हामदानी की नजर से गायब हो गया और हामदानी उसे वहीं खड़ा देखता रह गया।

उसकी ऑखों से ऑसू बहने लगे और वह अपने हाथ उठा कर चिल्लाया — "ओ मेरी मॉ, ओ मेरे बाप, मेरा हिरन तो गया।"

उसके पड़ोसियों ने जब उसका यह रोना चिल्लाना सुना तो बोले — "तुम बेवकूफ हो और एक बहुत ही बेकार के आदमी हो।"

एक पड़ोसी बोला — "तुम जाओ और उस कूड़े के ढेर के पास बैठ कर उसे ही कुरेदते रहो। पता नहीं कितनी देर तक, और हो सकता है तब तक जब तक कि तुम्हारी तकदीर से तुमको एक दस सैन्ट का सिक्का और न मिल जाये।

और अगर तुमको एक दस सैन्ट का सिक्का मिल भी गया तो भी तुमको तो इतनी भी समझ नहीं कि उससे जा कर कुछ अच्छा

खाना खरीद लो। तुम तो उससे एक हिरन खरीद लाओगे और फिर उसको भी भाग जाने दोगे।

अब तुम क्यों रो चिल्ला रहे हो? यह सब मुसीबत तो तुम्हारी अपनी बुलायी हुई है।"

हामदानी को यह हमदर्दी अच्छी लगी और वह तुरन्त ही फिर अपने कूड़े के ढेर के पास चला गया। वहॉ से कुछ बाजरे के दाने बीने और घर वापस आ गया। आज उसको अपना घर बहुत अकेला लग रहा था क्योंकि आज कई दिनों के बाद कीजी पा नहीं था न घर में।

शाम को कीजी पा दौड़ता हुआ घर आ गया। हामदानी उसको देख कर बहुत खुश हो गया "ओह मेरे दोस्त तुम वापस आ गये?"

कीजी पा बोला — "मैंने आपसे वायदा किया था न कि मैं रोज सुबह अपने खाने की तलाश में जाऊॅगा और शाम को घर वापस आ जाऊॅगा। सो मैं आ गया।

मुझे तभी लग रहा था जब आपने मुझे खरीदा था कि आपके पास उस समय जितना भी पैसा था वह सारा पैसा आपने मेरे ऊपर खर्च कर दिया था, चाहे वह दस सैन्ट ही थे।

तब मैं आपको दुख क्यों दूॅ? मैं तो ऐसा कर ही नहीं सकता। अगर मैं जाता भी हूॅ तो मैं खाना खा कर हमेशा ही शाम को घर वापस आ जाऊॅगा। आप बेफिक्र रहें।"

जब पड़ोसियों ने देखा कि हिरन रोज सुबह चला जाता है और रोज शाम को घर वापस आ जाता है तो उनको बड़ा आश्चर्य हुआ। उन्होंने हामदानी पर शक करना शुरू कर दिया कि वह जादूगर था।

इस सबको होते हुए भी पॉच दिन बीत गये। रोज सुबह हिरन बाहर चला जाता और शाम को घर वापस आ जाता। शाम को आ कर वह अपने मालिक को उन जगहों के हाल सुनाता जहॉ जहॉ वह दिन में हो कर आया था। फिर अपने खाने के बारे में बताता।

छठे दिन जब हिरन एक घने जंगल में कॅटीली झाड़ियों में अपना खाना खा रहा था कि उसने उसके पास में उगे हुए एक बड़े पेड़ की जड़ की घास में खुरचना शुरू किया। इत्तफाक से वहॉ उसको एक बड़ा सा चमकीला हीरा मिल गया।

तुरन्त ही उसके मुॅह से निकला — "अरे यह तो बहुत बड़ा खजाना है। और अगर मैं गलत नहीं हूॅ तो यह तो हीरा है और एक पूरा का पूरा राज्य खरीद सकता है।

उसने सोचा अगर मैं इसको ले जा कर अपने मालिक को दे दूॅगा तो लोग उनको मार देंगे क्योंकि वे पूछेंगे कि इतने गरीब आदमी के पास इतना कीमती हीरा कहॉ से आया।

और अगर वह यह जवाब देगा कि मुझे यह पड़ा हुआ मिला तो भी उसका कोई विश्वास नहीं करेगा। और अगर उसने यह कहा कि मुझे किसी ने दिया तो भी कोई उसका विश्वास नहीं करेगा।

मैं अपने मालिक को किसी तरह की मुश्किल में नहीं डालना चाहता। मुझे मालूम है कि मुझे क्या करना चाहिये। मैं किसी ऐसे बड़े आदमी को ढूँढता हूँ जो इसको ठीक से इस्तेमाल कर सके।"

सो कीजी पा ने वह हीरा एक पत्ते में लपेटा, अपने मुँह में दबाया और जंगल में दौड़ गया। वह दौड़ता गया, दौड़ता गया पर उस दिन उसको कोई शहर ही नजर नहीं आया सो उस दिन वह जंगल में ही सो गया।

सुबह उठ कर वह फिर अपने रास्ते पर चल दिया। पर दूसरा दिन भी पहले दिन की तरह ही गुजर गया।

तीसरे दिन वह फिर सुबह से अपने सफर पर चला। शाम को जा कर उसको कहीं छिटके छिटके घर दिखायी दिये। घर फिर धीरे धीरे बड़े होते गये और घने होते गये। इससे उसको लगा कि वह किसी शहर में पहुँच गया है।

चलते चलते वह शहर की एक बड़ी सड़क पर पहुँच गया जो सुलतान के महल को जाती थी। बस वहाँ से वह बहुत तेज़ी से भाग लिया।

सड़क पर आते जाते लोग हरे पत्तों में लिपटी किसी चीज़ को मुँह में दबाये एक तेज़ी से भागते हुए हिरन को बड़े आश्चर्य से देख रहे थे।

जब कीजी पा सुलतान के महल में पहुँचा तो सुलतान अपने महल के दरवाजे के पास ही बैठा हुआ था। कीजी पा महल के दरवाजे से कुछ दूरी पर ही रुक गया। उसने वह हीरा नीचे डाल दिया और खुद भी हाँफता हुआ उसके पास ही लेट गया।

फिर वह चिल्लाया — "कोई है? कोई है?"

उस देश में ऐसी आवाज बाहर खड़े हो कर कोई तभी लगाता था जब उसको घर में अन्दर घुसना होता था और वह बाहर तब तक इन्तजार करता था जब तक घर में से उसकी आवाज का कोई जवाब नहीं दे देता था।

हिरन को यह आवाज कई बार लगानी पड़ी तब कहीं जा कर सुलतान ने अपने नौकरों से कहा — "देखो तो बाहर यह कौन पुकार रहा है?" एक नौकर ने देख कर बताया कि एक हिरन पुकार रहा है।

सुलतान ने कहा — "ठीक है, उस हिरन को अन्दर बुलाओ।"

सुलतान के तीन नौकर हिरन को बुलाने के लिये दौड़ पड़े और हिरन से बोले — "चलो, सुलतान ने तुमको अन्दर बुलाया है।"

सो हिरन अपने मुँह में हीरा दबाये अन्दर आया। उसने हीरा सुलतान के पैरों के पास रख दिया और बोला — "सलाम हुजूर।"

सुलतान बोला — "सलाम। अल्लाह तुम्हारा भला करे।"

फिर सुलतान ने अपने नौकरों को एक कालीन और एक बड़ा तकिया लाने के लिये कहा और हिरन को उस पर आराम से बैठने को कहा।

जब हिरन ने मना किया और कहा कि वह वहीं ठीक था जहाँ वह बैठा था तो सुलतान ने उससे उस कालीन पर बैठने की जिद की तो फिर तो कीजी पा को उस पर बैठना ही पड़ा। उस कालीन पर बैठा हुआ वह हिरन एक बड़ा खास इज़्ज़तदार मेहमान लग रहा था।

इसके बाद सुलतान के नौकर हिरन के खाने के लिये कुछ दूध और चावल ले आये। सुलतान ने हिरन से कहा कि वह पहले दूध और चावल खा ले फिर कुछ आराम कर ले तब वह उससे बात करेगा।

हिरन ने कुछ बोलना भी चाहा पर सुलतान उससे कुछ भी सुनने के लिये तैयार नहीं था जब तक कि उसने वे दूध और चावल नहीं खा लिये और थोड़ा आराम नहीं कर लिया।

जब सब कुछ हो चुका तब सुलतान ने हिरन से कहा — "अब बताओ मेरे दोस्त तुम्हें क्या कहना है।"

कीजी पा बोला — "मुझे मालूम नहीं कि आप इस खबर को कैसी समझेंगे पर सच तो यह है कि मैं आपको बेइज़्ज़त करने के

लिये भेजा गया हूँ। मैं आपसे लड़ने के लिये भेजा गया हूँ। मैं आपके पास शादी का पैगाम ले कर आया हूँ।"

सुलतान बोला — "ओह हिरन, हिरन होते हुए भी तुम बहुत अच्छा बोलना जानते हो। मैं तो खुद ही कोई ऐसा आदमी ढूँढ रहा था जो मुझे बेइज़्ज़त करे, जो मेरे साथ लड़े। मैं तो शादी के लिये बहुत ही बेचैन हो रहा था। आगे बोलो।"

कीजी पा बोला — "तो आप मेरे लिये अपने मन में कुछ बुरा नहीं सोच रहे हैं न? मैं तो केवल पैगाम लाने वाला हूँ।"

सुलतान बोला — "नहीं नहीं, बिल्कुल नहीं। आगे बोलो।"

कीजी पा बोला — "तब आप इसको देखें जो मैं यह ले कर आया हूँ।"

कह कर उसने पत्तों में लिपटा वह हीरा सुलतान की गोद में डाल दिया। सुलतान ने पत्ता खोला तो उसमें एक बड़ा सा चमकदार हीरा देख कर आश्चर्यचकित हो गया और बोला "सो?"

कीजी पा बोला — "मैं यह हीरा अपने मालिक सुलतान दाराई[30] की तरफ से ले कर आया हूँ। उन्होंने सुना है कि आपके घर में शादी लायक एक बेटी है इसी लिये उन्होंने यह हीरा आपको भेजा है और आपसे वह यह उम्मीद करते है कि आप उनको इस छोटी सी भेंट से ज़्यादा कीमती भेंट न भेजने के लिये माफ करेंगे।"

[30] Daraaee – name of Hamdani given to him by the deer

सुलतान ने मन में सोचा — "क्या? वह सुलतान इसको छोटी सी भेंट कहते हैं?"

फिर वह हिरन से बोला — "ओह, यह ठीक है, यह ठीक है। मैं राजी हूँ। सुलतान दाराई मेरी बेटी से शादी कर सकते हैं और मुझे उनसे और कोई भी चीज़ नहीं चाहिये। वह खाली हाथ भी मेरी बेटी से शादी करने आ सकते हैं।

और अगर उनके पास ऐसी छोटी छोटी भेंटें और हैं भी तो भी वह उनको अपने घर पर छोड़ कर आ सकते हैं। यही मेरा जवाब है। मुझे उम्मीद है कि तुम अपने मालिक को यह सब बातें साफ साफ कह दोगे।"

हिरन ने सुलतान को भरोसा दिलाया कि वह उसकी बात ठीक से कह देगा। फिर वह बोला — "ठीक है अब मैं सीधा अपने मालिक के पास जाता हूँ और ग्यारह दिन के अन्दर अन्दर हम वापस लौट कर आते हैं।" दोनों ने एक दूसरे को सलाम किया और हिरन वहाँ से चला गया।

इस बीच का हामदानी का समय बहुत ही मुश्किल से निकला। कीजी पा के गायब हो जाने के बाद वह कई दिनों तक उसको ढूँढता हुआ इधर से उधर घूमता रहा। पड़ोसी उसके ऊपर फिर हँसे। हिरन के खोने और पड़ोसियों के हँसने से तो वह पागल सा ही हो गया था।

एक शाम जब वह सोने जा रहा था तो कीजी पा घर में घुसा। उसको देख कर वह अपने बिस्तर से कूद पड़ा और अपने हिरन को गले लगा लिया। उसको गले लगा कर वह काफी देर तक रोता रहा।

जब हिरन ने देखा कि मालिक का अब काफी रोना हो गया तो वह बोला — "मालिक, अब आप यहाँ चुपचाप बैठिये। आज मैं आपके लिये एक बहुत ही अच्छी खबर ले कर आया हूँ।"

लेकिन वह भिखारी तो अपने हिरन को गले से लगाये हुए रोये ही जा रहा था "मैं सोच रहा था कि मेरा कीजी पा मर गया।"

हिरन बोला — "देखिये मालिक, मैं मरा नहीं हूँ ज़िन्दा हूँ। अब आप मेरी खुशखबरी सुनने के लिये ज़रा सँभल जाइये और फिर जैसा मैं कहता हूँ वैसा ही कीजिये।"

भिखारी बोला — "बोलो बोलो मुझे क्या करना है मैं वही करूँगा जो तुम कहोगे। अगर तुम कहोगे कि तुम पीठ के बल लेट जाओ और पहाड़ी से लुढ़क जाओ तो मैं वह भी कर लूँगा।"

हिरन बोला — "अभी मैं बहुत सारी बातें आपको नहीं समझा सकता लेकिन मैं अभी केवल इतना ही कह सकता हूँ कि मैंने बहुत किस्म के खाने देखे हैं, जो खाने लायक हैं वह भी और जो नहीं खाने लायक हैं वह भी, पर जो खाना आज मैं आपको खिलाने जा रहा हूँ वह बहुत मीठा है।"

हामदानी बोला — "क्या दुनियॉ में कोई ऐसी चीज़ भी है जो पूरी तरीके से अच्छी हो? क्योंकि हर चीज़ में अच्छाई और बुराई दोनों ही होते हैं। खाना जो तीखा और मीठा दोनों होता है वही अच्छा होता है लेकिन जिस खाने में केवल मिठास होती है क्या वह नुकसान नहीं करता?"

हिरन जॅभाई लेते हुए बोला — "मैं अभी आपसे बहुत सारी बातें नहीं कर सकता क्योंकि मुझे नींद आ रही है। अभी सोते हैं। कल सुबह उठ कर बस आपको मेरे पीछे पीछे चलना है।" यह कह कर हिरन तो वहीं सो गया तो हामदानी भी सोने चला गया।

सुबह उठते ही दोनों चल दिये हिरन आगे आगे, और भिखारी पीछे पीछे। पॉच दिन तक वे जंगल में चलते रहे। पॉचवें दिन वे एक नदी के पास आये। वहॉ आ कर हिरन ने भिखारी से कहा — "अब आप यहॉ पर लेट जाइये।"

भिखारी लेट गया तो हिरन ने उसको बहुत मारा, और इतना मारा कि वह बेचारा चिल्ला पड़ा — "रुक जाओ, रुक जाओ, तुम मुझे इतना क्यों मार रहे हो?"

हिरन रुक गया और बोला — "ठीक है ठीक है अब मैं आपको और नहीं मारता। अब मैं चलता हूॅ पर जब तक मैं लौटूॅ नहीं आप यहीं रहियेगा और किसी भी हालत में यह जगह नहीं छोड़ियेगा।"

कह कर हिरन भाग गया और 10 बजे सुबह ही सुलतान के महल पहुँच गया।

जिस दिन से कीजी पा सुलतान के महल से गया था उसी दिन से सुलतान ने अपनी सड़कों पर इस उम्मीद में अपने बहुत सारे आदमी खड़े कर रखे थे कि पता नहीं सुलतान दाराई कब आ जायें।

सो जैसे ही एक आदमी ने हिरन को आते देखा वह सुलतान से कहने गया — "सुलतान, ओ सुलतान, सुलतान दाराई आ रहे हैं। मैंने अभी अभी कीजी पा को इधर ही आते देखा है।" सुलतान और उसके आदमी सब सुलतान दाराई को मिलने के लिये तैयार हो गये।

पर जब सुलतान सुलतान दाराई को लेने के लिये शहर से कुछ दूरी पर गया तो देख कर आश्चर्यचकित रह गया कि हिरन तो अकेला ही चला आ रहा था। हिरन जब पास आ गया तो बोला — "सलाम मालिक।"

सुलतान ने बड़ी नम्र आवाज में उसके सलाम का जवाब दिया और उससे उसकी खबर पूछी। कीजी पा बोला — "बस कुछ न पूछिये मालिक। मैं बड़ी मुश्किल से चल कर यहाँ तक आया हूँ और खबर भी अच्छी नहीं है।"

सुलतान ने उसे तसल्ली दे कर पूछा — "कीजी पा कुछ बोलो तो सही कि हुआ क्या है।"

कीजी पा बोला — "बहुत बुरा हुआ है सुलतान बहुत बुरा हुआ है। सुलतान दाराई और मैं दोनों यहॉ आ रहे थे। काफी दूर तक तो हम लोग ठीक ही आ गये पर जब हम घने जंगल में पहुँचे तो रास्ते में हमें कुछ डाकू मिल गये।

डाकुओं ने मेरे मालिक को पकड़ लिया और बॉध कर उनको खूब मारा। उन्होंने हम जो शादी के लिये सामान ले कर आ रहे थे वह सब भी लूट लिया। यहॉ तक कि वे उनके शरीर के कपड़े भी ले गये। उफ, यह सब क्या हो गया।"

सुलतान बेचारा तो यह सब सुन कर बहुत परेशान हो उठा। वह बोला — "हमें तुरन्त ही सुलतान दाराई की सहायता के लिये चलना चाहिये।" और वह तुरन्त ही घर की तरफ वापस चल दिया।

वहॉ जा कर उसने अपने एक आदमी को उसके अस्तबल का सबसे अच्छा घोड़ा तैयार करने और उस पर सबसे अच्छी जीन[31] कसने के लिये कहा। और एक दासी को अपनी आलमारी में से पहनने के कपड़ों का एक थैला लाने के लिये कहा।

जब वह कपड़ों का थैला ले आयी तो उसने उस थैले में से एक नीचे पहनने वाला कपड़ा, एक सफेद लम्बा चोगा, एक काली जैकेट कपड़ों के ऊपर पहनने के लिये, एक शाल कमर में बॉधने के लिये

[31] Translated for the word "Saddle". See its picture above.

और एक पगड़ी निकाल ली। वे सब बहुत बढ़िया कपड़ों के बने थे।

फिर उसने सोने की मूठ की एक तलवार, सोने का बारीक काम की गयी एक छोटी कटार[32] और एक बहुत ही बढ़िया छड़ी भी साथ में ले ली।

फिर वह कीजी पा से बोला — "मेरे कुछ सिपाही साथ ले लो जो ये सब चीज़ें सुलतान दाराई को ले जा कर दे देंगे ताकि वह ठीक से तैयार हो कर मेरे पास आ सके।"

कीजी पा बोला — "क्या मैं ये सिपाही अपने सुलतान के सामने ले जा कर उनको शर्मिन्दा करूँगा? नहीं नहीं सुलतान, नहीं। वह वहॉ पर लुटे हुए और पिटे हुए पड़े हैं। ऐसी हालत में तो मैं उनको किसी को देखने भी नहीं दूँगा। यह सब मैं उनके लिये खुद ही ले कर जाऊँगा।"

सुलतान बोला — "पर यह घोड़ा है, ये कपड़े हैं, ये हथियार हैं। तुम एक छोटे से हिरन इतना सब कैसे ले कर जाओगे?"

कीजी पा बोला — "आप यह सब सामान इस घोड़े की पीठ पर लाद दीजिये। घोड़े की लगाम का एक सिरा उसकी गरदन से बॉध दीजिये और दूसरा सिरा मेरे मुँह में दे दीजिये। बस मैं यह सब सामान ले जाऊँगा।"

[32] Translated for the word "Dagger". See its picture above.

सुलतान ने ऐसा ही किया और सबके देखते देखते कीजी पा वह सब सामान ले कर वहाँ से चल दिया। यह सब देख कर लोग उसकी बहुत तारीफ करने लगे।

जब कीजी पा अपने मालिक के पास आया तो उसने अपने मालिक को वहीं नदी के पास लेटा पाया। वह कीजी पा को देख कर बहुत खुश हुआ।

कीजी पा आते ही बोला — "देखिये मालिक मैंने आपको जिस मीठे खाने का वायदा किया था वह मैं ले आया हूँ। अब आप उठ जायें और नहा धो कर ये कपड़े पहन कर तैयार हो जायें।"

भिखारी को तो नहाने धोने की आदत थी नहीं सो वह बड़ी हिचक के साथ नदी में घुस कर थोड़े से पानी से अपने आपको भिगोने लगा।

कीजी पा बोला — "मालिक इस थोड़े से पानी से कुछ नहीं होगा। आप पानी के अन्दर ठीक से घुस कर नहाइये।"

भिखारी बोला — "यहाँ तो बहुत सारा पानी है और जहाँ बहुत सारा पानी होता है वहाँ बहुत भयानक किस्म के जानवर होते हैं।"

कीजी पा आश्चर्य से बोला — "जानवर? किस किस्म के जानवर?"

"यही जैसे मगर, पानी की छिपकलियाँ, साँप, मेंढक आदि और वे लोगों को काट लेते हैं। मुझे उनसे बहुत डर लगता है।"

कीजी पा बोला — "अच्छा अच्छा ठीक है। आप जो चाहें करें पर अपने आपको ठीक से मल मल कर साफ कर लें। हॉ अपने दॉत भी बालू से मल कर ठीक से साफ कर लें वे बहुत गन्दे हैं।"

जल्दी ही भिखारी ठीक से नहा लिया और उसने अपने दॉत भी ठीक से साफ कर लिये। नहाने के बाद तो उसकी शक्ल ही बदल गयी थी।

कीजी पा ने उसको वे कपड़े पहनने को कहा जो सुलतान ने उसके लिये दिये थे। वह बोला — "सूरज डूबने वाला है और हमको इससे पहले ही यहॉ से चल देना चाहिये था।"

भिखारी ने जल्दी से सुलतान के भेजे हुए कपड़े पहने, उसके भेजे हुए घोड़े पर सवार हुआ और चल दिया – कीजी पा आगे आगे और भिखारी घोड़े पर पीछे पीछे।

कुछ दूर जाने पर हिरन रुक गया और भिखारी से बोला — "जो कोई भी आपको यहॉ देखेगा उसको यह पता नहीं होगा कि आप वही आदमी हैं जो कूड़े के ढेर में से बाजरे के दाने बीन कर खाया करते थे।

और अगर वे आपके शहर जा कर भी आपके बारे में पूछताछ करेंगे तो भी वे आपको पहचान नही पायेंगे क्योंकि आज आपका चेहरा और दॉत बहुत साफ हैं। आपकी शक्ल तो ठीक ठाक है पर एक बात के लिये सावधान रहियेगा।

जहाँ हम जा रहे हैं वहाँ के सुलतान की बेटी से मैंने आपकी शादी पक्की कर दी है। जो भेंट देनी होती है वह भी मैंने दे दी है। आप बस वहाँ चुप रहियेगा।

"आप कैसे हैं?" और "और क्या खबर है?" के सिवाय और कुछ मत कहियेगा। आपकी तरफ से मैं ही बात कर लूँगा।"

भिखारी बोला — "ठीक है, यह मेरे लिये बिल्कुल ठीक है।"

कीजी पा बोला — "क्या आपको मालूम है कि आपका नाम क्या है?"

"हाँ हाँ मुझे मालूम है मेरा नाम क्या है।"

"क्या है आपका नाम?"

"मेरा नाम हामदानी है।"

कीजी पा हँसा और बोला — "नहीं, अब नहीं। अब आपका नाम हामदानी नहीं है बल्कि अबसे आपका नाम सुलतान दाराई है।"

"ठीक है।"

वे लोग फिर आगे चले। थोड़ी ही दूर चलने के बाद उनको सुलतान के सिपाही दिखायी देखने लगे। उनमें से चौदह सिपाही उनके साथ साथ चल दिये। कुछ और आगे जाने पर उनको सुलतान, वज़ीर, अमीर, जज आदि भी दिखायी दिये। ये सब उनसे मिलने के लिये वहाँ आये हुए थे।

कीजी पा बोला — "अब आप अपने घोड़े पर से उतर कर अपने ससुर जी को सलाम करिये। वह वहॉ बीच में हल्के नीले रंग की जैकेट पहने खड़े हैं।"

भिखारी बोला — "ठीक है।" और वह अपने घोड़े पर से उतरा और दोनों सुलतानों ने एक दूसरे से हाथ मिलाये, एक दूसरे को चूमा और फिर दोनों सुलतान के महल की तरफ चल दिये।

सब लोगों की बहुत बड़ी दावत हुई, खुशियॉ मनायी गयीं और वे सब लोग रात गये तक बातें करते रहे। इस बीच सुलतान दाराई और हिरन अन्दर के कमरे में थे। तीन सिपाही उनकी सेवा और हिफाजत के लिये उनके कमरे के बाहर खड़े थे।

सुबह होने पर कीजी पा सुलतान के पास गया और बोला — "अब हम लोग वह काम कर लें जिसके लिये हम यहॉ आये हैं। आपकी बेटी की शादी सुलतान दाराई से कर दी जाये। जितनी जल्दी आप शादी कर देंगे सुलतान को अच्छा लगेगा।"

सुलतान बोला — "बिल्कुल ठीक। दुलहिन तैयार है। म्वाली मू[33] को बुलाया जाये और शादी का इन्तजाम किया जाये।" म्वाली मू आया तो सुलतान ने उसको अपनी बेटी की शादी सुलतान दाराई से करने को कहा। म्वाली मू ने दोनों की शादी करा दी।

[33] Mwaalee Moo, the priest

अगले दिन सुबह कीजी पा अपने मालिक से बोला — "मालिक मैं करीब एक हफ्ते के लिये बाहर जा रहा हूँ। जब तक मैं लौटूँ तब तक आप यहीं रहियेगा।"

फिर वह सुलतान के पास गया और बोला — "सुलतान जी, यह सब तो हो गया। अब मुझे मेरे सुलतान ने हुक्म दिया है कि मैं उनके घर जाऊँ और उसे ठीक कर के आऊँ। उन्होंने मुझे एक हफ्ते के अन्दर अन्दर आने के लिये कहा है। जब तक मैं लौट कर आऊँ वे यहीं रहेंगे।"

सुलतान ने पूछा — "तुमको कुछ सिपाही तो अपनी सहायता के लिये नहीं चाहिये?"

हिरन बोला — "नहीं, मैं बिल्कुल ठीक हूँ। मुझे अब किसी की जरूरत नहीं है। बस जब तक मैं लौट कर आऊँ तब तक आप मेरे सुलतान का ख्याल रखियेगा।"

"ठीक है।" और सुलतान से विदा ले कर हिरन अपने सफर पर चल दिया।

लेकिन कीजी पा अपने पुराने गॉव नहीं गया। वह वहॉ से दूसरी सड़क पकड़ कर एक दूसरे बहुत ही अच्छे शहर में गया।

वहॉ सब कुछ बहुत अच्छा था परन्तु उसने देखा कि वहॉ कोई रहता नहीं था। उसे वहॉ न तो कोई आदमी दिखायी दिया, न ही कोई औरत और न ही कोई बच्चा।

बड़ी सड़क पर चल कर उसके आखीर में वह एक बहुत ही बड़े और सुन्दर मकान के सामने आ खड़ा हुआ। ऐसा मकान तो उसने पहले कभी नहीं देखा था। वह मकान नीलम, फिरोजा और कीमती पत्थरों[34] का बना हुआ था।

उसने सोचा कि यही मकान उसके मालिक के लिये ठीक रहेगा। देखूँ तो कि यह मकान भी इस शहर के दूसरे मकानों की तरह से खाली है या कोई यहॉ रहता है? सो उसने उस मकान का दरवाजा खटखटाया।

कीजी पा के "कोई है? कोई है?" कई बार पुकारने पर भी अन्दर से कोई नहीं बोला तो कीजी पा ने सोचा — "यह बड़ी अजीब सी बात है। अगर कोई अन्दर नहीं है तो घर का दरवाजा बाहर से बन्द होना चाहिये और अगर कोई अन्दर है तो वह अन्दर से बोला क्यों नहीं?

हो सकता है कि यहॉ रहने वाले घर के किसी दूसरे हिस्से में हों या सो रहे हों। मैं थोड़ा ज़ोर से पुकारता हूँ।"

उसने फिर ज़ोर से पुकारा तो तुरन्त ही एक बुढ़िया ने अन्दर से ही जवाब दिया — "कौन है जो इतनी ज़ोर से चिल्ला रहा है?"

कीजी पा बोला — "मैं हूँ आपका पोता दादी मॉ।"

[34] Translated for the words "Sapphire, turquoise, and precious stones"

उस बुढ़िया ने जवाब दिया — "अगर तुम मेरे पोते हो तो तुरन्त अपने घर वापस चले जाओ। यहाँ आ कर तुम खुद भी मत मरो और मुझे भी मत मारो।"

कीजी पा बोला — "दादी माँ, मुझे अन्दर आने दो मैं आपसे कुछ बात करना चाहता हूँ।"

वह बुढ़िया फिर बोली — "मेरे प्रिय पोते, मैं तुम्हारे लिये दरवाजा इसलिये नहीं खोल रही क्योंकि दरवाजा खोलने पर मेरी और तुम्हारी दोनों की ज़िन्दगी के लिये खतरा है।"

कीजी पा फिर बोला — "दादी माँ, चिन्ता न करो। हम दोनों कम से कम कुछ देर के लिये तो सुरक्षित हैं ही इसलिये आप दरवाजा खोलें और मुझे अन्दर आ कर वह कहने दें जो मैं कहना चाहता हूँ।" सो उस बुढ़िया ने दरवाजा खोल दिया और हिरन अन्दर चला गया।

आपस में एक दूसरे के बारे में पूछने के बाद उस बुढ़िया ने कीजी पा से पूछा — "प्रिय पोते, अब बताओ कि तुम यहाँ क्या कहने आये हो।"

हिरन बोला — "दादी माँ हमारे यहाँ तो सब ठीक है आपके यहाँ कैसा है?"

वह बुढ़िया रोती हुई बोली — "यहाँ के हाल तो बहुत बुरे हैं बेटा। अगर तुम मरना चाहते हो तो यहाँ रह सकते हो। और मुझे तो यह लगता नहीं कि तुम आज मरना चाहते हो।"

कीजी पा बोला — "एक मक्खी के लिये शहद में मरना कोई बुरी बात नहीं है और इससे शहद को भी कोई नुकसान नहीं पहुँचता।"

बुढ़िया फिर बोली — "तुम्हारे लिये यह सब ठीक हो सकता है पोते, पर जब वे लोग नहीं बच सके जिनके पास तलवार और ढाल थे तो तुम जैसी छोटी चीज़ का क्या कहना?

मैं तुमसे फिर कहती हूँ कि तुम जहाँ से आये हो वहीं वापस चले जाओ। मुझे तुम्हारी सुरक्षा की तुमसे ज़्यादा चिन्ता है।"

कीजी पा बोला — "दादी माँ, अभी तो मैं यहाँ से वापस नहीं जा सकता। मैं इस जगह के बारे में कुछ और जानना चाहता हूँ। यह जगह है किसकी?"

बुढ़िया बोली — "ओह मेरे पोते, यहाँ बहुत सारा खजाना है, बहुत सारे आदमी हैं, सैंकड़ों घोड़े हैं। और इसके मालिक का नाम है नीओका एमकू[35], एक बहुत बड़ा साँप। असल में वही इस सारे शहर का भी मालिक है।"

कीजी पा बोला — "अच्छा तो यह बात है। दादी माँ क्या आप मुझे किसी ऐसी जगह रख सकती हैं जो उस साँप के पास हो और जब वह मेरे पास हो तब मैं उसको वहाँ से मार सकूँ?"

[35] Neeokaa Mkoo – the name of the python

यह सुन कर वह बेचारी बुढ़िया की तो सिट्टी पिट्टी ही गुम हो गयी। वह बोली — "अरे अरे ऐसी बात मत करो पोते। तुमने तो बहुत पहले से ही मुझे खतरे में डाल रखा है क्योंकि मुझे यकीन है इस घर में जो कुछ भी कहा जाता है उसको वह सॉप कहीं भी हो सब सुन लेता है।

तुम देख रहे हो न कि मैं एक गरीब बुढ़िया हूँ और मुझे उसने यहॉ ये बर्तन दे कर अपने लिये खाना बनाने के लिये रखा है। जब वह सॉप आता है तब हवा चलनी शुरू हो जाती है। धूल ऐसे उड़नी शुरू हो जाती है जैसे ऑधी आने वाली है।

वह जब ऑगन में आ जाता है तो यहॉ से वह तभी हटता है जब उसका पेट भर जाता है। फिर वह अन्दर पानी पीने जाता है। जब वह यह सब कर लेता है तो फिर चला जाता है। जब सूरज सिर पर चढ़ आता है तब वह फिर यही सब करता है।

मैं तुम्हें उसके बारे में एक बात और बता दूँ और वह यह कि उसके सात सिर हैं। उसके बारे में यह सब सुन कर अब तुम क्या सोचते हो कि क्या तुम उसका मुकाबला कर सकते हो?"

कीजी पा बोला — "देखिये दादी मॉ, आप मेरी बिल्कुल चिन्ता न करें। आप मुझे बस यह बतायें कि क्या इस बड़े सॉप के पास कोई तलवार भी है?"

"हाँ है न। यह लो।" कह कर वह बुढ़िया अन्दर गयी और एक चमचमाती तेज धार वाली तलवार निकाल लायी और कीजी पा को थमा दी।

फिर बोली — "इसमें चिन्ता करने की क्या बात है, हम लोग तो पहले से ही मरे हुए हैं।"

कीजी पा बोला — "देखते हैं क्या होता है।"

तभी ज़ोर की हवा चलने लगी और धूल ऐसे उड़ने लगी जैसे कि आँधी आने वाली हो। यह देख कर वह बुढ़िया चिल्लायी — "तुम सुन रहे हो न यह आँधी की आवाज, वह आ रहा है।"

कीजी पा बोला — "हुँह, अगर वह बड़ा है तो मैं भी बड़ा हूँ बल्कि मुझे तो यह भी फायदा है कि मैं घर के अन्दर हूँ। जानवरों के एक बाड़े में दो साँड़ नहीं रह सकते। इस घर में या तो वह रहेगा या मैं।"

बुढिया बेचारी समझ ही नहीं पा रही थी कि वह किस मुश्किल में आ फँसी थी फिर भी वह छोटे से हिरन के भरोसे पर मुस्कुरा दी। वह बार बार हिरन को याद दिलाती रही कि इस साँप ने तलवार और ढाल लिये हुए कितने सारे लोग मार दिये हैं।

हिरन बार बार यह सब सुन कर झल्ला गया और बोला — "आप अपनी ये बातें बन्द करिये दादी माँ। आप केले का रंग और साइज़ देख कर केले का अन्दाज नहीं लगा सकतीं। ज़रा इन्तजार कीजिये और फिर देखिये कि क्या होता है।"

थोड़ी ही देर मे वह बड़ा सॉप नीओका एमकू अपने ऑगन में आ गया और चारों तरफ घूम घूम कर सारे बरतनों का सामान खा गया। फिर वह दरवाजे के पास आया और बोला — "ओ बुढ़िया, यह अन्दर आज किसी नयी तरह की खुशबू कैसी आ रही है?"

बुढ़िया बोली — "किसी तरह की भी नहीं। मैं तो यहॉ इतनी देर से काम कर रही थी कि मुझे अपने आपको देखने का भी समय नहीं मिला। हॉ आज सुबह ही मैंने थोड़ी सी खुशबू अपने कपड़ों में जरूर लगायी थी आपको उसी की खुशबू आ रही होगी।"

इस समय कीजी पा ने अपनी तलवार बाहर खींच ली थी और वह दरवाजे के अन्दर की तरफ खड़ा था सो जैसे ही सॉप ने अपना सिर घर के अन्दर किया कीजी पा ने उसका सिर इतनी जल्दी से काट दिया कि सॉप को पता ही नहीं चला।

फिर सॉप ने अपना दूसरा सिर अन्दर किया तो कीजी पा ने उसको भी वैसे ही काट दिया। इस बार सॉप को कुछ लगा तो वह बोला — "अन्दर कौन है जो मुझे इस तरह खुजला रहा है?"

फिर उसने अपना तीसरा सिर अन्दर किया तो वह भी इसी तरह काट दिया गया। इस तरह कीजी पा ने उसके छह सिर काट दिये।

अब सॉप ने अपना सातवॉ सिर अन्दर किया तो हिरन चिल्लाया — "अब तुम्हारा समय आ गया है। तुम बहुत सारे पेड़ों पर चढ़

चुके हो पर तुम इस पेड़ पर नहीं चढ़ सकते।" और यह कह कर उसने उसका आखिरी सिर भी काट दिया।

पर फिर वह खुद बेहोश हो गया।

हालाँकि वह बुढ़िया पिचहत्तर साल की थी फिर भी साँप को मरते देख कर वह एक नौ साल की बच्ची की तरह खुशी से कूद पड़ी, चिल्ला पड़ी और हँसने लगी। फिर वह पानी लाने गयी और पानी ला कर हिरन के ऊपर छिड़का। उसका सिर तब तक इधर उधर घुमाया जब तक कि उसको छींक नहीं आ गयी।

फिर उसने हिरन की हवा की, उसका शरीर सहलाया और तब तक देखभाल की जब तक उसको ठीक से होश नहीं आ गया। जैसे ही उसको होश आया वह बुढ़िया बहुत खुश हो गयी और बोली — "मेरे पोते, कौन जानता था कि तुम उसका मुकाबला कर सकते हो?"

कीजी पा बोला — "चलिये दादी माँ, अब सब खत्म हो गया। अब आप मुझे वह सब कुछ दिखाइये जो इस घर में है।" बुढ़िया ने हिरन को ऊपर से ले कर नीचे तक सब कुछ दिखा दिया।

उसने कीजी पा को मँहगे खाने के सामान से और दूसरे सामान से और बहुत सारे लोगों से भरे सारे कमरे दिखाये। बहुत सारे लोग उस साँप ने बन्दी बना कर रखे हुए थे उसने हिरन को वे भी दिखाये।

कीजी पा ने बुढ़िया से पूछा कि सॉप के मरने के बाद उसके सामान पर कब्जा करने वाला और कोई तो नहीं है। वह बोली "नहीं और कोई नहीं है अब यह सब तुम्हारा ही है।"

कीजी पा बोला — "ठीक है। जब तक मैं अपने मालिक को ले कर आता हूँ तब तक आप इस सबकी देखभाल कीजिये। यह जगह अब मेरे मालिक की है।"

कीजी पा ने तीन दिन तक वहॉ ठहर कर उस घर को देखा और सोचा "मैंने अपने मालिक के लिये जो कुछ किया है उसे देख कर वह बहुत खुश होंगे और जैसी ज़िन्दगी वह बिता रहे थे उसके मुकाबले में इस ज़िन्दगी की बहुत तारीफ करेंगे।

और जहॉ तक उनके ससुर का सवाल है उनके तो शहर भर में इस जैसा एक भी मकान नहीं है।"

चौथे दिन वह वहॉ से चल दिया और ठीक समय से अपने मालिक के पास आ गया। सुलतान उसको देख कर बहुत खुश हुआ और उसका अपना मालिक तो इतना खुश हुआ जैसे उसको नयी ज़िन्दगी मिल गयी हो क्योंकि कीजी पा के बिना वह बहुत अकेला महसूस कर रहा था।

कुछ देर बाद कीजी पा ने अपने मालिक से कहा कि आज से चार दिन बाद वह अपनी पत्नी के साथ अपने घर चलने के लिये तैयार हो जायें।

फिर वह सुलतान के पास गया और उससे कहा — "सुलतान दाराई चार दिन के बाद अपनी पत्नी के साथ अपने राज्य जाना चाहेंगे।"

यह सुन कर पहले तो सुलतान ने मना किया पर फिर अपने दामाद[36] की इच्छा के अनुसार अपनी बेटी को विदा करने को तैयार हो गया।

जाने वाले दिन सुलतान दाराई को छोड़ने के लिये बहुत सारे लोग जमा हुए – दुलहिन की नौकरानियॉ, नौकर, घुड़सवार और कीजी पा उन सबके आगे था।

वे लोग तीन दिन तक सफर करते रहे। जब दोपहर होती तो वे आराम करते और हर शाम पॉच बजे खाने और सोने के लिये रुक जाते। सुबह जल्दी ही उठते, खाना खाते और फिर चल देते।

इस बीच कीजी पा ने बहुत कम आराम किया। वह सारा दिन काफिले के सभी आदमियों और जानवरों की देखभाल करने में लगा रहता कि सबको खाना ठीक से मिला कि नहीं, सबने ठीक से आराम किया कि नहीं, किसी को कोई तकलीफ तो नहीं है। इसलिये सारा काफिला उसको बहुत प्यार करता था।

चौथे दिन तीसरे पहर के समय कुछ मकान दिखायी देने शुरू हुए तो कारवॉ ने कीजी पा का ध्यान उधर खींचा। कीजी पा बोला

[36] Translated for the word "Son-in-Law" – means the husband of the daughter

— "हाँ यही हमारा शहर है। और तुम लोग वह बड़ा वाला मकान देख रहे हो न, वही हमारे सुलतान दाराई का महल है।"

उस महल का आँगन तो काफिले के सारे लोगों से भर गया और सुलतान और उसकी पत्नी महल में अन्दर चले गये।

जब उस बुढ़िया ने कीजी पा को देखा तो उसने तो खुशी से नाचना और चिल्लाना शुरू दिया जैसे वह जब नाची थी जब कीजी पा ने नीओका एमकू सॉप को मारा था। उसने उसका पैर उठा कर चूम लिया।

कीजी पा बोला — "दादी माँ, यह मेरा नहीं बल्कि हमारे मालिक सुलतान दाराई का काम था। आप जा कर उनके पैर चूमिये। जब भी वह मौजूद हों तो पहली इज़्ज़त उन्हीं को मिलनी चाहिये।"

बुढ़िया ने सुलतान को न जानने के लिये कीजी पा से माफी माँगी। कीजी पा और सुलतान फिर सारा मकान देखने गये।

सुलतान ने सारे कमरे साफ करवाये, कुर्सियाँ और मेज आदि साफ करवाये, सारे बन्दियों को आजाद किया, घोड़ों को घास खाने के लिये घास के मैदान भेज दिया गया। नौकरों ने इसी बीच खाना तैयार कर दिया।

सबको उनके रहने की जगह बता दी गयी। सब लोग खुश थे। कुछ दिन रहने के बाद सुलतान की पत्नी की नौकरानियों ने

अपने घर जाने की इजाज़त चाही। कीजी पा ने उन्हें और कुछ दिन के लिये रोक लिया पर फिर वे चली गयीं।

कीजी पा ने उन सबको बहुत सारी भेंटें दे कर भेजा। इससे उनके दिल में कीजी पा के लिये अपने सुलतान से भी ज़्यादा इज़्ज़त बढ़ गयी। अब वहाँ सब लोग खुशी से रहने लगे।

एक दिन कीजी पा बुढ़िया से बोला — "मुझे ऐसा लगता है कि मेरे मालिक बहुत ही भोले हैं। जबसे मैं उनके साथ हूँ मैंने उनका भला ही किया है। मैंने यहाँ इस शहर में आ कर उनके लिये बहुत से खतरे मोल लिये। और जब सब कुछ हो गया तो मैंने उनको वह सब कुछ दे दिया।

पर उन्होंने कभी यह नहीं पूछा कि "तुमको यह घर कैसे मिला? या तुमको यह शहर कैसे मिला? या इस घर का मालिक कौन था? या तुमने ये सब चीज़ें किराये पर लीं या फिर तुमको किसी ने दीं? यहाँ के रहने वालों का क्या हुआ? मैं कुछ समझ नहीं पा रहा हूँ।

इसके अलावा हालाँकि मैंने उनके लिये अच्छे के अलावा और कुछ नहीं किया फिर भी उन्होंने मेरे लिये एक भी अच्छा काम नहीं किया। देखा जाये तो यहाँ उनका अपना तो कुछ भी नहीं है। उन्होंने ऐसा घर, ऐसा शहर तो जिस दिन से वह पैदा हुए हैं उन्होंने कभी देखा ही नहीं।

मुझे लगता है कि बड़े बूढ़े लोग ठीक कहते थे "जब तुम किसी के लिये कुछ अच्छा करो तो उसके लिये बहुत ज़्यादा अच्छा मत

करो। कभी कभी उसका थोड़ा सा नुकसान भी करो तभी वह तुम्हारी अच्छाइयों को पहचानेगा।"

खैर अब तक जो कुछ मैं कर सकता था मैंने कर दिया पर अब मैं देखता हूॅ कि वह मेरे लिये बदले में क्या करते हैं।"

अगली सुबह हिरन की पुकार ने बुढ़िया को जल्दी ही जगा दिया — "मॉ मॉ।"

जब बुढ़िया उठ कर उसके पास गयी तो उसने देखा कि कीजी पा बहुत बीमार था। उसको बुखार था, उसकी टॉगें और पेट दोनों दर्द कर रहे थे। उसने मॉ को सुलतान से जा कर यह कहने को कहा कि उसकी तबियत ठीक नहीं थी।

सो वह ऊपर गयी जहॉ सुलतान और उसकी पत्नी हिन्दुस्तान के बनी सिल्क की चादर ओढ़े संगमरमर के काउच पर बैठे थे।
सुलतान ने पूछा — "ओ बुढ़िया क्या बात है?"

बुढ़िया बोली — "मालिक, कीजी पा की तबियत ठीक नहीं है।"

सुलतान की पत्नी तो यह सुन कर घबरा गयी। वह तुरन्त बोली — "क्या हुआ उसको?"

बुढ़िया बोली — "उसका सारा बदन दर्द कर रहा है और वह तो पूरे का पूरा ही बीमार लग रहा है।"

सुलतान बोला — "तो मैं क्या कर सकता हूँ। लाल बाजरा ले लो जो हम लोग जानवरों को खिलाते हैं और उसका दलिया बना कर उसको खिला दो।"

सुलतान की पत्नी आश्चर्य से बोली — "अरे क्या आप उसको वह खिलाना चाहते हैं जो एक घोड़ा बहुत भूखा होने पर भी नहीं खायेगा। यह आपके लिये ठीक नहीं है।"

सुलतान बोला — "जाओ, तुम्हारा तो दिमाग खराब हो गया है। चावल तो हम लोग खाते हैं। क्या दस सैन्ट का लाल बाजरा उसके लिये काफी नहीं होगा?"

पत्नी बोली — "पर वह कोई मामूली हिरन नहीं है। वह तो आपको अपनी ऑख के तारे जितना प्यारा होना चाहिये। जैसे अगर ऑख में रेत का एक कण भी पड़ जाये तो तकलीफ देता है उसी तरह से उसको तकलीफ में देख कर आपको भी तकलीफ होनी चाहिये।"

सुलतान अपनी पत्नी से बोला — "तुम बोलती बहुत हो।"

फिर वह उस बुढ़िया से बोला — "जाओ और वैसा ही करो जैसा कि मैंने तुमको करने को कहा है।" सो बुढ़िया नीचे चली गयी और हिरन को देख कर रोने लगी।

हालॉकि बुढ़िया कीजी पा को सुलतान की बात बताना नहीं चाहती थी पर कीजी पा ने भी उसको वह कहने पर मजबूर कर दिया जो सुलतान ने उससे कहा था।

उसको अपने कानों पर विश्वास नहीं हुआ सो उसने दोबारा दादी माँ से पूछा — "माँ, क्या उन्होंने ऐसा कहा कि मुझे लाल बाजरे का दलिया बना कर दे दिया जाये?"

बुढ़िया बोली — "अगर उन्होंने ऐसा नहीं कहा होता तो क्या मैं तुमसे ऐसा कहती पोते?"

कीजी पा फिर बोला — "मुझे लगता है कि बड़े लोग ठीक ही कहते थे। पर ठीक है हम उनको दूसरा मौका देंगे। आप दोबारा उनके पास जायें और उनसे कहें कि मैं इतना ज़्यादा बीमार हूँ कि लाल बाजरे का दलिया भी नहीं खा सकता।"

सो वह बुढ़िया फिर ऊपर गयी। इस बार उसने देखा कि दोनों पति पत्नी खिड़की के पास बैठे काफी पी रहे थे। सुलतान ने बुढ़िया को फिर से वहाँ देख कर पूछा — "अब क्या बात है बुढ़िया?"

बुढ़िया बोली — "मालिक मुझे कीजी पा ने फिर भेजा है। लगता है कि वह वाकई बहुत बीमार है क्योंकि जैसा दलिया आपने मुझ से बनाने के लिये कहा था मैं ने वैसा ही दलिया उसको बना कर दिया पर उससे वह भी नहीं खाया गया।"

सुलतान नाराज हो कर बोला — "अपनी जीभ को काबू में रखो, टाँगें जमा कर रखो, आँखें बन्द कर के रखो और कानों में रुई लगा लो। अबकी बार अगर वह हिरन तुमसे ऊपर आने को कहे तो उसको बोल देना कि तुम्हारी टाँगें अकड़ गयीं हैं।

और अगर वह तुमसे कुछ सुनने के लिये कहे तो कह देना कि तुम बहरी हो गयी हो। और अगर वह तुमसे कुछ देखने के लिये कहे तो कहना कि तुमको कुछ दिखायी नहीं देता।

अगर वह तुमसे कोई बात करना चाहे तो उससे बात नहीं करना, कहना कि तुम्हारी जीभ को लकवा मार गया है।"

बुढ़िया ने जब यह सुना तो वह तो वहीं की वहीं सुलतान को देखती खड़ी की खड़ी रह गयी, हिल भी न सकी। सुलतान की पत्नी का चेहरा भी उदास हो गया और उसकी ऑखों से ऑसू बहने लगे।

सुलतान यह देख कर बोला — "ओ सुलतान की बेटी, तुमको क्या हुआ? तुम क्यों रो रही हो?"

पत्नी बोली — "जो आदमी दूसरों का उपकार नहीं मानता वह पागल होता है।"

सुलतान ने पूछा — "तुम ऐसा कैसे सोचती हो?"

पत्नी बोली — "जिस तरीके से आप कीजी पा के साथ बर्ताव कर रहे हैं मैं उससे बहुत दुखी हूॅ। जब भी मैं उस हिरन के बारे में कुछ अच्छा बोलती हूॅ वह आपको सुनने में अच्छा नहीं लगता। मुझे आपके ऊपर दया आती है कि आपकी समझ को क्या हो गया है।"

सुलतान बोला — "तुम मुझसे इस तरह से बात क्यों करती हो?"

पत्नी बोली — "क्यों, सलाह मिलनी तो बहुत ही अच्छी बात है अगर उसको ठीक से लिया जाये तो। पति को पत्नी से सलाह लेनी चाहिये और पत्नी को पति से। यही दोनों के लिये अच्छा है।"

सुलतान ने जल्दी से कहा — "इस सबसे साफ जाहिर है कि तुम्हारी समझ बिल्कुल ही खत्म हो गयी है। तुमको तो बॉध देना चाहिये।"

फिर उसने बुढ़िया से कहा — "तुम इसकी बातों को मत सुनना और जहॉ तक इस हिरन का सवाल है उसको कहना कि वह मुझे परेशान करना बन्द करे।

इससे तो ऐसा लगता है जैसे सुलतान मैं नहीं वह है। मैं खा नहीं सकता, मैं पी नहीं सकता, मैं सो नहीं सकता। उसकी इन बातों ने तो मुझे परेशान कर रखा है।

पहले तो वह बीमार है और फिर वह वह खा नहीं सकता जो उसे खाने को दिया जाता है। अगर वह यह सब नहीं कर सकता तो बन्द कर दो उसको। अगर वह कुछ खाना पसन्द करता है तो उसको खाने दो और अगर वह कुछ नहीं खाना चाहता तो मरे।

मेरी मॉ मर गयी मेरे पिता मर गये और मैं अभी भी ज़िन्दा हूॅ और खा रहा हूॅ। क्या मैं उस हिरन के लिये मर जाऊॅ जिसको मैंने

दस सैन्ट में खरीदा था और जो मुझसे यह कह रहा है कि मुझे यह चाहिये और वह चाहिये।

जाओ और जा कर उससे कह दो कि उसको अपने बड़ों से ठीक से बर्ताव करना सीखना चाहिये।"

यह सब सुन कर बुढ़िया बेचारी नीचे चली गयी। नीचे जा कर उसने देखा कि हिरन के मुँह से तो बुरी तरह से खून निकल रहा है। वह उसको इस हालत में देख कर केवल इतना ही कह सकी — "मेरे बच्चे, तुमने सुलतान के लिये जो कुछ भी अच्छा किया लगता है कि वह सब बेकार गया पर धीरज रखो।"

और जब उस बुढ़िया ने उसको यह बताया कि ऊपर क्या हुआ था तो उसको तो सुन कर हिरन बहुत रोया और बोला — "माँ, मैं मर रहा हूँ केवल इसलिये नहीं कि मैं बीमार हूँ बल्कि आदमी की बेवफाई पर शर्म और गुस्से की वजह से भी मुझे मौत आ रही है।"

कुछ देर बाद कीजी पा ने बुढ़िया को फिर ऊपर भेजा और उससे कहा कि वह सुलतान से जा कर कह दे कि ऐसा लगता है कि कीजी पा मरने वाला है।

अबकी बार जब बुढ़िया ऊपर गयी तो सुलतान गन्ना खा रहा था। उसने ऊपर जा कर कहा — "मालिक, हिरन की हालत तो खराब होती जा रही है। उसकी हालत तो बजाय अच्छे होने के और ज़्यादा खराब हो गयी है। लगता है कि वह तो मर ही जायेगा।"

सुलतान ने अबकी बार उसको डॉट कर कहा — "मैंने तुमसे कितनी बार कहा कि मुझे तंग मत करो।"

यह सुन कर उसकी पत्नी बोली — "एक बार नीचे जा कर आप उस बेचारे हिरन को देख तो आइये न। अगर आप नहीं जाना चाहते तो मुझे जाने दीजिये मैं देख आती हूँ। उस बेचारे हिरन ने आपसे कभी कोई अच्छी चीज़ नहीं पायी।"

सुलतान ने उस बुढ़िया से कहा — "जाओ और जा कर उस हिरन से कह दो कि वह अगर ग्यारह बार मरना चाहता है तो मरे।"

इस बार उसकी पत्नी बोली — "उस हिरन ने आपका क्या बिगाड़ा है? क्या उसने आपका कुछ नुकसान किया है जो आप उसके लिये ऐसे शब्द इस्तेमाल कर रहे हैं?

ऐसे शब्द तो लोग केवल अपने दुश्मनों के लिये ही इस्तेमाल करते हैं। और इतना मैं यकीन के साथ कह सकती हूँ कि यह हिरन आपका दुश्मन नहीं है।

सारे लोग जो उसको जानते हैं चाहे वे अमीर हों या गरीब सभी उसको बहुत प्यार करते हैं। और अगर आप उसके साथ ऐसा बर्ताव करेंगे तो वे सब आप ही को बुरा कहेंगे। सो ओ सुलतान, मेहरबानी कर के उसके साथ कुछ तो दया का बर्ताव कीजिये।"

परन्तु सुलतान दाराई ने अपनी पत्नी की बात बिल्कुल नहीं सुनी। वह बुढ़िया बेचारी एक बार फिर वापस नीचे चली गयी और उसने हिरन को और भी बुरी हालत में पाया।

इस बीच सुलतान की पत्नी ने अपने एक नौकर को हिरन के लिये थोड़ा चावल पकाने के लिये दे दिया। एक मुलायम शाल उसके ओढ़ने के लिये और एक मुलायम तकिया उसके लेटने के लिये भी भिजवा दिया।

साथ में उसने उसको यह भी कहलवा दिया कि अगर वह चाहेगा तो वह अपने पिता का सबसे अच्छा डाक्टर उसके इलाज के लिये बुलवा देगी।

पर यह सब बहुत देर से पहुॅचा। जब तक यह सब पहुॅचा तब तक तो कीजी पा मर गया था। जैसे ही लोगों ने यह सुना कि कीजी पा मर गया वे इधर उधर भागने लगे और रोने लगे।

पर सुलतान दाराई पर इसका कोई असर नहीं हुआ। वह बोला — "तुम लोगों ने यह सब इतना हंगामा क्यों किया हुआ है? और वह भी इस छोटे से हिरन पर जिसको मैंने दस सैन्ट में खरीदा था। तुम्हारे हंगामे से तो ऐसा लगता है जैसे हिरन नहीं बल्कि मैं मर गया हूॅ।"

पर उसकी पत्नी बोली — "यही वह हिरन था जो आपके लिये मेरे पिता से मेरा हाथ मॉगने गया था। यही वह हिरन था जो मुझे

मेरे पिता के घर से यहाँ तक ले कर आया था। यही वह हिरन था जिसको मेरे पिता ने मुझको दिया था।

उसने आपको हर अच्छी से अच्छी चीज़ दी। आपके पास अपनी तो कोई चीज़ है ही नहीं, सब उसी की दी हुई हैं। आपकी सहायता करने के लिये वह जो भी कर सकता था उसने किया और आपने बदले में उसे क्या दिया? अपना यह बेरहम बर्ताव।

पर अब क्या। अब तो वह मर गया है और आपने अपने आदमियों को उसके शरीर को कुँए में फेंकने के लिये बोल दिया है। अब तो हम केवल उसके लिये रो ही सकते हैं।" सुलतान के हुक्म से हिरन को एक कुँए में फेंक दिया गया।

सुलतान की पत्नी ने तब अपने पिता को एक चिट्ठी लिखी कि वह उस चिट्ठी को मिलते ही उसके पास चले आयें और अपने खास आदमियों के हाथ उस चिट्ठी को अपने पिता के पास भेज दिया। चिट्ठी मिलते ही सुलतान अपनी बेटी से मिलने के लिये आ गया।

वहाँ आ कर उसे पता चला कि हिरन मर गया है और उसके शरीर को कुँए में फेंक दिया गया है तो वह और उसके साथ आये सब लोग बहुत रोये।

फिर वे सब उस कुँए में गये और कीजी पा के शरीर को कुँए में से निकाल कर लाये। उसको वहाँ से ले जा कर उन्होंने उसके शरीर को दूसरी जगह ठीक से दफन कर दिया।

उसी रात को सुलतान की पत्नी को सपना आया कि वह अपने पिता के घर में है और जब सुबह हुई तो उसने देखा कि वह तो वाकई अपने पिता के घर में अपने ही बिस्तर पर सोयी हुई थी।

उधर उसके पति ने भी सपना देखा कि वह कूड़े के ढेर में से कुछ ढूँढ रहा है। और जब वह सुबह उठा तो उसके दोनों हाथ धूल से भरे हुए थे और वह कूड़े के ढेर में से बाजरे के दाने ढूँढ रहा था।

पागलों की तरह से इधर उधर देखते हुए वह चिल्लाया — "अरे मेरे साथ यह चाल किसने खेली? मैं यहॉ वापस कैसे आ गया?"

उसी समय कुछ बच्चे उधर से गुजर रहे थे। उसको देख कर वे हॅस पड़े, आवाजें निकालने लगे और बोले — "अरे हामदानी तुम अब तक कहॉ थे और कहॉ से आ गये? हमको तो लगा कि तुम बहुत पहले मर गये।"

इस तरह सुलतान की बेटी अपने घर में खुशी से रहने लगी और वह भिखारी फिर से कूड़े के ढेर से बाजरे के दाने चुनने लगा और तब तक चुनता रहा जब तक वह मरा।

7 सुलतान सूले[37]

बूट पहने हुए बिल्ला जैसी कहानियों में से यह लोक कथा पश्चिमी अफ्रीका के नाइजीरिया देश के उत्तरी भाग में कही सुनी जाती है।

यह लोक कथा इससे पहले की लोक कथा "हामदानी" जैसी ही है पर इस लोक कथा में अपने मालिक की एक अमीर घराने में शादी करवाने का काम एक खरगोश करता है।

बहुत पुरानी बात है किसी जंगल के किनारे एक बहुत ही गरीब आदमी रहता था जिसका नाम हमज़ा[38] था। उसके माता पिता भाई बहिन कोई नहीं था पर वह दयालु बहुत था।

एक दिन उसने जंगल में एक खरगोश के बच्चे को दर्द से कराहते सुना। पास जा कर उसने देखा तो खरगोश के एक छोटे से बच्चे की एक टॉग बुरी तरह से घायल थी।

हमज़ा उसे घर ले आया और कई दिन तक उसकी टॉग की मरहम पट्टी कर के उसे ठीक कर लिया। फिर वह उसे जंगल ले गया ताकि वह अपने साथियों से मिल सके पर उस बच्चे ने जाने से इनकार कर दिया। वह हमज़ा के साथ ही रहा और उसका पालतू खरगोश बन गया।

---

[37] Sultan Sule – a Hausa folktale from Northern Nigeria, Africa

[38] Hamza – Hausa Tribe people normally follow Muslim religion, so this name is a Nigerian Muslim name.

रोज ही हमज़ा और खरगोश खाने की तलाश में बाहर निकलते थे। किसी दिन उनकी अच्छी किस्मत से उन्हें कोई जानवर पकड़ में आ जाता तो वे जंगली फल, फूलों, और जड़ों के साथ उसे खा लेते पर कभी कभी जब उनको कोई जानवर नहीं मिलता तो उनको खाली फल फूलों पर ही गुजारा करना पड़ता, और कभी कभी तो उनको भूखे पेट भी रहना पड़ जाना पड़ता।

एक दिन वे दोनों पेड़ के नीचे बैठे हुए थे कि हमज़ा बोला — "खरगोश भाई, तुम अपने साथियों से जा कर क्यों नहीं मिलते। मैदानों में तो काफी खाना मिलता है। मैं तो तुम्हें कुछ भी नहीं दे पाता क्यों तुम मेरे साथ अपना समय बर्बाद कर रहे हो?"

खरगोश बोला — "मालिक, आप क्यों परेशान होते हैं। हम लोग भूखे रहते हैं इसमें आपकी क्या गलती? मैं जंगली खरगोशों के साथ घूमने की बजाय आपके साथ भूखे रहना ज़्यादा पसन्द करूँगा।"

यह सुन कर हमज़ा को आश्चर्य भी हुआ और उस जानवर पर दया भी आयी सो खरगोश उसके साथ ही रहा।

पर यह क्या? यह क्या उसका अपना खरगोश बोला था? हमज़ा ने खरगोश से कहा — "खरगोश भाई, भूख में आदमी कितना पागल सा हो जाता है कि उसे जानवर भी बोलते सुनायी पड़ते हैं।"

खरगोश ने कहा — "मालिक, आप पागल नहीं हुए हैं, आप बिल्कुल ठीक हैं। मैं ही बोला था।"

हमज़ा को बड़ा आश्चर्य हुआ कि इतने दिनों में वह यह भी नहीं जान पाया कि उसका पालतू खरगोश करामाती था और वह बोलता भी था।

खरगोश बोलता ही गया — "अभी तक आप मेरे लिये सब कुछ करते रहे अब मेरी बारी है। कल मैं खुद आपके लिये खाने की तलाश में जाऊँगा।

इससे आप अपने खाने का गुजारा कर पायेंगे और यह भी हो सकता है कि मैं अपनी जरूरत से ज़्यादा खाना पा जाऊँ तब मैं वह खाना आपको दे दूँगा।" हमज़ा अपनी इस निराशा की हालत में खरगोश से कुछ भी न कह सका।

अगले दिन सूरज निकलते ही खरगोश अपने सफर पर निकल पड़ा। "मैं शाम को आपसे यहीं मिलूँगा।" कह कर खरगोश दौड़ गया।

काफी दूर चलने के बाद वह एक नदी के किनारे एक घास के मैदान में आ गया। वहाँ उसने खूब पेट भर खाना खाया और फिर थक कर एक पेड़ के नीचे बैठ गया।

बैठे बैठे वह यह सोचता रहा कि वह अपने मालिक की सहायता कैसे करे और यह सोचते सोचते वह अनजाने में अपने अगले पंजों से अपने सामने की जमीन खुरचता रहा।

यकायक उसका एक पंजा किसी सख्त चीज से टकराया। उसने देखा तो कोई चमकीली चीज बाहर झाँक रही थी।

उसने उसको बाहर निकाल लिया — "हीरा? अरे, यह तो आदमी के काम की चीज़ है। पर अगर मैंने इसे हमज़ा को दे दिया तो वह इसे बाजार में बेचने की कोशिश करेगा और गरीब होने की वजह से वह चोरी के इलजाम में पकड़ा जायेगा। सो इसका कोई और रास्ता खोजना होगा।"

कुछ देर तक तो वह चुपचाप सोचता रहा कि वह इसका क्या करे पर फिर वह यकायक उठा और नदी के पार आ कर बड़े शहर की तरफ चल दिया।

वह शहर के बीच में से आदमी की आवाज में चिल्लाता जा रहा था — "मुझे रास्ता दो, मुझे रास्ता दो। मैं यहाँ के अमीर से मिलना चाहता हूँ।"

सभी लोग आश्चर्य से उसको देखने लगे क्योंकि उन्होंने बोलता हुआ खरगोश पहले कभी नहीं देखा था। जल्दी ही खरगोश को अमीर का घर मिल गया और वह उसमें घुस गया।

चौकीदारों ने उसे रोकने की कोशिश भी की तो वह बोला — "अमीर को मुझे अपने मालिक का सन्देश देना है मेरा रास्ता छोड़ो।"

खरगोश के मुँह से आदमी जैसी आवाज सुन कर चौकीदार भी आश्चर्यचकित रह गये और उन्होंने उसको अन्दर जाने दिया। अमीर अपने आँगन में बैठा हुआ था। उसने दरवाजे पर शोर सुना तो खरगोश को अन्दर बुलाया और पूछा — "तुम्हारे मालिक कौन हैं? उनका क्या नाम है?"

खरगोश ने सिर झुकाया और बोला — "मेरे मालिक का नाम सुलतान सूले है। आपने यह नाम तो जरूर ही सुना होगा। मैं उनकी तरफ से आपके लिये कुछ भेंट लाया हूँ।" कह कर उसने सावधानी से वह हीरा निकाला और अमीर के पैरों में रख दिया।

उस अमीर ने सुलतान सूले का नाम कभी नहीं सुना था परन्तु वह यह बात कह नहीं सका क्योंकि वह तो यही सोच रहा था जो आदमी इस करामाती खरगोश का मालिक होगा वह कितना अमीर होगा।

फिर उसने हीरा उठा कर देखा तो वह बोला — "यह तो बड़ा कीमती हीरा है। तुम्हारे मालिक ने मुझे इतनी कीमती भेंट क्यों भेजी है?"

खरगोश ने एक बार फिर झुक कर कहा — "उन्होंने सुना है कि आपकी बेटी शादी के लायक है इसलिये उससे शादी की इच्छा रखते हुए उन्होंने आपको यह पहली भेंट भेजी है। अगर आप अपनी बेटी की शादी उनसे करने को तैयार हों तो वह आपको और अधिक कीमती भेंटें भी देंगे।"

अमीर ने पूछा — "क्या तुम्हारे मालिक कहीं दूर रहते हैं?"

"यहाँ से तीन दिन के सफर के बाद उनका महल है। अगर आप शादी के लिये तैयार हों तो मैं सात दिन के अन्दर अन्दर उनको ले कर यहाँ हाजिर हो जाऊँगा।"

अमीर उस हीरे को उलट पलट कर देखता रहा। उसने इतना कीमती हीरा पहले कभी नहीं देखा था। उस हीरे को देख कर वह मोहित सा हो गया और सुलतान सूले का लोहा मानने को तैयार हो गया।

उसने खरगोश से कहा — "जाओ और जा कर अपने मालिक से कहना कि वह हाजिर हों हम सात दिन बाद शादी की दावत के लिये तैयार रहेंगे।" यह सुनते ही खरगोश खुशी से उछलता कूदता वहाँ से भाग गया।

पेड़ के नीचे हमज़ा अभी भी उसका इन्तजार कर रहा था। हमज़ा ने पूछा — "क्या तुम्हें खाना मिला?"

खरगोश बोला — "आज तो मुझे खाने से भी ज़्यादा अच्छी चीज़ मिली है मालिक। अगर आप जैसा मैं कहूँ वैसा ही करें तो मैं आपकी शादी सात दिन के अन्दर अन्दर एक बहुत ही सुन्दर लड़की से करा सकता हूँ।"

यह सुन कर हमज़ा बड़े ज़ोर से हँसा और सोचने लगा कि यह जानवर जरूर ही कुछ पागल हो गया है।

लेकिन खरगोश ने अपनी बात जारी रखी — "छह दिन तक हम लोगों को यहीं छिपे रहना चाहिये। सातवें दिन मैं आपको उस अमीर के घर ले जाऊँगा जिसकी बेटी से मैं आपकी शादी तय कर के आया हूँ। मगर जैसा मैं कहूँ आपको वैसा ही करना होगा चाहे आपको मेरी बातें बवकूफों जैसी ही क्यों न लगें।"

कुछ सोच कर हमज़ा राजी हो गया।

छह दिन तक वे दोनों जंगली फल मूल खा कर वहीं रहे। सातवें दिन खरगोश और हमज़ा सुबह ही उठ गये।

खरगोश हमज़ा से बोला — "मालिक, आज मैं आपसे जो कुछ भी करने को कहूँ चाहे वह आपको कितना ही बेकार और नापसन्द क्यों न लगे पर आप वही काम करियेगा। आखीर में आप देखेंगें कि जो कुछ भी मैंने किया है वह आपकी भलाई के लिये ही किया है।"

हमज़ा ने कहा — "ठीक है, मैं वही करूँगा जो तुम कहोगे।"

"तब चलें।" और दोनों जंगल की तरफ चल दिये।

नदी के किनारे पहुँच कर खरगोश ने हमज़ा से कहा — "मालिक, आप अभी यहीं रुकें। मैं नदी के पार शहर में हो कर थोड़ी देर में आता हूँ लेकिन जाने से पहले मैं आपकी खूब पिटायी कर जाता हूँ जिससे आप घायल से दिखायी दे सकें।

मुझे मालूम है कि मुझे यह काम आप जैसे नेक और भले आदमी के साथ नहीं करना चाहिये मगर मैं आपको विश्वास दिलाता हूँ कि आखीर में सब कुछ ठीक हो जायेगा और आप खुश रहेंगे।"

हमज़ा इस पिटायी से बचना चाहता था परन्तु यह सोच कर चुप रह गया कि आखीर में तो उस अमीर की लड़की से उसकी शादी हो ही जायेगी।

खरगोश ने पास से एक पतली लम्बी डंडी तोड़ी और उससे हमज़ा को खूब मारा। जल्दी ही गरीब हमज़ा की पीठ खूब घायल हो गयी।

"अब मालिक आप पत्थरों में छिप कर लेट जाइये और इस बात का ख्याल रखिये कि जब तक मैं न लौटूँ कोई और आपको देख न पाये।"

हमज़ा ने वैसा ही किया और खरगोश एक ही छलाँग में नदी पार कर अमीर के महल में पहुँच गया।

वहाँ जा कर वह क्या देखता है कि सभी लोग दावत की तैयारियों में लगे हुए थे, खास कर स्त्रियाँ और नौकर। छत्तीस प्रकार के खाने तैयार किये जा रहे थे। महल सजाया जा रहा था।

खरगोश वहाँ पहुँचते ही बोला — "अमीर कहाँ है? अमीर कहाँ है? हम लोगों के साथ एक भयानक घटना घट गयी है। मैं वह घटना उनको बताना चाहता हूँ।"

अमीर ने उसको बुलाया और पूछा — "क्या बात है? तुम्हारे मालिक कहाँ हैं? तुमने कहा था कि तुम उनको अपने साथ लाओगे पर वह तो कहीं दिखायी नहीं दे रहे?"

खरगोश हाँफता सा बोला — "सरकार, मैं और मेरे मालिक हम दोनों अकेले जंगल से आ रहे थे कि कुछ डाकुओं ने हम पर हमला कर दिया।

उन्होंने उनका घोड़ा छीन लिया और सब कीमती भेंटें छीन लीं जो हम यहाँ शादी के लिये ले कर आ रहे थे। यहाँ तक कि उन्होंने उनके बदन के कपड़े भी छीन लिये।

अब वह नंगे जंगल में पड़े हैं और इस हालत में यहाँ आ भी नहीं सकते। डाकुओं को यह नहीं मालूम था कि मैं जादू का खरगोश हूँ इसलिये उन्होंने मुझे कोई नुकसान नहीं पहुँचाया। मैं तुरन्त ही यहाँ आपको यह बताने चला आया ताकि आप उन्हें यहाँ जल्दी से जल्दी ला सकें।"

अमीर यह सुन कर बहुत दुखी हुआ। उसने अपने नौकरों से कुछ कपड़े मँगवाये तो वे घर में से सबसे अच्छे कपड़े छाँट कर ले आये।

फिर अमीर ने अपने आदमियों को हुकुम दिया कि सुलतान सूले बहुत कष्ट में हैं। ये कपड़े और एक अच्छा घोड़ा ले जाओ और उन्हें इज़्ज़त के साथ तुरन्त ही यहाँ ले आओ।

खरगोश सिर झुका कर बोला — "अमीर साहब, घोड़े और कपड़ों के साथ पहले आप मुझे जाने दें। मेरे मालिक इनके सामने अपनी उस हालत में शर्मिन्दगी महसूस करेंगे इसलिये आप कुछ देर इन्तजार करें। वह अभी आपके सामने आपके होने वाले दामाद की हैसियत से हाजिर हो जायेंगे।"

"अच्छी बात है लेकिन तुम घोड़ा और कपड़े दोनों एक साथ ले कर कैसे जाओगे?"

"आप अपने नौकरों से मेरी पीठ पर कपड़े बँधवा दें और घोड़े की लगाम मेरे मुँह में दे दें। इस तरह मैं दोनों चीज़ें अपने मालिक के पास ले जाऊँगा।"

नौकरों ने तुरन्त ही कपड़े उसकी पीठ से बाँध दिये और घोड़े की लगाम उसके मुँह में दे दी और खरगोश उछलता कूदता अपने मालिक के पास आ पहुँचा।

आ कर वह बोला — "यह लीजिये कपड़े और घोड़ा, अब आप नदी में नहा धो कर के ये कपड़े पहन लीजिये और बस हम लोग फिर इस घोड़े पर चलेंगे उस अमीर के पास।"

हमज़ा ने इतने बढ़िया कपड़े पहले कभी नहीं देखे थे। उसने तुरन्त ही नदी में नहा कर वे कपड़े पहन लिये।

उसको सजा बजा देख कर खरगोश बहुत खुश हुआ और बोला — "मालिक, इन कपड़ों में तो आप बिल्कुल सुलतान लग रहे हैं। मुझे बहुत दुख है कि मुझे आपको मारना पड़ा परन्तु नौकरों के

लिये यह काम बहुत जरूरी था क्योंकि अमीर के घर में वे ही आपको तैयार करेंगे।"

फिर खरगोश ने उसको वहाँ का सब हाल बताया कि किस तरह उसने अमीर को बहकाया और यह भी कहा कि आपका नाम सुलतान सूले है हमज़ा नहीं है और तीन दिन की यात्रा के बाद आपका राज्य है। सो इन दोनों बातों को भूलियेगा नहीं।

हमज़ा बहुत ज़ोर से हँसा और बोला कि वह नहीं भूलेगा और कूद कर घोड़े पर सवार हो गया।

जब वे अमीर के शहर में पहुँचे तो सभी अपने अपने घरों से निकल कर उन्हें देखने और सलाम करने लगे। महल में भी सबने सिर झुका कर उसको सलाम किया और सुलतान सूले महल के अन्दर दाखिल हुए।

अन्दर के बड़े दरवाजे पर अमीर ने सुलतान सूले का स्वागत किया। अमीर हमज़ा को देख कर बहुत खुश हुआ। उसे अपनी बेटी के लिये ऐसा ही दुलहा चाहिये था।

अमीर ने हमज़ा को बड़ी इज़्ज़त के साथ घोड़े से नीचे उतारा और अपनी बेटी को बुला कर उससे उसे मिलवाया। हमज़ा ने भी इतनी सुन्दर लड़की पहले कभी नहीं देखी थी।

यह सब देख कर हमज़ा भी बहुत खुश हुआ और खरगोश को थपथपाता हुआ फुसफुसाया — "धन्यवाद खरगोश भाई, तुमने सच में मेरी बड़ी सेवा की है। मुझे खुशी है कि मैंने तुम्हारा कहा माना।"

हमज़ा और अमीर की बेटी की शादी हो गयी। शादी की दावत पॉच दिन तक चली। शादी भर हमज़ा बहुत ही परेशान रहा कि शादी के बाद वह क्या करेगा। उसके पास तो रहने के लिये घर भी नहीं था जहॉ वह अपनी दुलहिन को रख सकता।

पर खरगोश उसे कहीं दिखायी नहीं दे रहा था। फिर भी उसको खरगोश की करामातों पर पूरा भरोसा था इसलिये उसने उसकी ज़्यादा चिन्ता नहीं की।

जब खरगोश ने देखा कि उसके मालिक की शादी उस अमीर की लड़की से ठीक से हो गयी तो वह वहॉ से लौट पड़ा। नदी पार कर जंगल पार कर वह मैदानों में आ गया।

दो दिन और दो रात वह बराबर चलता रहा। अब वह एक ऊॅचे पहाड़ की तलहटी में पहुॅच गया था। वहॉ एक छोटा सा गॉव बसा हुआ था जिसमें एक राजा का महल था और पास में छोटे छोटे घर थे।

वहॉ उसने देखा कि सारा गॉव बहुत शान्त पड़ा था कहीं कोई आवाज सुनायी नहीं पड़ रही थी। खरगोश की समझ में नहीं आ रहा था कि वहॉ ऐसा क्यों है।

खरगोश उस महल के दरवाजे पर जा कर बोला — "अन्दर कोई है?"

एक बुढ़िया ने दरवाजा खोला और पूछा — "तुम कौन हो और इतना शोर क्यों मचा रहे हो? क्या तुम हम लोगों की तरह से डरे हुए नहीं हो?"

अब खरगोश की समझ में आया कि उस गॉव में इतनी शान्ति क्यों थी फिर भी वह बोला — "नहीं तो। मैं तो केवल यह जानना चाहता हूँ कि यह मकान किसका है क्योंकि यहॉ मुझे कोई दिखायी ही नहीं दे रहा।"

बुढ़िया बोली — "लगता है तुम कोई अजनबी हो। यह मकान और ये सारे मकान एक सात सिर वाले नाग के हैं। वह अभी खाने की तलाश में बाहर गया हुआ है। अच्छा हो कि तुम उसके आने से पहले पहले ही यहॉ से भाग जाओ।"

खरगोश बोला — "नहीं, मैं यहॉ से भागने के लिये नहीं आया। मैं अन्दर आ जाता हूँ और उस नाग का इन्तजार करता हूँ।"

और बुढ़िया के कुछ कहने से पहले ही वह खरगोश महल के अन्दर घुस गया और दरवाजा बन्द कर लिया। खरगोश ने देखा कि नाग का घर तो कीमती हीरे जवाहरातों से भरा पड़ा था।

उसमें कई कालीन थे जो सोने के खास तारों से बुने गये थे। चॉदी और सोने के अनगिनत बर्तन थे। बहुत सारे नौकर चाकर अपना काम करते इधर उधर घूम रहे थे पर वे सब डरे हुए थे।

खरगोश ने बुढ़िया से कहा — "अब आप जाइये। जब नाग आयेगा तो मैं उसे देख लूँगा।"

जल्दी ही उसे लगा कि बाहर कुछ ऑधी सी चल रही है और कुछ आवाजें आ रही हैं।

तभी एक आवाज आयी — "बुढ़िया, बुढ़िया, दरवाजा खोलो, मैं तुम्हारा मालिक सात सिर वाला नाग।"

दीवार पर से एक तलवार उठाते हुए खरगोश ने थोड़ा सा दरवाजा खोला। उसमें से नाग का केवल एक सिर ही अन्दर आ सका।

जैसे ही उस नाग ने सिर अन्दर किया वैसे ही खरगोश ने उस नाग का सिर काट दिया। इस तरह खरगोश ने एक एक कर के उसके सातों सिर काट दिये।

नाग के मरते ही बुढ़िया और नौकर चाकर सब सुखी हो गये। सब बोले — "आपने हमें इस भयानक नाग के चंगुल से छुड़ाया है इसलिये अब आप ही हमारे राजा हैं। आज से हम आप ही का हुक्म मानेंगे।"

खरगोश ने कहा — "नहीं, मैं तुम्हारा राजा नहीं हूँ पर सुलतान सूले अपनी रानी के साथ यहाँ आ रहे हैं वही तुम्हारे राजा होंगे और ये सारे मकान तथा खजाना भी उन्हीं का होगा।"

कह कर खरगोश ने थोड़े से हीरे जवाहरात अपनी पीठ पर बँधवाये और वहाँ से अपने मालिक के पास चल दिया।

पाँचवें दिन की शाम थी और शादी की दावत अब खत्म होने जा रही थी पर खरगोश का कहीं पता नहीं था। इसलिये हमज़ा बहुत परेशान था कि वह अगले दिन अपनी पत्नी को ले कर कहाँ जायेगा। कई बार उसकी पत्नी ने उससे पूछा भी कि वह कहाँ रहता है पर वह तो कुछ भी बता ही नहीं पा रहा था।

छठे दिन वह अपने ससुर व पत्नी के साथ बैठा था कि खरगोश उछलता कूदता आया और बोला — "मालिक, आपका महल सज गया है और सभी लोग बहू का इन्तजार कर रहे हैं। और जैसा कि आपने मुझसे कहा था मैं अमीर और उसकी बेटी के लिये कुछ भेंट भी ले आया हूँ।"

यह सुन कर हमज़ा ने खरगोश की पीठ पर लदी हीरों की पोटली खोली और अपने ससुर को दे दी और बोला — "यह बचा हुआ दहेज है। क्या मैं अब अपनी पत्नी के साथ अपने राज्य जा सकता हूँ क्योंकि मुझे अपने राज्य से निकले काफी दिन हो गये हैं? वहाँ सभी मेरा और मेरी पत्नी का स्वागत करने के लिये बेचैन हैं।"

अमीर बोला — "जाओ बेटा, अल्लाह तुम्हारी हिफाजत करे। मैं तुम जैसे दामाद[39] को पा कर धन्य हो गया।"

अगले दिन हमज़ा और उसकी पत्नी दोनों काले घोड़ों पर सवार हो कर नाग के घर चल दिये। खरगोश आगे आगे जा रहा था। दो दिन और दो रात के बाद जब वे घर पहुँचे तो सभी नौकर चाकर उनके स्वागत में खड़े थे।

हमज़ा और उसकी पत्नी वहाँ बरसों तक आनन्द से रहे। उनके छह बहादुर बेटे और चार सुन्दर बेटियाँ हुईं। उसके बाद खरगोश अपने साथियों के पास वापस चला गया।

इस कहानी से हमें यह शिक्षा मिलती है कि हमको हमेशा दूसरों पर दया करनी चाहिये और दूसरों की सहायता करनी चाहिये। इसका फल सदा मीठा होता है।

[39] Translated for the word "Son-in-Law" – husband of the daughter

8 जियोवानूज़ा लोमड़ी[40]

बूट पहने हुए बिल्ला जैसी कहानियों में से यह लोक कथा यूरोप महाद्वीप के इटली देश में कही सुनी जाती है। इस लोक कथा में एक लोमड़ी एक गरीब लड़के की उसको अमीर बनाने में सहायता करती है।

एक बार की बात है कि एक बहुत ही गरीब आदमी था जिसके एक ही बेटा था। उसका यह बेटा बहुत सीधा था और दुनियॉ की बहुत सारी बातों से अनजान था। उसके इस बेटे का नाम था जोसेफ[41]।

जब उसका पिता मरने लगा तो उसने अपने बेटे जोसेफ से कहा — "बेटा, अब मैं मर रहा हूँ पर मेरे पास तुमको देने के लिये कुछ भी नहीं है। बस यह मकान है और यह नाशपाती का पेड़ है जो इस मकान के पास लगा है।" और यह कह कर वह मर गया।

[40] Giovannuza Fox – a folktale from Italy from its Catania area. Adapted from the book "Italian Folktales: selected and retold by Italo Calvino". San Diego, Harcourt Brace Jovanovich, Publishers. 1980. 200 tales. Its 120 tales are available in Hindi from hindifolktales@gmail.com

[41] Joseph – name of the son

अब जोसेफ उस मकान में अकेला रहता था और अपने घर के नाशपाती के पेड़ की नाशपातियॉ तोड़ तोड़ कर बेचा करता था। उसी से उसकी रोजी रोटी चलती थी।

जब नाशपाती का मौसम खत्म हो जाता तो ऐसा लगता था कि जैसे अब वह भूखा मर जायेगा क्योंकि उसको रोटी कमाने का और कोई तरीका आता नहीं था।

पर आश्चर्य की बात तो यह थी कि जब नाशपाती का मौसम खत्म हो जाता था तभी भी उस पेड़ की नाशपाती खत्म नहीं होती थीं। जब वे सारी नाशपाती तोड़ ली जाती थीं तो उनकी जगह दूसरी नाशपातियॉ आ जाती थीं।

इस तरह जाड़े के मौसम में भी वह एक सुन्दर रसीली नाशपाती का पेड़ बना रहता था और सारे साल नाशपातियों से लदा रहता था।

एक सुबह जब जोसेफ रोज की तरह उस पेड़ से नाशपाती तोड़ने गया तो उसने देखा कि उससे पहले उनको कोई और ही तोड़ कर ले गया है।

उसने सोचा अब मैं क्या करूॅ। अगर लोग मेरी नाशपाती इस तरह चुरा कर ले जाते रहेंगे तो मेरा क्या होगा। मैं आज सारी रात जागता हूॅ और देखता हूॅ कि यह काम किसने किया।

शाम को जब अॅधेरा हुआ तो वह नाशपाती के पेड़ के नीचे अपनी बन्दूक ले कर बैठ गया। पर बहुत जल्दी ही उसको नींद आ

गयी और वह सो गया। जब वह जागा तो किसी ने उसकी सारी पकी नाशपातियॉ तोड़ ली थीं।

वह अगले दिन फिर पहरे पर बैठा पर बीच में ही फिर सो गया और उसकी नाशपातियॉ फिर से चोरी हो गयीं। तीसरी रात अपनी बन्दूक के साथ साथ वह चरवाहे वाला बाजा भी अपने साथ ले गया।

जब वह नाशपाती के पेड़ के नीचे बैठा तो जागते रहने के लिये वह बाजा बजाने लगा। कुछ देर तक तो उसने अपना वह बाजा बजाया पर बाद में उसे बजाते बजाते वह थक गया सो उसने उसे बजाना बन्द कर दिया।

जब जोसेफ के बाजे की आवाज आनी बन्द हो गयी तो जियोवानूज़ा लोमड़ी ने जो अब तक जोसेफ की नाशपातियॉ चुराती रही थी सोचा कि जोसेफ शायद सो गया है। वह दौड़ी दौड़ी वहॉ आयी और नाशपाती तोड़ने के लिये नाशपाती के पेड़ पर चढ़ गयी।

जोसेफ ने तुरन्त अपनी बन्दूक उठायी और उसको मारने के लिये उसकी तरफ निशाना साधा कि वह लोमड़ी बोली — "मुझे मत मारो जोसेफ। अगर तुम मुझे एक टोकरी नाशपाती दे दोगे तो मैं तुमको बहुत अमीर बना दूँगी।"

"पर जियोवानूज़ा, अगर मैं तुमको एक टोकरी नाशपाती दे दूँगा तो फिर मैं क्या खाऊँगा?"

"उसकी तुम चिन्ता न करो। अगर जैसा मैं कहती हूॅ वैसा तुम करोगे तो तुम यकीनन अमीर बन जाओगे।"

सो जोसेफ ने उसको एक टोकरी अपनी सबसे अच्छी नाशपातियॉ दे दीं। वह उन नाशपातियों को राजा के पास ले गयी। वहॉ जा कर वह उनसे बोली — "मैजेस्टी, मेरे मालिक ने आपके लिये यह नाशपाती की टोकरी भेजी है और आपसे यह प्रार्थना की है कि आप इनको स्वीकार करें।"

राजा आश्चर्य से बोला — "नाशपाती? और साल के इस मौसम में? यह तो पहली बार है कि इतनी सुन्दर नाशपाती मैं साल के इस मौसम में देख रहा हूॅ। तुम्हारा मालिक कौन है?"

जियोवानूज़ा ने जवाब दिया — "काउन्ट पीयर ट्री[42]।"

राजा ने पूछा — "पर साल के इस समय में उसको नाशपाती मिलती कहॉ से हैं?"

लोमड़ी बोली — "उनके पास ऐसी आश्चर्यजनक बहुत सारी चीज़ें हैं। वह तो दुनियॉ के सबसे अमीर आदमी हैं।"

राजा ने उत्सुकता से पूछा — "क्या मुझसे भी ज़्यादा?"

"जी मैजेस्टी, आपसे भी ज़्यादा।"

[42] Count Pear Tree – Count (male) or countess (female) is a title in European countries for a noble of varying status, but historically deemed to convey an approximate rank intermediate between the highest and lowest titles of nobility.

राजा बहुत ही न्यायपूर्ण था सो उसने लोमड़े से पूछा — "तो मैं इसके बदले में उनको क्या दूँ?"

लोमड़ी बोली — "उसकी आप चिन्ता न करें। उनके लिये तो आप सोचें भी नहीं। वह तो खुद ही बहुत अमीर हैं। आप जो भेंट भी उनको देंगे वह उनको बहुत छोटी ही लगेगी।"

राजा कुछ हिचकते हुए बोला — "तो काउन्ट पीयर ट्री को इन नाशपातियों के लिये मेरी तरफ से बहुत बहुत धन्यवाद देना।"

जियोवानूज़ा वहॉ से वापस लौट आयी और जोसेफ के पास आयी। जोसेफ ने जब उसको देखा तो उससे कहा — "तुम तो कह रही थीं कि तुम मुझे अमीर बना दोगी पर तुम तो उन नाशपातियों के बदले में कुछ लायी ही नहीं।"

लोमड़ी बोली — "तुम बिल्कुल चिन्ता न करो। सब कुछ मुझ पर छोड़ दो। मैं फिर कहती हूँ कि तुम बहुत अमीर हो जाओगे।"

अगले दिन वह फिर एक नाशपाती की टोकरी ले कर राजा के पास गयी और बोली — "मैजेस्टी, क्योंकि आपने पहली नाशपाती की टोकरी स्वीकार कर ली थी इसलिये मेरे मालिक काउन्ट पीयर ट्री ने आपके लिये नाशपाती की यह दूसरी टोकरी भेजी है।"

राजा बोला — "अरे मुझे तो विश्वास ही नहीं हो रहा कि ये नाशपातियॉ इस मौसम में आ रही हैं और ये तो रखी हुई भी नहीं लग रही हैं लगता है कि जैसे अभी अभी तोड़ी गयी हैं।"

लोमड़ी बोली — "यह तो कुछ भी नहीं है। मेरे मालिक के लिये नाशपाती की कोई ख़ास कीमत नहीं है क्योंकि उनके पास तो और भी ज़्यादा कीमती चीज़ें हैं।"

राजा कुछ हिचकिचाते हुए बोला — "पर मैं उनके इन अहसानों का बदला कैसे चुकाऊँगा जो उनकी हैसियत के मुताबिक हो?"

लोमड़ी बोली — "यह कोई मुश्किल काम नहीं है। आपकी बेटी शादी के लायक है। आप उसकी शादी मेरे मालिक से कर दीजिये।"

राजा की ऑखें तो आश्चर्य से फैल गयीं। वह बोला — "यह तो मेरे लिये बड़ी इज़्ज़त की बात होगी क्योंकि वह तो मुझसे भी ज़्यादा अमीर हैं। क्या वह मेरी बेटी को स्वीकार करेंगे?"

लोमड़ी बोली — "हॉ हॉ क्यों नहीं। और जब यह बात मेरे मालिक को बुरी नहीं लग रही तो फिर यह बात आपको तो बुरी लगनी ही नहीं चाहिये। काउन्ट पीयर ट्री को तो बस आपकी बेटी चाहिये।

उनको इस बात से कोई फर्क नहीं पड़ता कि दहेज बड़ा है या छोटा। क्योंकि आप कितना भी बड़ा दहेज देंगे वह उनको अपनी बड़ी दौलत के सामने छोटा ही लगेगा। बस उनको तो आपकी बेटी चाहिये।"

राजा बोला — "बहुत अच्छे। तो तुम उनको बोलना कि वह यहॉ आये और हमारे साथ खाना खायें।"

सो जियोवानूज़ा लोमड़ी वापस जोसेफ के पास गयी और बोली — "मैंने राजा से कहा है कि तुम काउन्ट पीयर ट्री हो और तुम उसकी बेटी से शादी करना चाहते हो।"

जोसेफ बोला — "बहिन, यह तुमने क्या किया? अब जब राजा मुझको देखेगा तो वह तो मेरा सिर ही काट देगा।"

लोमड़ी बोली — "यह सब तुम मेरे ऊपर छोड़ दो। तुम इसकी बिल्कुल चिन्ता मत करो। वह ऐसा कुछ नहीं करेगा।"

यह कह कर वह एक दर्जी के पास गयी और बोली — "मेरे मालिक काउन्ट पीयर ट्री को सबसे बढ़िया पोशाक चाहिये तो तुम्हारे पास जो भी सबसे बढ़िया पोशाक हो वह मुझे दे दो। मैं तुम्हें उसकी कीमत बाद में दे दूँगी।" दर्जी ने लोमड़ी को एक काउन्ट के पहनने लायक कपड़े दे दिये।

उसके बाद वह लोमड़ी एक घोड़ा बेचने वाले के पास गयी और उससे बोली — "क्या तुम मुझे मेरे मालिक काउन्ट पीयर ट्री के लिये एक सबसे बढ़िया घोड़ा दोगे? हमको कीमत से कोई मतलब नहीं है। हम उसकी कीमत तुमको कल दे देंगे।" उसने लोमड़ी को एक सबसे अच्छा घोड़ा दे दिया।

इस तरह से वह लोमड़ी जोसेफ के लिये एक बहुत बढ़िया सूट और एक बहुत बढ़िया घोड़ा ले कर जोसेफ के घर पहुँची और वह

अगले दिन उस सूट को पहन कर और उस घोड़े पर सवार हो कर राजा के यहाँ चल दिया। लोमड़ी उसके आगे आगे थी।

जोसेफ पीछे से चिल्लाया — "जियोवानूज़ा, अगर राजा मुझसे कुछ बात करेगा तो मैं क्या जवाब दूँगा। मुझे तो किसी बड़े आदमी से एक शब्द बोलने में भी बहुत डर लगता है।"

लोमड़ी बोली — "तुमको बोलने की जरूरत ही नहीं है। तुम बस मुझको बोलने देना। तुमको तो बस इतना कहना है "गुड डे" और "मैजेस्टी"। बाकी मैं सँभाल लूँगी।"

वे राजा के महल आ पहुँचे थे सो राजा काउन्ट पीयर ट्री को अन्दर ले जाने के लिये बाहर आया। उसने काउन्ट को बड़ी इज़्ज़त के साथ नमस्ते की। तो जोसेफ भी थोड़ा झुक कर बोला — "मैजेस्टी"।

राजा उसको खाने की मेज पर ले गया। वहाँ उसकी सुन्दर बेटी पहले से ही बैठी हुई थी। जोसेफ ने उससे कहा — "गुड डे।"

वे सब वहीं बैठ गये और उन्होंने आपस में बातें करनी शुरू कर दीं। पर काउन्ट पीयर ट्री जब बिल्कुल नहीं बोला तो राजा लोमड़ी के कान में फुसफुसाया — "बहिन जियोवानूज़ा? क्या तुम्हारे मालिक की जीभ बिल्ली ले गयी है?"

जियोवानूज़ा बोली — "मैजेस्टी आपको तो मालूम है जब किसी के पास बहुत सारी जमीन और दौलत होती है तो वह उसके बारे में

ही सोचता रहता है।" सो उस मुलाकात में राजा ने काउन्ट से बात न करने की बहुत ही ज़्यादा सावधानी बरती।

अगली सुबह जियोवानूज़ा ने जोसेफ से कहा — "मुझे एक टोकरी नाशपाती और दो ताकि मैं उसे राजा को दे सकूँ।"

जोसेफ बोला — "जैसा तुम चाहो बहिन। पर अगर अब मैं अमीर न हुआ तो मेरी गरीबी शुरू हो जायेगी।"

जियोवानूज़ा बोली — "तुम अपने दिमाग को शान्त रखो। मैं तुमको विश्वास दिलाती हूँ कि तुम जल्दी ही एक अमीर आदमी बनोगे।"

सो जोसेफ ने एक टोकरी नाशपाती तोड़ी और जियोवानूज़ा को दे दी। जियोवानूज़ा उन नाशपातियों को राजा के पास ले गयी और बोली — "मेरे मालिक काउन्ट पीयर ट्री ने आपके लिये यह नाशपाती की टोकरी भेजी है और अपनी प्रार्थना का जवाब माँगा है।"

राजा बोला — "काउन्ट से कहना कि यह शादी तभी हो जायेगी जब वह चाहेंगे।"

यह सुन कर जियोवानूज़ा तो बहुत खुश हो गयी और तुरन्त ही उछलती कूदती जोसेफ के पास लौट आयी। उसने वापस आ कर जोसेफ को यह खुशखबरी सुनायी।

जोसेफ कुछ परेशान हो कर बोला — "पर बहिन जियोवानुज़ा, मैं अपनी पत्नी को कहाँ ले जाऊँगा? इस छोटे से घर में मैं उसको कैसे ला सकता हूँ?"

जियोवानूज़ा बोली — "वह सब भी तुम मुझ पर छोड़ दो। तुम उसको सोचो भी नहीं। क्या मैंने अब तक तुम्हारे लिये कुछ नहीं किया जो आगे नहीं करूँगी? सो जैसे अब तक किया वैसे ही मैं आगे भी करूँगी।"

जोसेफ की शादी राजा की बेटी से बड़ी धूमधाम से हो गयी और इस तरह काउन्ट पीयर ट्री ने राजा की बेटी को अपनी पत्नी बना लिया।

कुछ दिन बाद जियोवानूज़ा ने राजा को बताया कि मेरे मालिक अब अपनी पत्नी को अपने महल ले जाना चाहते हैं। राजा बोला — "ठीक है। मैं भी उनके साथ जाना चाहूँगा ताकि मैं भी देख सकूँ कि काउन्ट पीयर ट्री के पास क्या क्या है।"

सब लोग घोड़े पर चढ़े। राजा के साथ कई नाइट्स[43] भी थे। वे सब मैदानों की तरफ चले तो जियोवानूज़ा बोली — "मैं पहले वहाँ पहुँचती हूँ और आप सब लोगों के वहाँ पहुँचने की तैयारी करती हूँ।"

[43] A knight is a person granted an honorary title of *knighthood* by a monarch or other political leader for service to the Monarch or country, especially in a military capacity. See its picture above.

जैसे ही वह आगे दौड़ कर गयी तो उसको हजारों भेड़ें मिलीं। उसने उनके चरवाहों से पूछा — "ये भेड़ें किसकी हैं?"

"पापा ओगरे[44] की।"

लोमड़ी बोली — "ज़रा धीरे बोलो। तुम लोग उस कारवॉ को आते देख रहे हो न? वह राजा है जिसने पापा ओगरे से लड़ाई की घोषणा कर रखी है सो जब वह राजा यहॉ आये और तुमसे यह पूछे कि ये भेड़ें किसकी हैं तो अगर तुमने उनको यह कहा कि ये भेड़ें पापा ओगरे की हैं तो राजा के नाइट्स तुमको मार देंगे।"

"तो फिर हम क्या कहें?"

"पता नहीं। पर कह कर देखना कि ये सब भेड़ें काउन्ट पीयर ट्री की हैं।"

तब तक राजा वहॉ तक आ गया तो इतनी सारी भेड़ें देख कर उसने उनके चरवाहों से पूछा — "ये इतनी सारी भेड़ें किसकी हैं?"

सब चरवाहे चिल्लाये — "काउन्ट पीयर ट्री की।"

राजा खुशी से चिल्लाया — "ओह मेरे भगवान। जिस आदमी के पास इतनी सारी भेड़ें हैं यह आदमी तो वाकई बहुत अमीर होगा।"

---

[44] Ogre – An ogre (feminine ogress) is a being usually depicted as a large, hideous, manlike monster that eats human beings.

कुछ दूर और आगे चल कर उस लोमड़ी को हजारों सूअर मिले। लोमड़ी ने उनके चराने वालों से भी पूछा — "ये सूअर किस के हैं?"

"पापा ओगरे के।"

"श श श श। धीरे बालो। तुम वे सिपाही देख रहे हो न जो इधर ही चले आ रहे हैं। अगर तुमने उनसे यह कहा कि ये सूअर पापा ओगरे के हैं तो वे तुमको मार देंगे। तुम उनसे कहना कि ये सारे सूअर काउन्ट पीयर ट्री के हैं तो वे तुमको नहीं मारेंगे।"

"ठीक है।"

तब तक राजा वहाँ तक आ गया तो हजारों सूअर देख कर उनके रखवालों से पूछा कि ये इतने बढ़िया सूअर किसके हैं तो उन्होंने जवाब दिया "काउन्ट पीयर ट्री के।" यह सुन कर राजा बहुत खुश हुआ कि उसका दामाद[45] तो बहुत अमीर है – इतनी सारी भेड़ें, इतने सारे सूअर।

उसके बाद राजा के लोग एक ऐसी जगह आये जहाँ बहुत सारे घोड़े घास खा रहे थे। राजा ने जब उनकी देखभाल करने वालों से पूछा कि वे घोड़े किसके हैं तो उनके रखवालों ने भी उनको यही कहा कि वे घोड़े काउन्ट पीयर ट्री के हैं।

राजा ने सोचा कि उसकी बेटी कितनी खुशकिस्मत है कि उसको कितना अच्छा पति मिल गया है।

[45] Sone-in-law – daughter's husband

अन्त में जियोवानूज़ा लोमड़ी पापा ओगरे के महल में आ पहुँची। वहाँ वह अकेला ही अपनी पत्नी के साथ रहता था।

माँ ओगरे ने जब जियोवानूज़ा को देखा तो वह तुरन्त पापा ओगरे के पास दौड़ी आयी और बोली — "काश तुम यह जान सकते कि तुम किस मुसीबत में फँस गये हो।"

पापा ओगरे डर गया और बोला — "क्या हो गया?"

"देखो न, वह धूल का बादल उड़ता चला आ रहा है। लगता है कि यह तो राजा की सेना है जो तुमको मारने चली आ रही है।"

दोनों ने बहिन लोमड़ी से कहा — "बहिन लोमड़ी, हमारी सहायता करो।"

लोमड़ी बोली — "मेरी सलाह यह है कि तुम लोग स्टोव में जा कर छिप जाओ। जब वे सब यहाँ से चले जायेंगे तो मैं तुमको इशारा कर दूँगी तब तुम बाहर निकल आना।"

सो पापा और माँ ओगरे ने वही किया। वे दोनों स्टोव में छिप कर बैठ गये। अन्दर जा कर उन्होंने जियोवानूज़ा से कहा कि वह स्टोव का दरवाजा पेड़ की टहनियों से बन्द कर दे ताकि वे लोग उनको देख न सकें।

यही तो वह लोमड़ी भी सोच रही थी सो उसने पेड़ की टहनियाँ स्टोव के दरवाजे पर लगा कर स्टोव को पूरी तरह से बन्द कर दिया। फिर वह जा कर राजा और उसकी बेटी का स्वागत करने के लिये उनके महल के दरवाजे पर खड़ी हो गयी।

जब राजा वहॉ आये तो उसने नम्रता से कहा — "मैजेस्टी, आइये। मेहरबानी कर के घोड़े पर से उतरिये। यही काउन्ट पीयर ट्री का महल है।"

राजा और उसकी बेटी और जोसेफ तीनों अपने अपने घोड़ों से नीचे उतरे और उस महल की शानदार सीढ़ियॉ चढ़े। वहॉ उन्होंने काउन्ट पीयर ट्री की बहुत सारी दौलत देखी तो राजा के मुॅह से तो एक शब्द भी नहीं निकला।

उसने सोचा "मेरे महल में तो इससे आधी दौलत भी नहीं है।"

उधर जोसेफ जो एक गरीब आदमी था यह सब देखता का देखता रह गया। उसको अपनी ऑखों पर बिल्कुल भी विश्वास नहीं हो रहा था कि वह सब उसका था।

जब राजा को थोड़ा होश आया तो उसने पूछा — "पर यहॉ कोई नौकर नहीं दिखायी दे रहा।"

लोमड़ी ने तुरन्त ही जवाब दिया — "आज के दिन उन सबको छुट्टी दे दी गयी है क्योंकि मेरे मालिक बिना मालकिन की मरजी के कोई भी इन्तजाम नहीं करना चाहते थे। अब जब वह आ गयी हैं तो अब वह हुक्म करें कि वह क्या चाहती हैं वही किया जायेगा।"

जब उन्होंने सब कुछ देख लिया तो राजा अपने महल को लौट गया और काउन्ट पीयर ट्री वहीं रह गया, राजा की बेटी के साथ, पापा ओगरे के महल में।

इस बीच पापा और माँ ओगरे अभी तक स्टोव में ही बन्द थे। रात को लोमड़ी स्टोव के ऊपर गयी और फुसफुसायी — "पापा ओगरे, माँ ओगरे, क्या तुम लोग अभी यहीं हो?"

उन्होंने बड़ी कमजोर सी आवाज में कहा — "हाँ हम लोग अभी यहीं हैं।"

लोमड़ी बोली — "ऐसा करो तुम लोग अभी यहीं रहो मैं अभी आती हूँ।"

कह कर उसने स्टोव के सामने रखी टहनियों में आग लगा दी। पापा ओगरे और माँ ओगरे दोनों उस आग में जल कर मर गये।

लोमड़ी काउन्ट पीयर ट्री से बोली — "अब तुम अमीर और खुश हो पर तुम मुझसे एक वायदा करो कि जब मैं मरूँ तो मुझे एक बहुत सुन्दर ताबूत[46] में लिटाना और मुझे पूरी इज़्ज़त के साथ दफनाना।"

राजा की बेटी ने जिसको उस लोमड़ी से प्यार हो गया था उससे कहा — "ओह बहिन जियोवानूज़ा, तुम इस खुशी के मौके पर ऐसी मरने की बात क्यों कर रही हो?"

कुछ समय बाद जियोवानूज़ा ने उन दोनों का इम्तिहान लेना चाहा। सो उसने मरने का बहाना किया। जब राजा की बेटी ने लोमड़ी को अकड़ा पड़ा देखा तो वह चिल्लायी — "अरे देखो

[46] Translated for the word "Coffin". See its picture above.

जियोवानूज़ा तो मर गयी। ओह हमारी प्यारी दोस्त। हमको इसके लिये तुरन्त ही एक बहुत ही बढ़िया ताबूत बनवाना चाहिये।"

काउन्ट पीयर ट्री बोला — "ताबूत? एक जानवर के लिये? हम तो इसको खिड़की से ऐसे ही बाहर फेंक देंगे।"

कह कर उसने उसको पूँछ से पकड़ लिया और बाहर फेंकने ही वाला था कि वह लोमड़ी उसके हाथ से निकल कर कूद गयी और चिल्लायी — "ओ बिना पैसे के आदमी, नीच, बेवफा, क्या तुम इतनी जल्दी सब कुछ भूल गये? भूल गये कि तुम्हारी यह सब दौलत मेरी वजह से है। अगर मैं न होती तो तुम अभी भी दान पर ज़िन्दा रह रहे होते। तुम बहुत ही कंजूस, बेवफा और नीच हो।"

काउन्ट पीयर ट्री ने उससे प्रार्थना की — "मेहरबानी कर के मुझे माफ कर दो। न तो मैं तुम्हें कोई नुकसान पहुँचाना चाहता हूँ और न ही तुम्हारा दिल दुखाना चाहता हूँ। यह तो बस मेरे मुँह से ऐसे ही निकल गया। मैंने सोचा ही नहीं था कि मैं क्या कह रहा हूँ।"

"बस अब तुम मुझे आखिरी बार देख रहे हो।" कह कर वह लोमड़ी दरवाजे की तरफ भाग गयी।

काउन्ट पीयर ट्री ने उससे बहुत प्रार्थना की कि वह उसके साथ ही रहे पर उसने नहीं सुना। वह सड़क पर भागी चली गयी और गायब हो गयी और फिर कभी दिखायी नहीं दी।

9 छोटा लोमड़ा और अनार राजा[47]

बूट पहने हुए बिल्ला जैसी कहानियों में से यह कहानी हमने तुम्हारे लिये एशिया महाद्वीप के चीन देश की लोक कथाओं से ली है। इस लोक कथा में एक लोमड़ा एक गरीब आदमी की सहायता करता है। तो लो पढ़ो यह लोक कथा चीन की अब हिन्दी में।

मू ताई[48] एक बहुत ही गरीब आदमी था जो सीन चिऑग शहर[49] के बाहर की तरफ रहता था। वहॉ मू ताई के घर की छोटी सी जमीन पर उसके घर के अलावा केवल एक अनार का पेड़ था। उस अनार के पेड़ पर बहुत रसीले अनार के फल लगते थे।

मू ताई अपने अनार के पेड़ को बहुत प्यार करता था। वह उस से ऐसे बात करता था जैसे कि वह उसका बच्चा हो। जब वह देर से फूलता था तो उसको डॉटता था अैर जब उसके ऊपर फल आते थे तब उसकी बहुत तारीफ करता था।

मू ताई अपने अनार के पेड़ के अनार रोज गिनता था। एक पतझड़ में उसने देखा कि उसके दो अनार रोज कम हो रहे हैं। सो उसने सोचा कि वह रात को सारी रात जागेगा ताकि वह यह पता लगा सके कि उसके ये दो अनार कौन चुरा कर ले जाता है।

---

[47] The Little Fox and the Pomegranate King – a folktale from China, Asia. Adapted from the Book : "Chinese Myths and Legends" translated by Kwok Man Ho. 2011. Its Hindi translation is available from : hindifolktales@gmail.com

[48] Mu Tai – a Chinese name for a man

[49] Hsin Chiang town of China

एक रात जब चाँद पूरा था तो उसने एक लोमड़े को देखा जो उसके अनार के पेड़ में कुछ गड़बड़ कर रहा था। सो अगली शाम उसने उस पेड़ के चारों तरफ बिना रंग के गोंद का एक गोला बना दिया और सोने चला गया।

सुबह को जब वह अपने अनार के पेड़ के पास आया तो उसने देखा कि एक छोटा सा लोमड़ा उस गोंद में चिपका हुआ है और दर्द से चिल्ला रहा है। वह अपने पंजों को उस गोंद में से छुड़ाने की पूरी कोशिश कर रहा है पर वह उनको छुड़ा नहीं पा रहा है।

मू ताई ने उसको उसके कानों से पकड़ लिया और उसको मारने की धमकी दी पर वह लोमड़ा चालाक था उसने मू ताई से एक सौदा किया जिसे मू ताई मना नहीं कर सका।

लोमड़ा बड़े विश्वास के साथ बोला — "अगर तुम मुझे आजाद कर दोगे तो मैं तुम्हारी शादी के लिये एक राजकुमारी ढूँढ दूँगा।"

पर मू ताई ने उसको हिलाते हुए कहा — "मुझे विश्वास नहीं होता।"

लोमड़ा बोला — "मेरा विश्वास करो। मैं तुमसे वायदा करता हूँ कि इस महीने के आखीर तक तुम एक बादशाह के दामाद[50] बन जाओगे।"

मू ताई लोमड़े के इस वायदे के लालच में आ गया और उसने लोमड़े को उस गोंद की पकड़ से आजाद कर दिया और उसको

[50] Son-in-law – husband of the daughter

उसका वायदा पूरा करने के लिये एक हफ्ते का समय और ज़्यादा दे दिया।

लोमड़ा यह सुन कर अपना वायदा पूरा करने के लिये प्लान बनाने के लिये अपने घर भाग गया।

कई दिन बाद लोमड़े ने बादशाह के चौकीदार की पोशाक चुरा ली। उसने उसको पहना, अपनी पूँछ सॅवारी और पड़ोस के राज्य के एक बूढ़े राजा से मिलने चल दिया।

किसी तरह से पीछे पड़ कर उसने वहॉ के बादशाह के चौकीदारों से बादशाह से मिलने की इजाज़त ले ली।

बादशाह के सामने जा कर उसने अपने आपको बादशाह मू ताई का सलाहकार और उसके चौकीदारों का सरदार बताया।

उसने उस बादशाह को यह भी बताया कि कैसे उसने मू ताई के बागीचे की मिट्टी में हजारों मोती लाल हीरे देखे हैं और अब वह पड़ोस के राज्य से एक छलनी मॉगने आया है ताकि वह उनको छान कर उस मिट्टी में से निकाल सके।

वह बूढ़ा बादशाह उस लोमड़े की यह बात सुन कर बहुत प्रभावित हुआ। उसने ओक की लकड़ी की बनी एक बड़ी सी छलनी उसको दे दी।

उसी रात लोमड़ा उस बादशाह के महल में घुस गया और उसके खजाने से मुट्ठी भर मोती चुरा लाया। दो दिन बाद वह फिर उसी बादशाह के महल लौटा और वह छलनी बादशाह के पैरों के पास

रख दी। ऐसा करते समय उसने जान बूझ कर आठ मोती उसी छलनी में छोड़ दिये।

जब महल के नौकरों ने उस छलनी को बादशाह के हाथों में दिया तो वे मोती बादशाह को गोद में जा कर गिर गये। बादशाह उन मोतियों की सुन्दरता देख कर बहुत प्रभावित हुआ।

लोमड़े ने उन मोतियों को बादशाह को भेंट में दे दिया और बोला — "मेरे पास ऐसे और भी बहुत सारे मोती हैं। ये मोती तो उन मोतियों के सामने कुछ भी नहीं जो मैंने अभी देखे ही नहीं हैं।"

बादशाह उस लोमड़े के शब्दों पर कुछ देर तक विचार करता रहा फिर अपने पास खड़े अपने दरबार के एक मन्त्री के कान में कुछ फुसफुसाया।

फिर वह बादशाह अपने सिंहासन से नीचे उतर कर आया और लोमड़े को एक तरफ ले जा कर बोला — "मैं अब बूढ़ा हो रहा हूॅ और मैं अपनी बेटी की शादी के बारे में बहुत चिन्तित हूॅ। क्या तुम मेरी बेटी और अपने बादशाह के बीच में शादी कराने वाले[51] बन कर उनकी शादी कराओगे?"

लोमड़ा बोला यह तो मेरे लिये बड़ी खुशी की बात होगी। फिर उसने बादशाह को विश्वास दिलाया कि बादशाह मू ताई से उसकी बेटी की शादी उसकी बेटी के लिये बहुत ही बढ़िया रिश्ता रहेगा।

[51] Translated for the word "Matchmaker"

उसने बादशाह से यह भी वायदा किया कि वह अगले हफ्ते शादी की तैयारी के साथ लौट कर आयेगा। फिर उसने बहुत नीचे झुक कर और अपनी पूँछ से बादशाह के सामने की जमीन साफ कर के उसको विदा कहा और वहॉ से चल दिया।

जब लोमड़े ने यह सब मू ताई को बताया तो वह बहुत खुश भी हुआ और थोड़ा दुखी भी हुआ।

वह खुश इसलिये हुआ कि उसकी शादी एक राजकुमारी से होने जा रही थी और दुखी इसलिये था कि उसके पास न तो राजकुमारी को देने के लिये कुछ था और न उसके पास शादी के समय पहनने के लिये ही कोई सूट और कोई अच्छा जूता था।

लोमड़े ने उसको विश्वास दिलाया कि वह घबराये नहीं सब ठीक हो जायेगा। बस वह अगले हफ्ते पड़ोस के राज्य को चलने के लिये तैयार हो जाये।

अगले हफ्ते लोमड़ा एक कम्बल ले कर मू ताई के घर आया और उस घबराये हुए दुलहे को उस बूढ़े बादशाह के महल ले गया। महल के दरवाजे पर पहुँचने से ठीक पहले लोमड़े ने मू ताई को एक झील में कूद जाने को कहा।

मू ताई ने वैसा ही किया जैसा उस लोमड़े ने उससे करने के लिये कहा। वह झील के ठंडे पानी में कूद गया और जब वह झील में से बाहर निकला तो लोमड़े ने उसके फटे हुए कपड़े तो निकाल दिये और उसको अपने लाये हुए कम्बल में लपेट दिया।

इसके बाद वे दोनों महल चले और बादशाह के सामने पहुँचे।

लोमड़ा बादशाह से बोला — "मैं बादशाह मू ताई को ले आया हूँ पर रास्ते में हमारे ऊपर बड़ी आफत आ पड़ी। जब हम अपने सिल्क और जवाहरातों से लदे चालीस ऊँटों को साथ ले कर आपके राज्य को आ रहे थे तो आपके राज्य के सामने वाली नदी का पुल पार करते समय टूट गया।

हमारे सारे ऊँट उस नदी में डूब गये। शादी के लिये जो भेंटें हम ले कर आ रहे थे वे सब भी पानी की धारा में बह गयीं। बस हमारी किस्मत अच्छी थी कि हम लोग किसी तरह से बच कर निकल आये।

बादशाह तो यही सुन कर बहुत प्रभावित हो गया कि वे चालीस ऊँटों पर इतना कीमती सामान लाद कर ला रहे थे। उसने तुरन्त ही अपने आदमियों को हुक्म दिया कि वह बादशाह मू ताई को सबसे अच्छे कपड़े पहनायें।

उसी शाम मू ताई और राजकुमारी की शादी हो गयी और दावत भी। पर मू ताई बहुत चिन्तित था उससे तो खाना भी नहीं खाया जा रहा था।

जब कोई नहीं सुन रहा था तो वह लोमड़े से बोला — "क्या यह सब ठीक है कि एक राजकुमारी से शादी की जाये और अपने आपको एक बादशाह कहलवाया जाये? पर तब क्या होगा जब वह मेरे घर आयेगी और उसको मेरी गरीबी का पता चलेगा?"

लोमड़े ने मू ताई की चिन्ताओं को बेकार की चिन्ताऐं बताते हुए कहा कि अभी वह कोई चिन्ता न करे और आनन्द से इस मौके का आनन्द उठाये। वह उसकी भी कोई तरकीब निकाल लेगा।

अगले दिन सुबह सवेरे जब दावत खत्म हो गयी तो नया शादीशुदा जोड़ा महल से चल दिया। उनके साथ काफी सारे घोड़े गधे और गाड़ियॉ थीं, राजकुमारी के नौकर थे और दहेज का सामान था।

मू ताई फिर से इतना परेशान था कि वह अपनी पत्नी से बात भी नहीं कर पा रहा था सो उसने लोमड़े को फिर बुलाया पर वह तो वहॉ था ही नहीं।

लोमड़ा तो इस बीच वहॉ से दूर भाग गया था और सौदागरों के एक समूह के पास जा पहुँचा जो तीस ऊँटों के साथ यात्रा कर रहे थे। लोमड़ा जब उनसे मिला तो उसकी ऑखों में डर था।

वह दूर से आते हुए कारवॉ की तरफ इशारा करते हुए उन सौदागरों से चिल्ला कर बोला — "चोरों का एक समूह इसी सड़क पर आ रहा है और अगर तुम लोग अपनी जान बचा कर नहीं भागे तो तुम सब मारे जाओगे।"

सौदागरों ने उस दिशा की तरफ देखा तो उन्होंने सचमुच में ही घोड़ों की टापों से उठती धूल देखी। उन्होंने देखा कि जान बचाने के लिये भी समय कम है सो उन्होंने लोमड़े से ही सलाह मॉगी कि वे क्या करें।

लोमड़े ने उनको सलाह दी कि उनके पास बच के भागने का केवल एक ही तरीका है। जब वे उनके पास से गुजरें तो वे उनको सिर झुकायें और उनसे कहें कि वे लोग बादशाह मू ताई के लोग हैं। यह सुन कर वे उनको छोड़ देंगे। वे सौदागर मान गये।

सो जब मू ताई अपने कारवॉ के साथ वहॉ से गुजरा तो उसको यह देख कर बड़ा आश्चर्य हुआ कि वे सब उसको झुक झुक कर सलाम कर रहे थे।

उधर वह लोमड़ा उन सौदागरों से यह कह कर आगे बढ़ गया। आगे जा कर वह कुछ चरवाहों के झुंड और उनके घोड़ों से मिला। उसने उनको भी अपनी डरी हुई आवाज में डाकुओं की वही कहानी दोहरायी। उन चरवाहों ने भी धूल उड़ती हुई देखी और बचने का समय न देख कर लोमड़े से ही सलाह मॉगी।

लोमड़े ने उनको भी वही सलाह दी कि वे उस कारवॉ को सिर झुकायें और उनसे कहें कि वे बादशाह मू ताई के लोग है तो वे लोग उनको छोड़ देंगे। उन चरवाहों ने भी ऐसा ही किया।

राजकुमारी इस बादशाह के लोगों की वफादारी देख कर तो आश्चर्य में पड़ गयी। मू ताई भी आश्चर्य में पड़ गया जब उसको रास्ते में मिले सब लोगों ने सिर झुका कर सलाम किया – किसानों ने, चरवाहों ने, भिखारियों ने, दूकानदारों ने।

सारे दिन भागते भागते अब तक लोमड़ा थक कर चूर हो चुका था कि तभी उसको एक शैतान का महल दिखायी देगया जो मू ताई के घर के पास के एक पहाड़ के पास था।

वह उस महल के चौकीदारों की ऑख बचा कर उस महल में घुस गया और सीधा उस शैतान के सोने के कमरे मे पहुॅच गया। वह शैतान बस सोने ही वाला था कि तभी लोमड़ा उसके बिस्तर में कूद पड़ा और उसको जमीन पर गिरा दिया।

वह बेचैन हो कर उससे बोला — "मैजेस्टी, अपनी जान बचाइये। इस समय सैंकड़ों चोर आपके महल पर हमला करने आ रहे हैं। उन्होंने तो आज आपको मारने की कसम खायी हुई है। इस समय आपके लिये यही सबसे अच्छा है कि आप अपने रसोईघर में रखे स्टोव के पीछे छिप जाइये।"

सो जब वह शैतान अपने उस स्टोव के पीछे की छोटी सी जगह में छिपने गया तो लोमड़े ने आग में बहुत सारी लकड़ियॉ डाल दी। वे लकड़ियॉ इतने ज़ोर से जली कि वह शैतान लोमड़े से दया की भीख मॉगने लगा कि वह उसको किसी तरह से बचा ले।

पर लोमड़ा उसकी यह बात कहॉ सुनने वाला था वह तो बस उस आग में लकड़ी डालता ही रहा और उस स्टोव की गर्मी बढ़ती ही रही जिससे वह शैतान बेहोश हो गया। बेहोशी की हालत में ही वह उस आग की गर्मी में ज़िन्दा ही भुनता रहा।

बाद में लोमड़े ने उसकी राख को बाहर फेंक दिया और उसके पूरे महल में यह घोषणा कर दी कि उनका शैतान राजा मर गया है और अब उनका नया बादशाह आ रहा है।

महल के नौकरों ने नये बादशाह के आने की खुशी में सारे कमरे सजा दिये। मू ताई उनका नया बादशाह हो गया। मू ताई ने उस लोमड़े को अपना वज़ीर[52] बना लिया।

कई महीनों के राज करने के बाद वहॉ के नौकर मू ताई और उसकी पत्नी को प्यार करने लगे थे। मू ताई ने वहॉ कई साल तक सफलतापूर्वक राज किया पर जब भी उसने कुछ करने का विचार किया तो उसने लोमड़े से सलाह जरूर ली। लोमड़ा भी उसको बहुत अक्लमन्दी की सलाह देता था।

दस साल बाद लोमड़ा मर गया तो मू ताई ने वहॉ सबको कह दिया कि सभी उसके प्यारे दोस्त को हमेशा याद रखें। उसने उस लोमड़े के सुनहरी बालों का टोप बनवा लिया जिसको वह हमेशा पहने रहता था।

सारे सीन चिऑग के लोगों को वह टोप इतना अच्छा लगा कि उसके बाद जब भी कोई लोमड़ा मरता तो वे भी उसके बालों का टोप बनवा लेते। इसी लिये सीन चिऑग आज भी लोमड़े के बालों के टोप के लिये बहुत मशहूर है।

[52] Chief Minister

10 एक लोमड़ा और एक राजा का बेटा[53]

बूट पहने हुए बिल्ला जैसी यह कहानी एशिया महाद्वीप के जियोर्जिया देश में कही सुनी जाती है।

एक बार की बात है कि एक राजा था जिसके एक ही बेटा था। सब उसके साथ बुरा बर्ताव करते थे और उसको अपने पास से भगा देते थे। यहॉ तक कि आस पास से जाने वाले भी उसकी तरफ देखना पसन्द नहीं करते थे।

राजकुमार ने सोचा और सोचा और सोचा कि क्या किया जाये। आखिर वह अपने घोड़े पर चढ़ा अपना तीर कमान लिया और अपने पिता के महल से चल दिया।

चलते चलते वह एक जंगल में आ गया। वहॉ उसने एक अच्छी सी जगह चुन कर अपने लिये मिट्टी की एक झोंपड़ी बनायी और उसमें रहने लगा।

वह रोज शिकार करने जाता और रोज ही कोई न कोई बारहसिंगा या फिर कोई हिरन मार कर घर ले आता। उसमें से काफी सारा मॉस खाने के बाद में भी उसके पास अगले दिन के लिये काफी मॉस बच जाता पर वह उसको अगले दिन खाता नहीं था। क्योंकि वह अगले दिन वह फिर शिकार के लिये जाता था।

---

[53] The Fox and the King's Son – a folktale from Georgia, Asia.
Taken from the book : "Georgian Folktales" by Marjorie Wardrop. 35 tales. Its Hindi translation is available from : hindifolktales@gmail.com

इस तरह से उसके पास बहुत सारा मॉस बचा पड़ा था। एक लोमड़ा यह सब देख रहा था। रोज जब राजकुमार शिकार करने के लिये चला जाता तो वह उसकी झोंपड़े में जाता और उसका बचा हुआ सारा खाना खा जाता और फिर वहॉ से चुपचाप चला आता।

कुछ दिनों तक ऐसे ही चलता रहा। एक दिन लोमड़े ने सोचा "इस तरह से मॉस चुराने में न तो कोई मजा है और न ही कोई बहादुरी कि मैं उसका सारा मॉस इस तरह छिप कर ले आता हूँ और फिर भी बहुत सारा पड़ा रह जाता है। मुझे उसको अपने आपको दिखाना चाहिये।"

सो एक बार जब राजकुमार शिकार के लिये गया हुआ था तो वह लोमड़ा उसके घर में घुस गया। वहॉ जा कर पहले उसने मॉस खाया और फिर उसकी झोंपड़ी में रखी उसकी सब चीज़ें ठीक कर के रखने लगा।

जब राजकुमार घर आया तो वह उसके सामने ही वहॉ से कूद कर बाहर भागने लगा। पर राजकुमार भी कोई सुस्त नहीं था। उसने तुरन्त अपनी कमान निकाली और उस पर तीर रख कर चलाने ही वाला था कि लोमड़ा बोला — "मुझे मत मारो। मैं तुम्हारी तुम्हारी किस्मत बनाने में सहायता करूँगा।"

सो राजकुमार का हाथ रुक गया और उसने लोमड़े को नहीं मारा। अब लोमड़ा राजकुमार के घोड़े की देखभाल करता और

उसको घास चराता। इस तरह से रहते रहते उन्हें कुछ समय बीत गया।

लोमड़ा उसकी आग जलाता उसकी झोंपड़ी की सफाई करता और घर का सब काम करता। इस सबके बाद भी राजकुमार का लाया काफी मॉस बच जाता।

एक दिन लोमड़ा बोला — "मैं जा कर किसी को ढूँढ कर लाता हूँ जो इस मॉस को खाने में हमारी सहायता करे।"

सो वह बाहर गया और एक भेड़िये को देखा जो भूख के मारे इतना कमजोर हो गया था कि वहा जहॉ था वहॉ से बहुत मुश्किल से हिल पा रहा था।

लोमड़ा बोला — "आओ मेरे साथ मेरे घर चलो। वहॉ तुमको हर चीज़ बहुत सारी मिलेगी।" भेड़िया उसके पीछे पीछे चल दिया।

दोनों झोंपड़ी में आये तो लोमड़े ने भेड़िये से कहा — "मैं घर की सफाई करता हूँ तुम यहीं ठहरो जब मालिक आ जायें तो तुम उनके घोड़े की देखभाल करना।"

कुछ देर बाद राजकुमार आ गया। उसके घोड़े की जीन से एक बारहसिंगा लटक रहा था। भेड़िया उसको देखते ही घोड़े की देखभाल के लिये कूद पड़ा।

राजकुमार ने तुरन्त भेड़िये को मारने के लिये अपनी कमान निकाली और भेड़िये को तीर मारने ही वाला था कि लोमड़ा बोला — "उसे मत मारो। वह हमारा दोस्त है।"

राजकुमार रुक गया उसने भेड़िये को नहीं मारा और अपने घोड़े से उतर पड़ा। उसने अपने घोड़े से बारहसिंगा उतारा और घर में चला गया।

भेड़िया घोड़े की देखभाल करने लगा और उसको इधर उधर घुमाने लगा। लोमड़ा घर के अन्दर की देखभाल करता रहा। इस तरह उनको फिर कुछ समय बीत गया।

लोमड़े ने देखा कि मॉस अभी भी काफी बच जाता है। सो वह एक बार फिर बाहर गया और एक भालू को बुला लाया। भेड़िये को घास लाने के लिये भेज दिया गया। भालू को घोड़े की देखभाल करने के लिये रख दिया गया। और लोमड़ा घर की देखभाल करता रहा।

थोड़ी देर में ही राजकुमार घर आया तो भालू कूद कर घोड़े की देखभाल के लिये आगे बढ़ा तो राजकुमार ने अपनी कमान निकाल कर उसे तीर मारना चाहा तो लोमड़ा चिल्लाया — "इसे मत मारो यह तो एक दोस्त है।"

सो राजकुमार ने भालू को नहीं मारा। भालू ने फिर घोड़े की देखभाल की और उसको घुमाने ले गया। कुछ देर में भेड़िया घास ले कर आ गया। उसने घोड़े को घास खिलायी।

फिर कुछ समय बीत गया। लोमड़े ने देखा कि मॉस अभी भी बहुत बच रहता है सो वह फिर बाहर गया और अबकी बार वह एक गरुड़ को घर ले आया।

उसने गरुड़ से कहा कि वह घोड़े की देखभाल करे भालू को घास लाने के लिये भेज दिया भेड़िये को जंगल से जलाने के लिये लकड़ी लाने के लिये भेज दिया और खुद वह उसके घर की देखभाल करता रहा।

इस तरह से अब सबके पास अपना अपना काम था। जब मालिक घर लौटा तो गरुड़ घोड़े की देखभाल के लिये उड़ा। राजकुमार उसको तीर मारने ही वाला था कि लोमड़ा चिल्लाया — उसको मत मारना वह हमारा दोस्त है।"

राजकुमार ने उसको मारा तो नहीं पर मन ही मन में सोचा "अबकी बार यह लोमड़ा पता नहीं किसको ले कर आयेगा। क्या मुझे सारे शिकार यहीं मिल जायेंगे।" इस तरह से वे फिर कुछ दिन तक रहते रहे।

एक बार लोमड़े ने मालिक से कहा — "हमको दो हफ्ते की छुट्टी चाहिये। दो हफ्ते बाद हम आपके पास लौट आयेंगे।"

मालिक ने सबको छुट्टी दे दी और अपने मन में सोचा "मुझे कोई फर्क नहीं पड़ता अगर तुम लोग वापस न भी आओ तो। क्योंकि मुझे तुम सबसे बहुत डर लगता है।"

इस तरह लोमड़ा भेड़िया भालू गरुड़ सब राजकुमार से दो हफ्ते की छुट्टी ले कर चले गये। चलते चलते वे एक जंगल में एक खाली जगह जा पहुँचे जहॉ जा कर उन्होंने आराम किया।

लोमड़े ने अपने साथियों से कहा — "अब हमको अपने मालिक के लिये एक बहुत अच्छा घर बनाना चाहिये।" सो सब जानवर राजकुमार के लिये मकान बनाने में लग गये।

भेड़िये ने पेड़ काटे। भालू ने उस लकड़ी को जिस तरीके की शक्लों में काटना चाहिये था उस शक्ल में काटा और उनको जोड़ा। गरुड़ उनको ले कर गया। और लोमड़े ने उनको सबको बताया कि फिर क्या करना है।

जब लकड़ी तैयार हो गयी तब वे मकान बनाने के लिये तैयार हुए। उन्होंने इतना सुन्दर मकान बनाया कि उसके जैसा मकान राजकुमार सपने में भी नहीं सोच सकता था। मकान तो बन कर तैयार हो चुका था पर अभी उसमें कोई फर्नीचर नहीं था।

लोमड़ा उठा और अपने साथियों को ले कर पास के शहर में गया। वहॉ जा कर वे बाजार गये और घर के लिये फर्नीचर देखा। अब फिर हर एक के करने लिये एक काम था।

लोमड़े ने सामान चुना। भेड़िये ने शटर बनाने का आर्डर दिया। भालू ये सब सामान उठा कर दरवाजे तक ले गया और गरुड़ उनको महल में ले गया।

उन्होंने वह सब सामान खरीदा जो एक महल के लिये जरूरी था – घर के बर्तन, कालीन, बड़े बड़े बर्तन आदि आदि। वे सब चीज़ें उन्होंने महल में ले जा कर सजा दीं। अब वहॉ किसी चीज़ की कमी नहीं थी।

दो हफ्ते गुजर चुके थे सो चारों घर गये। राजकुमार उस समय शिकार पर गया हुआ था पर वे उससे वहीं मिलने गये। उन्होंने जा कर उसको चारों तरफ से घेर लिया और उसको कहीं जाने न दें।

लोमड़ा ज़ोर से बोला — "हम तुम्हें हुक्म देते हैं कि तुम हमारे साथ आओ जिधर भी हम तुम्हें ले चलें।"

राजकुमार तो यह सुन कर डर गया। उसको यह पता ही नहीं था कि इस सबका क्या मतलब था। पर फिर भी उसको जाना पड़ा। थोड़ी ही देर में जब वे सब खुली जगह पहुँच गये। वह जगह एक दीवार से चारों तरफ से घिरी हुई थी जिसके पार कोई चिड़िया भी नहीं उड़ सकती थी।

उन्होंने उसके फाटक खोले और उसके अन्दर गये। जब राजा के बेटे ने वह सब देखा तो वह तो आश्चर्य से भौंचक्का रह गया। दीवार के अन्दर बहुत ही सुन्दर बागीचा था जिसमें कई फव्वारे पानी बिखेर रहे थे। और उनके बीच खड़ा था एक बहुत सुन्दर महल।

यह दिखा कर वे बोले — "यह हम सबने मिल कर तुम्हारे लिये दो हफ्ते में बनाया है। अब तुम इस मकान में खुशी खुशी आराम से रहो।"

राजकुमार तो यह सब देख कर बहुत खुश हुआ और लोमड़े का दिल से धन्यवाद किया। वहाँ रहते रहते फिर कुछ समय बीत गया।

अब लोमड़ा बोला — "अब मुझे लगता है कि मालिक के लिये एक बहुत अच्छी सी पत्नी ढूँढ दूँ।"

सो वह राजकुमार के पास गया और उसने उससे फिर से दो हफ्ते की छुट्टी मॉगी। राजकुमार ने तुरन्त ही उसको छुट्टी दे दी।

छुट्टी ले कर उसने एक स्ले[54] बनायी। उसने उसमें भालू और भेड़िया जोता और गरुड़ से कहा —

"तुम बहुत ऊँचे ऊपर उड़ जाओ और ज़रा ध्यान से देखते रहो। जब तुमको कोई बहुत सुन्दर राजकुमारी मिल जाये तो उसको अपने पंजों में पकड़ कर यहॉ ले आना।"

वह खुद उस स्ले में बैठ कर कोचवान का काम करने लगा। इस तरह से वे जगह जगह घूमते फिरे।

गॉवों में लोमड़े ने बिगुल बजाये भालू और भेड़िया कूदे और नाचे। उनका नाच कूद देखने के लिये बहुत सारी भीड़ जमा हो गयी। जब वे राजधानी में आये तो वहॉ सूरज की तरह से सुन्दर एक बहुत सुन्दर लड़की आयी।

गरुड़ ने उसको देखा तो तुरन्त ही उसको अपने पंजों में दबोचा और उड़ चला। भालू और भेड़िये भी अपने घर को लौट चले।

[54] Sledge or sleigh is a wheelless carriage which is used normally in snow covered regions and is drawn by horses or reindeers.See its picture above.

जब लोगों ने देखा तो वे भी उनके पीछे पीछे चले। लोमड़ा अपने साथियों से पीछे था। कुत्ते उसके पीछे भागे चले आ रहे थे। वे तो उसका शाल पकड़ने ही वाले हो रहे थे कि किसी तरह से वे सब उस सुन्दर राजकुमारी को ले कर अपने मालिक के पास अपने घर आ गये।

राजकुमार तो यह देख कर खुशी के मारे उछल ही पड़ा। उसके तो पैर ही जमीन पर नहीं पड़ रहे थे।

यह सब देख कर राजकुमारी का पिता बहुत गुस्सा था। उसने कहा — "जो कोई भी मेरी बेटी को ढूँढेगा और उसे मेरे पास वापस लायेगा मैं उसे अपना आधा राज्य दूँगा।" पर कोई उसका निशान भी नहीं पा सका।

आखिर एक बुढ़िया वहाँ आयी और बोली — "मैं अपकी बेटी को ढूँढ कर लाऊँगी।" कह कर वह उठी और चल दी।

आखिर वह राजकुमार के घर आयी और वहाँ आ कर पूछा — "क्या आपको कोई नौकरानी चाहिये। मैं बहुत कम पैसे में आपका काम कर दूँगी।"

लोमड़ा भेड़िया भालू गरुड़ यहाँ तक कि राजकुमारी ने भी उसको यह कह दिया कि उनको उसकी जरूरत नहीं थी। पर राजकुमार उनसे राजी नहीं था। उसने उसको नौकर रख लिया।

बुढ़िया ने काफी दिनों तक उनकी बड़ी वफादारी से सेवा की और उनको किसी तरह की कोई तकलीफ नहीं होने दी।

एक दिन जब राजकुमार सोया हुआ था तो बुढ़िया ने राजकुमारी से उसके साथ बागीचे में जाने के लिये कहा।

राजकुमारी जाना नहीं चाहती थी पर बुढ़िया उससे जिद करती रही जब तक कि वह राजी नहीं हो गयी। सो दोनों बागीचे में घूमने आ गयीं। दोनों फव्वारे के पास आयीं तो बुढ़िया ने उसको पानी पीने को दिया। राजकुमारी ने मना किया तो उसने उससे पीने की जिद की।

उसने पानी का एक बड़ा सा बर्तन राजकुमारी के होठों से लगा दिया। अचानक ही उसने राजकुमारी को निगल लिया। फिर बुढ़िया ने उसको अपने मुॅह से लगाया तो उसने उसको भी निगल लिया। अब बर्तन लुढ़क चला।

लोमड़ा यह सब देख रहा था। उसने उस बर्तन का पीछा भी किया पर वह जल्दी ही उसकी ऑखों से ओझल हो गया। लोमड़ा तुरन्त अपने मालिक के पास गया पर अब उससे कुछ कहने का कोई फायदा नहीं था।

उसने उससे फिर से दो हफ्ते की छुट्टी मॉगी उसने फिर से अपनी पुरानी तरह की स्ले बनायी उसने फिर से भालू और भेड़िये को उसमें जोता और खुद फिर से कोचमैन की जगह पर बैठ कर चल दिया।

अबकी बार उसके पंजों में तम्बूरीन्स थी। वह उसको बजाता था और भालू और भेड़िया नाचते थे। गरुड़ ऊपर

उड़ता हुआ इधर उधर राजकुमारी को ढूँढ रहा था। उस देश में बहुत सारे लोग यह नजारा देखने के लिये घर से बाहर आ गये।

राजा अपनी बेटी से बहुत नाराज था। जब राजकुमारी ने बाहर जाना चाहा तो राजा ने उससे कहा — "नहीं बाहर मत जाओ। बल्कि बाहर देखना भी नहीं।"

गरुड़ बहुत देर तक इधर उधर देखता रहा। आखीर में उसने एक खिड़की में से राजकुमारी की एक छोटी सी झलक देख ली। बस वह उस खिड़की से जा कर टकराया और उसको तोड़ दिया। राजकुमारी को अपने पंजों में पकड़ा और उड़ चला।

वह अपने साथियों से जा कर मिल गया और वे सब घर की तरफ चल पड़े। वे राजकुमारी को अपने मालिक के पास ले आये। उधर राजा ने अपनी सेना इकट्ठी की और उस बुढ़िया के साथ राजकुमार के महल भेज दिया।

लोमड़े ने दूर से उनको एक मक्खियों के झुंड की तरह आते देखा तो उसने गरुड़ को आसमान में पत्थर ले जाने के लिये कहा और कहा कि जब सेना आ जाये तो वे पत्थर वह उन आदमियों के ऊपर फेंक दे। लोमड़ा भालू और भेड़िया उन पर अलग से हमला कर देंगे और उनको सबको मार देंगे। ऐसा ही हुआ।

केवल एक आदमी बचा सो वे उस पर भी टूट पड़े और उस पर अपना एक पंजा रख कर उससे कहा — "जाओ और जा कर अपने राजा को बता दो कि उसके आदमियों पर क्या बीती है।"

वह आदमी अपने राज्य चला गया। जब राजा ने अपने केवल एक आदमी को वापस आते देखा और अपनी सेना के मारे जाने के बारे में सुना तो वह दुख से पागल हो गया।

उसने अपने राज्य के सारे बड़े बड़े पादरियों को बुलाया और उनको ले कर राजकुमार के महल ले गया। वे आये और उसके सामने घुटने टेक कर बैठ गये।

जब वे पास आये तो लोमड़े ने उनको देखा और अपने मालिक को बताया। राजकुमार उनसे मिलने के लिये दौड़ा गया और उनको उनके पैरों पर खड़ा किया। फिर वह उनको अपने घर में अन्दर ले गया। राजकुमारी का पिता और उनके दामाद ने फिर आपस में समझौता कर लिया और दोनों खुशी खुशी रहे।

लोमड़ा अपने मालिक से बोला — "मैं अब बूढ़ा हो रहा हूँ। मैं अब जल्दी ही मर जाऊँगा। आप मुझसे वायदा कीजिये कि आप मुझे एक मुर्गीखाने में दफ़नायेंगे।"

राजकुमार ने वायदा किया कि वह वैसा ही करेगा जैसा कि उसने उससे करने के लिये कहा है।

लोमड़े ने सोचा "मैं देखता हूँ कि मेरे मालिक अपना वायदा निभाते हैं या नहीं।" और वह ऐसा पड़ गया जैसे कि वह मर गया हो। राजकुमार ने जब उसकी लाश देखी तो उसने हुक्म दिया कि उसको ले जा कर बाहर जमीन में गाड़ दें।

इस पर लोमड़ा बहुत गुस्सा हुआ। वह कूद पड़ा और ज़ोर से चिल्लाया — "मेरी अच्छाइयों को क्या आप इसी तरह से याद रखेंगे। अब क्योंकि आपने ऐसा कर दिया है तो जब मैं मरूँगा तब आप सब पर मेरा शाप पड़ेगा आप सबका नामोनिशान तक मिट जायेगा।"

इसके कुछ समय बाद लोमड़ा मर गया। इसके बाद उसके वे शब्द सच हुए। वे सब मर गये। बस केवल भेड़िया भालू और गरुड़ ही वहॉ के मालिक रहे।

11 सूरज और चॉद की बेटी[55]

बूट पहने हुए बिल्ला जैसी यह लोक कथा हमने तुम्हारे लिये दक्षिणी अफ्रीका के अंगोला देश की लोक कथाओं से ली है। इस लोक कथा में एक मेंढक एक आदमी की शादी भगवान सूरज और रानी चॉद की बेटी से कराता है। देखो तो ज़रा कैसे? लो पढ़ो यह ऐसी लोक कथा अफ्रीका महाद्वीप से।

यह बहुत दिनों पुरानी बात है कि अफ्रीका के अंगोला देश में एक बहुत ही सुन्दर और बहादुर नौजवान रहता था जिसका नाम था किया–तुम्बा ऐनडाला[56]। वह एक सरदार का बेटा था और उस सरदार का नाम था किमानौऐज़े[57]।

गॉव की सारी लड़कियॉ उस नौजवान से शादी करना चाहती थीं। उसका पिता किमानौऐज़े भी चाहता था कि उसके बेटे की अब शादी हो जानी चाहिये सो वह बार बार किया से इस बारे में बात करता।

"मेरे बेटे, अब समय आ गया है जब तुमको शादी कर लेनी चाहिये सो अब तुम शादी कर लो और अपना परिवार बनाओ।

---

[55] The Daughter of the Sun and the Moon – a folktale from Mbundu Tribe, Angola, Central Africa. Taken from the book "African Folktales" by A Ceni. Its Hindi translation is available from : hindifolktales@gmail.com

[56] Kia-Tumba Ndala – name of the young man

[57] Kimanaueze – name of the Chief.

गाँव में बहुत सारी लड़कियाँ हैं। तुम उनको देखो और जो तुमको सबसे अच्छी लगे उससे शादी कर लो।"

पर हर बार किया कोई न कोई बहाना बना कर पिता की बात को या तो टाल जाता या फिर अनसुना कर देता।

आखिर एक दिन अपने पिता के लगातार कहने पर वह बोला — "पिता जी, मुझे इस धरती की किसी लड़की से शादी नहीं करनी।"

किमानौऐज़े को लगा कि शायद उसकी समझ में नहीं आया कि उसके बेटे ने क्या कहा सो उसने उससे फिर कहा — "तुमने क्या कहा बेटा? तुम किससे शादी करना चाहते हो?"

किया कुछ नाराजी से बोला — "मैंने कहा न पिता जी कि मुझे इस धरती की किसी लड़की से शादी नहीं करनी।"

यह सुन कर तो उसका पिता और भी आश्चर्य में पड़ गया और उससे पूछा — "तब तुम किससे शादी करना चाहते हो बेटा?"

"मुझे अगर शादी करनी ही पड़ी तो मैं भगवान सूरज और रानी चाँद की बेटी से शादी करूँगा।"

पिता बाला — "मेरे बेटे ज़रा ठीक से सोचो। हम लोग सूरज और चाँद की बेटी का हाथ माँगने के लिये स्वर्ग कैसे जा सकते हैं?"

"देखेंगे पिता जी। पर यह बात पक्की है कि मैं भगवान सूरज और रानी चॉद की बेटी के अलावा किसी और से शादी नहीं करूँगा।"

सारे गॉव ने जब यह सुना तो उन सबको यही लगा कि किसी ने उसके ऊपर जादू कर दिया है और इस जादू की वजह से उसकी अक्ल काम नहीं कर रही। उसका दिमाग काम नहीं कर रहा।

यहॉ तक कि उसके पिता ने भी फिर उससे शादी के बारे में बात करना बन्द कर दिया। पर किया–तुम्बा ने यह पक्का इरादा कर रखा था कि वह अगर शादी करेगा तो केवल भगवान सूरज और रानी चॉद की बेटी से ही करेगा और किसी से भी नहीं।

सो उसने भग्वान सूरज को एक चिट्ठी लिखी जिसमें उसने उनकी बेटी का हाथ मॉगा।

हाथ में वह चिट्ठी लिये हुए वह एक हिरन[58] के पास गया ताकि वह उसकी चिट्ठी सूरज के पास स्वर्ग ले जा सके पर हिरन ने अपना सिर ना में हिलाया और कहा — "मुझे अफसोस है किया कि मैं इतनी दूर नहीं जा सकता।"

किया फिर एक हिरनी[59] के पास गया पर उसने भी उसको मना कर दिया — "अफसोस किया मैं इतनी दूर ऊपर स्वर्ग में नहीं जा सकती।"

[58] Translated for the word "Deer"

[59] Translated for the word "Antelope" – see its picture above.

उसके बाद किया–तुम्बा एक बाज़[60] के पास गया तो अपने पर चौड़े चौड़े फैला कर उसने कहा — "मैं उतनी दूर तक उड़ तो सकता हूॅ पर मैं भगवान सूरज तक नहीं जा सकता।"

अन्त में वह एक गिद्ध[61] के पास पहुॅचा पर गिद्ध ने भी ऐसा ही कुछ कहा — "मैं आधी दूर तक तो जा सकता हूॅ पर पूरी तरह से वहॉ जाना यानी स्वर्ग में अन्दर जाना, नहीं नहीं मैं वहॉ तक नहीं जा सकता। यह मुश्किल काम है किया। अफसोस यह मैं नहीं कर सकता।"

इतने सारे जानवरों से ना सुनने के बाद किया काफी नाउम्मीद हो गया। उसको लगा कि यह शादी तो सचमुच में मुमकिन नहीं लगती सो उसने वह चिट्ठी एक बक्से में बन्द कर दी और उसके बारे में न सोचने की कोशिश की।

उधर भगवान सूरज और रानी चॉद की दासियॉ धरती पर किया–तुम्बा के गॉव के पास वाले कुॅए से पानी भरने के लिये आया करती थीं।

वहीं उस कुॅए में एक मेंढक रहता था। उसने उनको वहॉ से पानी ले जाते हुए कई बार देखा था। उस मेंढक को किया की इच्छा का भी पता था।

[60] Translated for the word "Hawk"

[61] Translated for the word "Vulture.

इसके अलावा वह किया को यह भी दिखाना चाहता था कि वह उसके लिये कितने काम का जानवर था सो उसके दिमाग में एक तरकीब आयी।

एक दिन वह किया के पास गया और बोला — "मुझे मालूम है कि तुमने अपनी शादी के लिये एक चिट्ठी लिखी है।"

किया बोला — "हॉ लिखी तो है। पर वह तो ऐसी ही है जैसे मैंने उसको लिखा ही न हो क्योंकि मुझे कोई ऐसा मिला ही नहीं जो उसको ऊपर स्वर्ग में ले जा सके।"

मेंढक बोला — "तुम उस चिट्ठी को मुझे दे दो मैं देखता हूॅ।"

किया कुछ शक के साथ बोला — "बेवकूफ मत बनो। क्योंकि जब उसको बड़े बड़े परों वाली चिड़ियें नहीं ले जा सकीं तो तुम कैसे ले कर जाओगे?"

मेंढक बोला — "मेरा विश्वास करो मुझे मालूम है कि मैं क्या कह रहा हूॅ। तुम देखना मैं तुम्हारे लिये क्या कर सकता हूॅ।"

किया–तुम्बा ने कुछ देर सोचा पर फिर यह सोच कर कि इसमें हर्ज ही क्या है उसका कोई नुकसान तो है नहीं उसने वह चिट्ठी ला कर मेंढक को दे दी और कहा — "याद रखना कि अगर तुम अपने इस काम में कामयाब नहीं हुए तो तुमको इसके लिये पछताना पड़ेगा।"

मेंढक ने इसकी कुछ ज़्यादा चिन्ता नहीं की और किया से कुछ ज़्यादा हील हुज्जत भी नहीं की। बस वह उस चिट्ठी को ले कर उस

कुॅए की तरफ चला गया जहॉ वह रहता था और भगवान सूरज और रानी चॉद की दासियॉ पानी भरने आया करती थीं।

उसने वह चिट्ठी अपने मुॅह में रखी और उसको मुॅह में रख कर वह कुॅए के पानी में कूद गया और जा कर वहॉ बिल्कुल चुपचाप बैठ गया।

कुछ देर बाद ही वहॉ भगवान सूरज और रानी चॉद की दासियॉ पानी भरने के लिये आयीं। वहॉ आ कर उन्होंने पानी भरने के लिये अपने अपने घड़े पानी में डुबोये और पानी भर कर उनको ऊपर खींच लिया।

पलक झपकते ही वे पानी ले कर स्वर्ग की तरफ उड़ चलीं। मेंढक भी चुपचाप एक घड़े में छिप कर बैठ गया और उनके पानी के साथ साथ उनके घड़े में बैठ कर स्वर्ग चला गया।

जब वे दासियॉ भगवान सूरज के घर पहुॅच गयीं तो उन्होंने पानी के घड़े उनकी जगह पर रख दिये और वहॉ से चली गयीं। एक बार जब मेंढक सूरज के घर में पहुॅच गया तो वह पानी के घड़े से बाहर कूद गया।

उसके बाद वह कमरे के बीच में रखी एक ऊॅची सी मेज पर कूद गया। वहॉ उसने किया की चिट्ठी निकाल कर मेज पर रखी और तुरन्त ही एक अॅधेरे कोने में जा कर छिप कर बैठ गया।

कुछ देर बाद भगवान सूरज वहॉ पानी पीने आये तो उन्होंने मेज पर रखी एक चिट्ठी देखी तो उन्होंने अपनी दासियों को बुलाया

और वह चिट्ठी दिखाते हुए उनसे पूछा — "और यह? यह कहाँ से आयी?"

वे डर कर बोलीं — "मालिक हमें नहीं पता कि यह चिट्ठी कहाँ से आयी। हमें सचमुच ही नहीं पता कि यह चिट्ठी कहाँ से आयी।"

भगवान सूरज ने कागज काटने वाला एक चाकू उठाया और उस चिट्ठी को खोल कर पढ़ा — "मैं किया-तुम्बा ऐनडाला, किमानौऐज़े का बेटा, धरती का एक आदमी, भगवान सूरज और रानी चाँद की बेटी से शादी करना चाहता हूँ।"

भगवान सूरज मुस्कुराये और सोचा — "ज़रा इन धरती के लोगों के स्वर्ग में आने के विचार तो देखो। यह किया तो बहुत ही बहादुर है। पर यह सन्देश लाया कौन होगा।"

भगवान सूरज ने कुछ कहा नहीं और वह चिट्ठी अपनी जेब में रख कर कमरे से बाहर चले गये।

इस बीच उनकी दासियाँ और पानी लाने के लिये कुँए पर वापस जाने वाली थीं कि कमरे में छिपा हुआ मेंढक उनके एक घड़े में फिर से छिप कर बैठ गया और इस तरह फिर धरती पर वापस पहुँच गया। तुरन्त ही वह किया के गाँव की तरफ चल दिया।

वह किया के घर पहुँचा और जा कर उसका दरवाजा खटखटाया। किया ने दरवाजा खोला तो मेंढक को सामने खड़ा देख कर उसने उससे पूछा — "प्रिय मेंढक, क्या तुम मुझसे यह कहने

आये हो कि तुमने मेरी चिट्ठी भगवान सूरज तक पहुँचा दी है या फिर मेरी मार खाने के लिये आये हो?"

मेंढक बोला — "मैंने तुम्हारी चिट्ठी भगवान सूरज तक पहुँचा दी है इसलिये तुम अपने मुझे मारने की तकलीफ को बचा कर रख सकते हो।"

किया ने पूछा — "अगर ऐसा है तो फिर तुम्हारे पास उसका कोई जवाब क्यों नहीं है?"

मेंढक बोला — "यह तो मुझे नहीं पता पर मुझे यह पता है कि तुम्हारी चिट्ठी सही आदमी के हाथ में पहुँच गयी है और उसने उसको पढ़ भी लिया है।

अगर तुम चाहते हो कि तुमको उसका जवाब मिले तो तुम एक और चिट्ठी लिख सकते हो जिसमें तुम भगवान सूरज को जवाब देने के लिये कहो। तुम्हारे लिये मैं उसको भी स्वर्ग ले जाने के लिये तैयार हूँ।"

किया–तुम्बा एक पल के लिये तो हिचकिचाया क्योंकि उसको डर था कि यह मेंढक शायद उसका मजाक बना रहा था पर फिर उसको भगवान सूरज और रानी चाँद की बेटी का ख्याल आया और उसने एक और कोशिश करने का निश्चय कर लिया।

वह बैठा और उसने एक और चिट्ठी लिखी — "मैं किया–तुम्बा ऐनडाला, किमानौऐज़े का बेटा, धरती का एक आदमी, ने आपको पहले आपकी बेटी का हाथ माँगने के लिये लिखा था।

चिट्ठी आपको भिजवा दी गयी थी पर मुझे अभी तक उसका कोई जवाब नहीं मिला है। इसलिये मैं यह जानने के लिये कि मेरा यह प्रस्ताव आपको मंजूर है कि नहीं मैं एक और चिट्ठी भेज रहा हूॅ। आशा है कि आप बताने की कृपा करेंगे।"

चिट्ठी लिख कर उसने अपने दस्तखत किये, उसको मोड़ा और बन्द कर के मेंढक को दे दिया। मेंढक फिर से उस कुॅए की तरफ चल दिया।

जब मेंढक कुॅए पर पहुॅचा तो पहले की तरह से उसने किया की चिट्ठी अपने मुॅह में रखी और कुॅए में कूद गया। वहॉ वह भगवान सूरज की दासियों के आने का इन्तजार करने लगा। कुछ देर बाद जब वे वहॉ पानी भरने आयीं तो वह मेंढक उनके घड़े में बैठ कर फिर से स्वर्ग चला गया।

वहॉ पहुॅच कर उसने फिर से मेज पर चिट्ठी रखी और अपने उसी अॅधेरे कोने में छिप कर बैठ गया। कुछ देर बाद भगवान सूरज वहॉ आये तो उन्होंने मेज पर फिर एक चिट्ठी रखी देखी। उन्होंने उसको भी उठाया, खोला और पढ़ा।

उस चिट्ठी को देख कर उनका आश्चर्य और बढ़ गया कि वे चिट्ठियॉ धरती पर से कौन ला रहा था सो उन्होंने अपनी दासियों को फिर से बुलाया और उनसे उस चिट्ठी के बारे में पूछा।

उन्होंने कहा — "तुम लोग पानी लाने के लिये हमेशा ही धरती पर जाती रही हो। क्या तुमने किसी को देखा जो ये चिट्ठियाँ वहाँ से यहाँ लाता है?"

यह सुन कर वे दासियाँ तो भगवान सूरज से भी ज़्यादा आश्चर्य में पड़ गयीं। वे एक साथ बोलीं — "नहीं तो। हमें तो इस बात का बिल्कुल ही पता नहीं है।"

यह सुन कर भगवान सूरज ने अपना सिर खुजलाया पर उनकी समझ में यह नहीं आया कि वे चिट्ठियाँ उनके पास तक पहुँच कैसे रही थीं। फिर भी उन्होंने एक कागज लिया और उस पर लिखा —

"तुम मुझे चिट्ठियाँ भेजते रहे हो। कैसे, यह मैं नहीं जानता। उन चिट्ठियों में तुमने मुझे लिखा था कि तुम मेरी बेटी से शादी करना चाहते हो। मैं तुमको उससे शादी करने की इजाज़त दे तो सकता हूँ पर इस शर्त पर कि तुम खुद यहाँ उसके लिये पहली भेंट ले कर आओ ताकि मैं यह देख सकूँ कि तुम किस तरह के आदमी हो।"

फिर उन्होंने उस चिट्ठी पर दस्तखत किये, उसको मोड़ा और बन्द कर के उसको वहीं मेज पर रख दिया। मेज पर चिट्ठी रख कर वह वहाँ से चले गये।

जैसे ही भगवान सूरज वहाँ से गये तो मेंढक अपनी जगह से निकला, मेज पर कूदा, चिट्ठी उठा कर अपने मुँह में रखी और एक घड़े में जा कर बैठ गया। जब भगवान सूरज की दासियाँ फिर से

पानी भरने के लिये धरती पर गयीं तो वह भी उनके साथ साथ धरती पर चला गया।

जब तक वे दासियॉ वहॉ से स्वर्ग गयीं तब तक वह वहीं छिप कर उनके जाने का इन्तजार करता रहा। जैसे ही वे स्वर्ग चली गयीं वह तुरन्त गॉव में किया के घर भाग गया।

किया ने दरवाजा खोला तो उसने भगवान सूरज की चिट्ठी उसको थमा दी। किया को तो अपनी अपनी ऑखों पर विश्वास ही नहीं हुआ कि वह भगवान सूरज के हाथ की लिखी चिट्ठी पढ़ रहा था।

किया खुश हो कर बोला — "इसका मतलब है कि तुम सच बोल रहे थे दोस्त मेंढक। मैं उनके लिये अभी जा कर पहली भेंट तैयार करता हूॅ ताकि तुम उसे भगवान सूरज के पास ले जा सको।"

सो उसने एक चमड़े का थैला लिया और उसमें सोने के चालीस सिक्के रखे और फिर एक और चिट्ठी लिखी —

"आदरणीय भगवान सूरज जी और रानी चॉद जी। यह आपको मेरी पहली भेंट है। मुझे अफसोस है कि मैं आपके पास खुद नहीं आ सकता। मुझे धरती पर ही ठहरना है क्योंकि मुझे अभी शादी की तैयारियॉ करनी हैं।"

और मेंढक किया की चिट्ठी और पहली भेंट ले कर पहले की तरह से फिर से स्वर्ग पहुॅच गया। उसने वह चिट्ठी और पैसों का थैला मेज पर रखा ओर जैसे गया था वैसे ही वापस आ गया।

इस तरह मेंढक कुछ समय तक किया और भगवान सूरज के बीच सन्देश लाता ले जाता रहा। किया की भेंटें ले जाता रहा।

इस तरह दिन दिन कर के एक महीना निकल गया फिर दूसरा महीना भी निकल गया और फिर आया वह दिन जिस दिन किया की शादी भगवान सूरज और रानी चॉद की बेटी से होनी थी।

पर किया–तुम्बा अपना मन पक्का नहीं कर पा रहा था क्योंकि उसको बहुत चिन्ता लगी थी। बारह दिन तक वह पलक तक नहीं झपका सका था। आखिर उसने मेंढक को बुलाया और उससे अपनी चिन्ता बतायी।

वह बोला — "दोस्त, मैं खुद तो अपनी पत्नी को लेने के लिये स्वर्ग जा नहीं सकता और न मैं किसी और को जानता हूँ जो उसको यहॉ धरती पर ला सके। मैं क्या करूँ?"

मेंढक तुरन्त ही बोला — "पर मैं तो हूँ। मैं वहॉ जाऊँगा और फिर पता लगाता हूँ कि उसको यहॉ कैसे लाया जा सकता है। तुम चिन्ता न करो।"

किया–तुम्बा को मेंढक के तसल्ली देने पर भी तसल्ली नहीं हुई। वह बोला — "पर तुम तो बहुत छोटे से हो तुम ऐसा कैसे कर सकते हो।"

पर मेंढक ने उसे विश्वास दिलाया — "तुम बिल्कुल चिन्ता न करो। तुम देखना कि मैं उसको यहॉ लाने का कोई न कोई रास्ता

उसी तरह से निकाल लूँगा जैसे मैंने तुम्हारी चिट्ठियॉ और भेंटें ले जाने का निकाला था।"

कह कर मेंढक फिर से उसी कुँए पर चला गया।

पहले की तरह से वह वहॉ से वह भगवान सूरज की दासियों की पानी के घड़े में बैठ कर स्वर्ग चला गया और जा कर अपने उसी कोने में बैठ गया जहॉ वह बैठा करता था और भगवान सूरज के सोने का इन्तजार करने लगा।

जब भगवान सूरज के सोने का समय आया तो सब जगह अँधेरा और शान्त हो गया। मेंढक अपनी जगह से निकला और भगवान सूरज की सुन्दर बेटी को ढूँढने चल दिया। उसने इधर देखा उधर देखा तो वह उसको गहरी नींद में सोती हुई मिल गयी।

वह चुपचाप उसके तकिये तक पहुँच गया। फिर उसने एक सुई धागा निकाला और उसकी पलकें सिलने लगा।

अब उस मेंढक के पास तो वह जादू की सुई धागा थे और दिखायी भी नहीं दे रहे थे। भगवान सूरज की बेटी को उसकी पलकों की सिलाई से कोई तकलीफ भी नहीं हुई। इसके अलावा उनकी सिलाई भी दिखायी नहीं दे रही थी।

जब उसने उसकी पलकें सिल दीं तो अब उनको कोई खोल भी नहीं सकता था।

जब वह लड़की अगले दिन सुबह उठी तो वह अपनी ऑखें ही नहीं खोल पायी। वह बहुत डर गयी और चिल्ला चिल्ला कर रोने लगी और सहायता के लिये पुकारने लगी।

रानी चॉद उसके कमरे में दौड़ी दौड़ी आयी और उससे पूछा — "बेटी क्या बात है क्या हो गया?"

बेटी बोली — "मॉ मुझे ऐसा लग रहा है जैसे मेरी ऑखों पर बहुत सारा बोझ रखा है। मैं तो अपनी ऑख ही नहीं खोल पा रही हूॅ। मुझे डर है कि कहीं मैं अन्धी तो नहीं हो गयी हूॅ।"

यह सब सुन कर भगवान सूरज भी वहॉ दौड़े दौड़े आ गये। उन्होंने भी देखा कि उनकी बेटी की ऑखें तो बन्द हैं।

वह बोले — "वैसे तो सब कुछ ठीक लग रहा है पर ऐसा लगता है कि किसी अनदेखी ताकत ने इसकी पलकों को नीचे कर रखा है। वह कौन सी ताकत हो सकती है? शायद कोई जादू। क्योंकि कल तक तो यह ठीक थी।"

रानी चॉद ने चॉदी के ऑसू बहाते हुए भगवान सूरज से पूछा —"तो अब हम क्या करें?"

भगवान सूरज बोले — "मैं अपने दो दूत अपने अक्लमन्द ओझा ऐनगोम्बो[62] के पास भेजता हूॅ। वह हमको बतायेगा कि हमें

[62] Translated for the word "Witch Doctor". Ngombo is his name. Witch doctors are those people who control some kind of witch to tell the future and to do some very difficult job, like Ojhaa in India

क्या करना है।" कह कर उन्होंने अपने दो नौकरों को बुलाया और उनको ऐनगोम्बो के पास धरती पर भेजा।

मेंढक वहीं बैठा यह सब सुन रहा था। वह तुरन्त ही एक घड़े में कूद गया और अपने पुराने तरीके से धरती पर पहुॅच गया। वह उन दूतों के पहुॅचने से पहले ही उस ओझा ऐनगोम्बो के घर पहुॅच गया। दूतों ने रास्ते में शहतूत की झाड़ियॉ देखीं तो वे कुछ देर तक वहीं रुक गये।

उधर वह ओझा अपने किसी काम से घर से बाहर गया हुआ था तो इस मौके का फायदा उठाते हुए मेंढक उसके घर में घुस गया और अन्दर से घर का दरवाजा बन्द कर लिया।

उस ओझा के घर में उसका मुखौटा[63] दीवार पर टॅगा हुआ था जिसको वह अपनी रस्में करते समय पहना करता था सो वह मुखौटा उस मेंढक ने पहन लिया।

कुछ ही देर में भगवान सूरज के दोनों दूत वहॉ आ पहुॅचे। उन्होंने ओझा के घर का दरवाजा खटखटाया तो मुखौटा पहने मेंढक ने अन्दर से पूछा — "कौन है?"

उसकी आवाज सारी झोंपड़ी में गूॅज गयी।

दोनों दूतों ने कहा — "हम भगवान सूरज के दूत हैं। क्या हम अन्दर आ सकते हैं?"

[63] Translated fr the word "Mask"

मेंढक जल्दी से बोला — "नहीं नहीं। तुम अभी अन्दर नहीं आ सकते। यह नामुमकिन है। मैं अभी एक बहुत जरूरी काम में लगा हूॅ। तुम लोग मुझे वहीं बाहर से ही बता दो कि भगवान सूरज को मुझसे क्या काम है।"

दूतों ने अन्दर आने की जिद नहीं की और उन्होंने उसको वहीं से बताया कि उनके मालिक की बेटी को क्या हुआ है। मेंढक ने शान्ति से उनकी बात सुनी जैसे कि वह उनकी बातें बड़े ध्यान और रुचि से सुन रहा था।

फिर वह कुछ देर चुप रहा जैसे वह कुछ सोच रहा हो और फिर उसी आवाज में बोला — "इसमें कोई शक नहीं है कि लड़की बीमार है और वह इसलिये बीमार है क्योंकि उसका होने वाला पति स्वर्ग जा कर उसको धरती पर नहीं ला सकता।

यह तो एक ऐसा जादू है जिसको सभी जानते हैं। यह तो बहुत पुराना और बहुत ही ताकतवर जादू है। यह कहता है कि "भगवान सूरज और रानी चॉद की बेटी तुम जल्दी से मेरे पास आ जाओ नहीं तो तुम हमेशा के लिये रात के अॅधेरे में डूब जाओगी।

और तुम दोनों जल्दी से यहॉ से भाग जाओ और अपने मालिक से कहो कि वह अपनी बेटी को जल्दी से जल्दी धरती पर भेजने का इन्तजाम करें वरना मौत से बचने का और कोई रास्ता नहीं है।"

यह सुन कर भगवान सूरज के नौकर तो तुरन्त ही भगवान सूरज के पास दौड़ गये और उनको जा कर जो कुछ भी ऐनगोम्बो ने कहा था वैसा का वैसा ही बता दिया।

इधर उन दूतों के जाने के बाद मेंढक किया के घर दौड़ा गया।

"किया–तुम्बा, किया–तुम्बा। अब तुम जल्दी से तैयार हो जाओ तुम्हारी होने वाली दुलहिन बस यहॉ कभी भी आने वाली होगी।"

दुखी किया–तुम्बा घर से बाहर निकल कर आया और मेंढक से पूछा — "यह कैसे मुमकिन है दोस्त? क्या तुम मेरा बेवकूफ बना रहे हो? मेंढक तुम चले जाओ यहॉ से। मुझसे झूठ नहीं बोलो।"

मेंढक बोला — "पर तुम मेरे कहने का विश्वास तो करो। देख लेना शाम होने से पहले पहले तुम्हारी होने वाली दुलहिन यहॉ मौजूद होगी।"

और किया–तुम्बा को जवाब देने का समय दिये बिना ही वह फिर से उसी कुॅए पर चला गया जहॉ सूरज भगवान की दासियॉ पानी भरने के लिये आती थीं। और उसके पानी में कूद कर वहॉ उनका इन्तजार करने लगा।

असल में तो मेंढक ने यह पहले ही देख लिया था कि जैसे ही भगवान सूरज के दूतों ने जा कर भगवान सूरज को उसका सन्देश दिया भगवान सूरज ने अपनी बेटी को धरती पर भेजने का इन्तजाम करना शुरू कर दिया था।

उन्होंने तुरन्त ही मकड़े को हुक्म दिया कि वह स्वर्ग से ले कर धरती तक एक बहुत ही लम्बा और मजबूत जाला तैयार करे जिस पर से उनकी अन्धी बेटी उतर कर नीचे धरती पर जा सके। मकड़े ने वैसा ही किया।

और लो। जब शाम होने लगी तो मकड़े का जाला ऊपर से नीचे लटकाया गया और भगवान सूरज की सुन्दर बेटी अपनी दासियों के साथ नीचे धरती पर उतरी।

उसकी दासियों ने उसको कुँए के पास बिठा दिया। उसके बाल सँवारे। उसको तसल्ली दी और उसको वहाँ शान्ति से इन्तजार करने के लिये कहा। उसके बाद वे स्वर्ग वापस चली गयीं।

जैसे ही भगवान सूरज की बेटी वहाँ अकेली रह गयी मेंढक पानी में से बाहर निकला और उसके पास आ कर बोला — "तुम डरो नहीं। मैं तुम्हें तुम्हारे होने वाले दुलहे के पास ले चलूँगा।"

उसने अपना छोटा सा जादू का चाकू निकाला और उससे उसकी आँखों का वह धागा काटना शुरू किया जिससे उसने उसकी पलकों को पहले सिला था और जिसे केवल वही देख सकता था। जब वह दोनों आँखों के धागे काट चुका तो उसको दिखायी देखने लगा।

अब वे दोनों किया–तुम्बा के गाँव की तरफ चले। वे किया–तुम्बा की झोंपड़ी के दरवाजे के सामने आये और मेंढक ने उसका

दरवाजा खटखटाया। किया–तुम्बा बाहर आया तो मेंढक बोला — "यह लो अपनी दुलहिन।"

किया–तुम्बा तो उस लड़की सुन्दरता देख कर दंग रह गया। उसके मुँह से तो कोई शब्द ही नहीं निकला। मेंढक को धन्यवाद की जरूरत नहीं थी सो वह सबकी नजर बचा कर वहॉ से गायब हो गया।

इस तरह से धरती के एक बेटे ने भगवान सूरज और रानी चॉद की बेटी से शादी की और फिर वे दोनों ज़िन्दगी भर खुशी खुशी साथ साथ रहे।

12 शादी कराने वाला गीदड़[64]

बूट पहने हुए बिल्ला जैसी यह लोक कथा एशिया महाद्वीप के भारत देश से ली गयी है। यह वहॉ के बंगाल प्रान्त की एक बहुत ही लोकप्रिय लोक कथा है। तो लो तुम भी पढ़ो यह लोक कथा अब हिन्दी में।

एक बार की बात है कि एक जगह एक जुलाहा[65] रहता था जिसके पुरखे तो बहुत अमीर थे पर उसके पिता ने उनका सारा पैसा अपने शान से रहने की वजह से गॅवा दिया था।

हालॉकि वह एक महल जैसे घर में पैदा हुआ था पर अब वह एक बहुत ही छोटी सी झोंपड़ी में रहता था। उसका दुनियॉ में कोई नहीं था। उसके माता पिता और सगे सम्बन्धी सभी मर गये थे।

उसकी झोंपड़ी के पास ही एक गीदड़ की मॉद थी। गीदड़ को उस जुलाहे के पुरखों की शान की याद करते हुए उस जुलाहे से बड़ी हमदर्दी थी।

एक दिन वह उसके पास आया और बोला — "जुलाहे भाई, मैं देख रहा हूॅ कि तुम कैसी बुरी ज़िन्दगी बिता रहे हो। तुम्हारी इस तरह की ज़िन्दगी को सुधारने का मेरे पास एक तरीका है। मैं

---

[64] The Match-Making Jackal – a folktale from India, Asia. Taken from the book : "Folk-tales of Bengal", by Lal Behari Dey. 1883. 22 Tales. Its Hindi translation has been published by National Book Trust, Delhi. 2020.

[65] Translated for the word "Weaver"

कोशिश करता हूँ कि मैं तुम्हारी शादी इस देश के राजा की बेटी से करा दूँ।"

जुलाहा बोला — "तो मैं राजा का दामाद[66] बन जाऊँगा? हा हा हा हा। यह तो तभी मुमकिन होगा गीदड़ भाई जब सूरज पश्चिम में उगेगा।"

गीदड़ बोला — "तुम मेरी ताकत पर शक कर रहे हो? तुम मेरी ताकत का अन्दाजा नहीं लगा पा रहे हो जुलाहे भाई। तुम देखना मैं यह कर के ही रहूँगा।"

अगली सुबह गीदड़ राजा के महल की तरफ रवाना हो गया जो वहाँ से मीलों दूर था। रास्ते में वह एक पान के बागीचे में घुसा और वहाँ से उसने बहुत सारे पान के पत्ते तोड़े और फिर महल की तरफ चल दिया।

महल पहुँच कर वह उसके अन्दर घुस गया। वहाँ उसने देखा कि महल के बीच में एक तालाब है। उस तालाब में महल की स्त्रियाँ सुबह शाम नहाती थीं और अपनी पूजा करती थीं।

गीदड़ तालाब तक जाने वाले रास्ते के दरवाजे पर लेट गया। उसी समय राजा की बेटी अपनी दासियों के साथ वहाँ नहाने के लिये आयी तो उसने देखा कि एक गीदड़ तालाब के दरवाजे पर लेटा हुआ है।

[66] Translated for the word "Son-in-Law" – husband of the daughter.

यह देख कर उसे बड़ा आश्चर्य हुआ और उसने अपनी दासियों को उसे वहॉ से भगाने के लिये कहा।

जब राजकुमारी की दासियों ने उसको भगाने के लिये उठाया तो वह ऐसे उठा जैसे वह सोते हुए से जागा हो। पर बजाय वहॉ से भागने के उसने अपने पान के पत्तों की पोटली खोली और उसमें से कुछ पान के पत्ते अपने मुँह में डाल कर चबाने लगा।

राजकुमारी और उसकी दासियों को यह देख कर बड़ा आश्चर्य हुआ।

वे सब आपस में बोलीं — "अरे यह किस किस्म का गीदड़ है? यह किस देश से आया हो सकता है? एक गीदड़ पान खाता हुआ? जब यह गीदड़ पान खा सकता है तो इस देश के हजारों लोग यह काम क्यों नहीं कर सकते? यह जरूर ही किसी अमीर देश से आया होगा।"

यह देख कर राजकुमारी ने गीदड़ से पूछा — "शिवालू[67], तुम किस देश से आये हो? खैर तुम जिस देश से भी आये हो वह जरूर ही कोई बहुत अमीर देश होगा जहॉ के गीदड़ भी पान खाते हैं। क्या तुम्हारे देश में दूसरे जानवर भी पान खाते हैं?"

गीदड़ बोला — "मेरी प्यारी राजकुमारी? मैं एक ऐसे देश से आता हूँ जिस देश में दूध और शहद बहता है। पान के पत्ते तो मेरे

[67] Shivalu is the name for the jackal, as Reynard is in Europe

देश में चारों तरफ ऐसे फैले पड़े हैं जैसे तुम्हारे यहाँ घास फैली पड़ी है। मेरे देश में सारे जानवर – गाय भेड़ कुत्ते सभी पान खाते हैं। इससे अच्छी चीज़ तो वहाँ किसी को चाहिये ही नहीं।"

राजकुमारी बोली — "तुम्हारा देश बहुत ही खुश देश है शिवालू जहाँ इतनी खुशहाली है और तुम्हारा राजा तो इससे भी तिगुना खुशहाल है जो ऐसे देश का राजा है।"

गीदड़ बोला — "जहाँ तक हमारे राजा का सवाल है वह तो दुनियाँ का सबसे अमीर राजा है। उसका महल तो देवताओं के राजा इन्द्र के महल जैसा है। मैंने आपका महल भी देखा है। यह तो उसके सामने एक छोटी सी झोंपड़ी के बराबर लगता है।"

यह सुन कर तो राजकुमारी की उत्सुकता बहुत बढ़ गयी। वह जल्दी से नहायी और महल में रानी माँ के कमरे में पहुँची। वहाँ जा कर उसने उनको उस आश्चर्यजनक गीदड़ के बारे में बताया जो उस तालाब के रास्ते के दरवाजे पर लेटा हुआ था।

यह सुन कर रानी माँ की उत्सुकता भी बहुत बढ़ गयी सो उन्होंने उस गीदड़ को अपने पास बुला भेजा। जब गीदड़ रानी माँ के पास पहुँचा तो उसने वहाँ भी पान खाना शुरू कर दिया।

रानी माँ ने उससे कहा — "लगता है कि तुम किसी खुशहाल देश से आये हो शिवालू। क्या तुम्हारे राजा की शादी हो गयी है?"

गीदड़ बोला — "योर मैजेस्टी, हमारे राजा की अभी शादी नहीं हुई है। वह अभी कुँआरे ही हैं। दूर दूर देशों की बहुत सारी

राजकुमारियों ने उनसे शादी करने की इच्छा प्रगट की पर उन्होंने सबको मना कर दिया। वही राजकुमारी खुशकिस्मत और खुश होगी जिससे हमारे राजा शादी करेंगे।"

रानी मॉ फिर बोली — "ओ शिवालू, क्या तुमको ऐसा नहीं लगता कि मेरी बेटी एक परी[68] की तरह सुन्दर है और वह दुनियॉ के सबसे बड़े राजा की पत्नी बनने के लायक है?"

गीदड़ बोला — "मैं भी यही सोचता हूॅ योर मैजेस्टी कि राजकुमारी तो बहुत सुन्दर है। वास्तव में मैंने तो इतनी सुन्दर राजकुमारी पहले कभी देखी नहीं पर मैं यह नहीं कह सकता कि हमारे राजा इनको पसन्द करेंगे या नहीं।"

"तुमने क्या कहा शिवालू कि तुम्हारे राजा इनको पसन्द करेंगे या नहीं? तुम बस इनको उनको इसी तरह से बताना जैसी यह हैं। मुझे यकीन है कि इनके बारे में सुन कर वह इनके प्यार में पागल हो जायेंगे।

मैं अपनी बेटी की शादी जल्दी से जल्दी कर देना चाहती हूॅ शिवालू। इसके लिये भी बहुत सारे राजकुमार इसका हाथ मॉगने आये पर मैंने ही उन सबको मना कर दिया क्योंकि वे बड़े राजाओं के बेटे नहीं थे।

पर तुम्हारे राजा मुझे बड़े राजा लगते हैं। मुझे उनको अपना दामाद बनाने में कोई ऐतराज नहीं है।"

[68] Translated for the word "Fairy".

यह कह कर रानी मॉ ने गीदड़ से मिलने के लिये राजा को भी वहीं बुला लिया। राजा आया और गीदड़ से मिला तो गीदड़ ने अपने देश के राजा के पैसे का और उनकी खुशहाली का बखान किया तो उसने सोचा कि वह अपनी बेटी उस राज्य के राजा को दे देगा।

यह सब सुन कर गीदड़ जुलाहे के पास वापस आया और बोला — "ओ खड्डियों[69] के मालिक, आज तुम दुनियॉ के सबसे ज़्यादा खुशकिस्मत आदमी हो। सब कुछ तय हो गया है और बस अब तुम बहुत जल्दी ही एक बहुत बड़े राजा के दामाद बनने वाले हो।

मैंने उनसे कह दिया है कि तुम खुद एक बहुत बड़े राजा हो सो अब आगे से तुम एक राजा की तरह से ही बर्ताव करना। जैसा मैं कहूँ तुम वैसा ही करना वरना केवल तुम्हारी ही खुशकिस्मती तुमसे दूर नहीं भागेगी बल्कि साथ में मैं भी मारा जाऊँगा।"

जुलाहा बोला — "ठीक है अब जैसा तुम कहोगे मैं वैसा ही करूँगा।"

चालाक गीदड़ ने अपने दिमाग में एक प्लान बना रखा था कि उसको इस जुलाहे की उस राजा की बेटी से शादी कराने का क्या तरीका इस्तेमाल करना है।

[69] Translated for the word "Loom". See its picture above.

कुछ दिन बाद गीदड़ फिर से राजा के महल में उसी तरह से गया जैसे वह पहले गया था – यानी पान खाते हुए महल के तालाब के दरवाजे पर सोते हुए।

राजा और रानी उसको देख कर बहुत खुश हुए। उन्होंने उससे पूछा कि उनके सन्देश का क्या हुआ। गीदड़ बोला — "आप यह सुन कर बहुत खुश होंगे कि हमारे राजा साहब इस शादी के लिये तैयार हो गये हैं।

पर आपकी बेटी से शादी करने के लिये मुझे उनकी कितनी मिन्नतें करनी पड़ीं यह मैं आपको नहीं बता सकता। उसके लिये तो आप मुझे धन्यवाद देते देते नहीं थकेंगे।

काफी देर तक तो वह माने ही नहीं पर काफी देर के बाद मैं उनको रास्ते पर ला सका। बस अब तो आप कोई अच्छा सा दिन देख कर शादी की रस्म का मुहूर्त निकलवा लें।

हॉ एक छोटी सी सलाह और है जो मैं आपको आपके दोस्त होने के नाते देना चाहूँगा।

वह यह कि मेरे मालिक एक इतने बड़े राजा हैं कि अगर वे आपके सामने अपने शाही ढंग से सारी जनता को साथ ले कर आयेंगे – यानी घोड़े हाथी आदि, तो उन सबको आपको अपने महल या शहर में सॅभालना मुश्किल हो जायेगा।

इसलिये मैं आपको यही सलाह दूँगा कि आप उनसे कहें कि वे यहॉ अपने शाही ढंग से न आयें बल्कि एक दामाद की हैसियत से ही आयें।

इसके अलावा आप अपने थोड़े से घोड़े हाथी और सवारियॉ उनको लाने के लिये शहर के बाहर ही भेज दें। वे उनको वहॉ से यहॉ आपके महल में ले आयेंगे।"

राजा बोला — "तुम्हारी इस सलाह के लिये शिवालू तुमको बहुत बहुत धन्यवाद। तुम ठीक कह रहे हो शायद मैं इतने बड़े राजा के लिये जितने बड़े तुम्हारे मालिक हैं अपने शहर में जगह न बना सकूँ।

मुझे बहुत खुशी होगी अगर वह अपने शाही तरीके से यहॉ न आयें तो। और मुझे तुम्हारे ऊपर भी पूरा विश्वास है कि तुम अपनी तरफ से भी उनसे यह कहोगे कि वे यहॉ अपने शाही ढंग से न आयें। क्योंकि अगर वह अपने शाही ढंग से आये तो मैं तो बर्बाद हो जाऊँगा।"

गीदड़ ने गम्भीर हो कर कहा — "मैं अपनी पूरी कोशिश करूँगा योर मैजेस्टी कि वह केवल आपके दामाद की तरह ही आयें शाही ढंग से न आयें।"

इसके बाद शाही ज्योतिषी ने शादी की तारीख निकाल दी और गीदड़ अपने गॉव लौट गया।

वहॉ से लौटने के बाद अब गीदड़ शादी की तैयारी में लग गया। क्योंकि जुलाहा तो फटे पुराने कपड़ों में ही रहता था सो उसने उसको गॉव के धोबी के पास जाने के लिये कहा और उससे उसके पास जो सबसे अच्छे कपड़े थे उधार लाने के लिये कहा।

अपने लिये वह गीदड़ों के राजा के पास गया और उससे कहा कि उसको एक हजार गीदड़ फलॉ दिन के लिये एक खास जगह तक उसके साथ जाने के लिये चाहिये।

फिर वह कौओं के राजा के पास गया और इसी तरह उससे भी एक हजार काले कौए एक दिन के लिये एक खास जगह तक उसके साथ जाने के लिये मॉगे। ऐसा ही उसने धान के खेतों की चिड़ियों के साथ किया।

आखिर वह बड़ा दिन आ पहुॅचा जब जुलाहे की शादी होने वाली थी। जुलाहे ने अपने गॉव के धोबी से उधार लाये हुए कपड़े पहने। गीदड़ उसको एएक हजार गीदड़ एक हजार कौए और एक हजार धान के खेत की चिड़ियों के साथ उसकी ससुराल ले चला।

बारात चली तो शाम को ही राजा के महल से दो मील दूर पहुॅची।

वहॉ पहुॅच कर गीदड़ ने अपने दोस्तों यानी एक हजार गीदड़ों से एक हजार कौओं से और एक हजार धान के खेत वाली चिड़ियों से कहा कि वे सब अपनी अपनी आवाजों में सबसे ऊॅची आवाज में बोलें।

उन्होंने ऐसा ही किया तो उसका क्या असर हुआ होगा यह तो बस सोचा ही जा सकता है। उनका वह शोर तो ऐसा था कि किसी ने जबसे यह दुनियॉ बनी थी अब तक सुना ही नहीं होगा।

जब यह आवाज हो रही थी गीदड़ महल की तरफ भागा गया और राजा से पूछा कि क्या वह बारात को ठहराने के लिये तैयार था जो कि वहॉ से दो मील की दूरी पर थी और जिसकी आवाज वह इस समय सुन रहा था।

राजा बोला — "यह तो बिल्कुल नामुमकिन है शिवालू। इस बारात की आवाज से तो मुझे लग रहा है कि राजा साहब की बारात में कम से कम एक लाख लोग तो होंगे। इतने सारे मेहमानों को मैं यहॉ कैसे ठहरा सकता हूॅ। मेहरबानी कर के कुछ ऐसा करो कि केवल दुलहा ही यहॉ आये।"

"ठीक है। मैं कोशिश करता हूॅ। मैंने आपसे पहले ही कहा था कि आप मेरे मालिक के शाही मेहमानों को यहॉ नहीं ठहरा पायेंगे। मैं वैसा ही करने की कोशिश करता हूॅ जैसा आप कह रहे हैं।

मेरे मालिक यहॉ अकेले ही आयेंगे। आप उनके लिये बस एक घोड़ा भेज दीजिये।" राजा ने उसको एक घोड़ा दे दिया।

गीदड़ एक घोड़े और घुड़सवार के साथ अपने दोस्त जुलाहे के पास आया।

वहॉ आ कर उसने अपने दोस्तों यानी एक हजार गीदड़ों से हजार कौओं से और एक हजार धान के खेत वाली चिड़ियों को

उनकी सेवाओं के लिये धन्यवाद दिया और उनसे कहा कि वे सब अब वापस जा सकते थे। जबकि वह खुद और जुलाहा दोनों घोड़े पर सवार हो कर राजा के महल को चले।

दुलहिन और उसकी सहेलियॉ सब बारात का इन्तजार कर रही थीं पर जब उन्होंने दुलहे को देखा तो वे दुलहे के पहनावे को देख कर बहुत ही नाउम्मीद हुईं तब गीदड़ ने उनको बताया कि दुलहा ऐसी खराब पोशाक किसी मतलब से पहन कर आया है।

उसने उनको बताया कि क्योंकि उसके ससुर ने यह कह दिया था कि वह दुलहे और उसके लोगों को अपने शहर में नहीं ठहरा सकते इसी लिये वह इस तरह से आया है।

दुलहे के आते ही शाही पुजारियों ने शादी की रस्में शुरू कीं और दोनों का गॅठबन्धन हमेशा के लिये हो गया। गीदड़ के कहे अनुसार दुलहा इस बीच कुछ नहीं बोला कि कहीं ऐसा न हो कि उसकी बोली कहीं उसको धोखा दे जाये।

रात को जब वह बिस्तर में लेटा हुआ था तो उसने छत की शहतीरें[70] गिननी शुरू कर दीं और ज़ोर से बोला ताकि पास वाले लोग उसको सुन लें कि इस शहतीर से तो बहुत ही बढ़िया खड्डी बनेगी। और वह जो बड़ा वाला शहतीर है उसका तो कपड़ा बुनने वाला औजार बहुत अच्छा बनेगा।

[70] Translated for the word “Beam”. See its picture aove.

यह सुन कर राजकुमारी यानी उसकी पत्नी तो दंग रह गयी कि वह कह क्या रहा था।

उसने सोचा "क्या यह आदमी जिससे मेरी शादी हुई है कोई राजा है या जुलाहा है। मुझे तो लगता है कि यह जुलाहा है नहीं तो यह शहतीर खड्डी और कपड़ा बुनने वाले औजार की बात क्यों करता। आह मेरी किस्मत में क्या यही लिखा था।"

सुबह को उसने रानी मॉ से जुलाहे की कही हुई बातें कहीं तो राजा और रानी तो दंग रह गये।

उन्होंने गीदड़ को बुलाया और उसको यह सब बताया तो तुरत जवाब देने वाले गीदड़ ने कहा — "योर मैजेस्टी को मेरे मालिक की इस बात पर आश्चर्य प्रगट नहीं करना चाहिये।

मेरे मालिक की राजधानी के चारों तरफ सात सौ परिवार रहते हैं। वे सभी दुनियॉ के सबसे अच्छे जुलाहे हैं। इन्होंने उनको वह जमीन मुफ्त दे रखी है। उसका ये उनसे कोई किराया नहीं लेते और हमेशा उनकी खुशहाली के बारे में ही सोचते रहते हैं।

सो इसी मूड में उन्होंने शायद वे सब बातें कही होंगी जिन्होंने योर मैजेस्टी को आश्चर्य में डाल दिया।"

पर गीदड़ को अब लगा कि अब उसको और जुलाहे दोनों को राजकुमारी को वहॉ से ले कर अपने घर चलना चाहिये नहीं तो उसके दोस्त जुलाहे की ऐसी बातें किसी भी पल उसको खतरे में डाल सकती हैं।"

सो अगले ही दिन गीदड़ राजा के पास गया और बोला कि उसके मालिक के पास उसके राज्य में और बहुत काम है सो अब वे वहॉ एक दिन भी ज़्यादा नहीं ठहर सकते। उनको उसी दिन राजकुमारी के साथ वापस जाने की इजाज़त दी जाये।

इसके साथ उसके मालिक छिप कर पैदल ही अपने राज्य जाना चाहेंगे ताकि उन्हें कोई पहचान न सके। हॉ राजकुमारी जो अब रानी थी पालकी में जा सकती थीं।

काफी ना नुकुर के बाद राजा और रानी ने गीदड़ की इस बात को मान लिया। जब सब जुलाहे के गॉव के बाहर तक आ गये तो राजकुमारी की पालकी के कहारों को वापस उनके देश भेज दिया गया।

राजकुमारी ने पालकी से उतर कर पूछा कि उसके पति का महल कहॉ हे तो वह पैदल चलने पर मजबूर की गयी।

वे लोग जल्दी ही जुलाहे की झोंपड़ी तक आ गये। गीदड़ ने राजकुमारी से कहा — "मैम यह आपके पति का महल है।"

यह देख सुन कर राजकुमारी तो बहुत निराश हो कर अपने हाथों से अपना सिर पीटने लगी — "आह, प्रजापति[71] ने क्या यह पति मेरी किस्मत में लिखा है, इससे तो मौत मेरे लिये हजार गुना बेहतर होती।"

[71] Prajaapati means Brahmaa Jee, one of the tri-gods (Brahmaa, Vishnu, Shiv) who has created this world and writes everybody's fate.

पर अब राजकुमारी के लिये और कोई चारा नहीं था तो उसने अपनी किस्मत से ही मेल कर लिया। पर उसने निश्चय किया कि वह अपने पति को अमीर बना कर ही रहेगी। क्योंकि वह अमीर बनने का रास्ता जानती थी।

एक दिन उसने अपने पति से एक पैसे का आटा मॅगवाया। उसने उसमें थोड़ा सा पानी मिलाया और उसको अपने शरीर पर मल लिया।

जब वह उसके शरीर पर सूख गया तो उसने उसको अपनी उॅगलियों से मल मल कर वहॉ से झाड़ दिया। वह आटा छोटी छोटी बत्तियों के रूप में नीचे गिर पड़ा। जमीन पर गिरते ही वह सारी बत्तियॉ सोने की बत्तियों में बदल गयीं।

ऐसा उसने कुछ दिनों तक रोज किया जिससे उसके पास काफी सोना इकट्ठा हो गया। अब तो उसके पास और बहुत सारे राजाओं के खजानों से कहीं ज़्यादा सोना हो गया।

इस सोने से उसने बहुत सारे राज[72] बढ़ई मजदूर आदि लगा कर दुनियॉ का सबसे सुन्दर महल बनवाया। सात सौ सबसे अच्छे जुलाहों के परिवार ढूॅढे और उनको महल के चारों तरफ रहने के लिये जगह दी गयी।

इसके बाद उसने अपने पिता को एक चिट्ठी लिखी जिसमें उसने उनको लिखा कि उसको बहुत दुख है कि जिस दिन से उसकी शादी

[72] Translated for the word “Mason” – who builds buildings.

हुई है वह उसको देखने भी नहीं आये हैं। अगर वह उससे और उसके पति से आ कर मिलें तो उसे बहुत खुशी होगी।

राजा राजी हो गया और एक दिन तय कर लिया गया। राजकुमारी ने अपने पिता के आने के दिन के लिये बहुत तैयारी की।

शहर के कई हिस्सों में बीमार जानवरों के लिये कई अस्पताल बनवाये गये। हजारों जंगली जानवर रास्ते पर पान खाते हुए दिखाये गये। उसके पिता और उनके नौकरों के चलने के लिये वहॉ की सड़कें कैशमीर[73] के बने हुए शालों से ढकी गयीं।

पैसा और शानो शौकत दिखाने का कोई अन्त नहीं था। राजा और रानी अपने शाही तौर पर आये और अपने दामाद की बेइन्तहा दौलत देख कर बहुत खुश हुए।

अब गीदड़ आया और राजा और रानी को सलाम करता हुआ बोला — "क्या मैंने यह सब आपसे नहीं कहा था?"

[73] This Cashmere is different from Kashmir. Cashmere is a kind of cloth while Kashmir is one of the Provinces of India.

13 होशियार गीदड़[74]

गीदड़ की शादी कराने की एक और लोक कथा। यह लोक कथा हमने तुम्हारे लिये एशिया महाद्वीप के भारत देश के काश्मीर प्रान्त में कही जाने वाली लोक कथाओं से ली है।

यह समय खेतों में हल चलाने का था सो एक किसान जल्दी ही अपने खेतों में हल चलाने के लिये घर से निकला और अपनी पत्नी से कहता गया कि वह जल्दी से उसका खाना ले कर खेत पर आ जाये।

सो जब उसका चावल तैयार हो गया तो वह उसको अपने पति के लिये ले कर खेत की तरफ चल दी। खेत पर पहुॅच कर उसने खाना उससे कुछ दूरी पर रखा और बोली — "यह रहा तुम्हारा खाना। मैं अभी यहॉ ठहर नहीं सकती सो मैं जा रही हूॅ।"

किसान बोला "ठीक है।" और अपने काम में लग गया। कुछ देर बाद वह खाना खाने आया तो उसने देखा कि उसके खाने का बरतन तो खाली पड़ा है। वह इस बात पर बहुत गुस्सा हुआ।

जब वह शाम को अपने घर वापस पहुॅचा तो उसने अपनी पत्नी को इस तरह की चाल खेलने पर बहुत डॉटा। पर उसने सोचा कि

---

[74] The Clever Jackal – a folktale of Kashmir, India.
Taken from the book "Folk-Tales of Kashmir", by James Hinton Knowles. 2nd ed. 1887. Hindi translation of this book is available from hindifolktales@gmail.com

शायद वह उससे झूठ बोल रहा होगा। यह सोच कर वह बहुत दुखी हुई।

अगले दिन जब किसान फिर से खेत पर जाने लगा तो उसने फिर अपनी पत्नी से वही कहा कि वह उसका खाना खेत पर ले आये और उसको कुत्ते की तरह भूखा न मारे।

उस दिन वह एक बड़ी सी हॅडिया में पिछले दिन से दोगुना चावल उसके लिये ले कर गयी और फिर से खेत में रख कर बोली — "देखो यह तुम्हारा खाना रखा है। अब मत कहना कि मैं तुम्हारे लिये खाना ले कर नहीं आयी। मैं यहॉ ठहर नहीं सकती क्योंकि मुझे घर भी देखना है। घर में कोई नहीं है।" कह कर वह घर वापस लौट गयी।

कुछ ही देर में एक गीदड़ आया – वही गीदड़ जो पिछले दिन भी आया था और उसका खाना खा गया था, और उसने खाने के बर्तन में अपना मुॅह डाला।

वह जानवर चावल खाने के लिये इतना उतावला हो रहा था कि उसने अपनी गर्दन उस बर्तन की तंग गर्दन में जबरदस्ती डाल दी। असल में यह बर्तन पिछले दिन वाला बर्तन नहीं था यह उससे बड़ा था और इसकी गर्दन कल वाले बर्तन से तंग थी। यह बात गीदड़ को पता नहीं थी।

जबरदस्ती अपनी गर्दन बर्तन में घुसाने की वजह से उसकी गर्दन उसमें फॅस गयी और वह उसको उसमें से बाहर नहीं निकाल सका। इस तरह से वह इस समय बड़ी भयानक हालत में था।

वह अपना सिर इधर उधर हिलाता हुआ और बर्तन को जमीन से मारता हुआ चारों तरफ को भागने लगा ताकि वह बर्तन फूट जाये और उसका सिर उसमें से बाहर निकल आये।

जमीन पर बर्तन मारने की आवाज काफी हो रही थी सो उससे किसान का ध्यान उधर आकर्षित हुआ। यह देखने के लिये कि यह आवाज कहॉ से आ रही थी किसान ने इधर उधर देखा तो देखा कि एक गीदड़ उसके खाने के बर्तन को लिये हुए इधर से उधर घूम रहा है और उसे जमीन पर पटक रहा है।

उसने तुरन्त अपना बड़ा वाला चाकू उठाया और गीदड़ की तरफ भागा — "अरे तू ठहर जा ज़रा। तो तू है चोर मेरे खाने का। तूने ही कल मेरा खाना चुराया और तू ही उसे आज भी चुराना चाह रहा है।"

गीदड़ चिल्लाया — "मुझे जाने दो किसान भाई मुझे जाने दो। मुझे इस बर्तन में से बाहर निकाल दो तो मैं तुम्हें वही दूॅगा जो तुम चाहोगे।"

किसान बोला — "ठीक है।" और यह कह कर उसने अपने खाने का बर्तन तोड़ दिया और गीदड़ को आजाद कर दिया।

गीदड़ चैन की सॉस लेते हुए बोला — "धन्यवाद किसान भाई धन्यवाद। तुम्हारा बहुत बहुत धन्यवाद। पर तुम आज का यह दिन कभी नहीं भूलोगे।"

कह कर गीदड़ ने उसे गुड डे[75] कहा और राजा के महल की तरफ चल दिया जो वहॉ से कुछ दूरी पर था।

शाही कमरे में पहुॅच कर गीदड़ बोला — "राजा साहब आप मुझे हुक्म करें तो मैं आपकी बेटी की शादी तय करा दूॅ। आप मुझसे गुस्सा मत होइयेगा। मुझे इस मामले पर योर मैजेस्टी से बोलना तो नहीं चाहिये था अगर मैंने राजकुमारी के लायक एक लड़का अभी हाल में न देखा होता तो।"

राजा बोला — "तुम उसको यहॉ ले कर आओ तो फिर हम उसको देखते हैं।"

सो गीदड़ तुरन्त ही उलटे पैरों वापस लौट गया और किसान के घर पहुॅचा। उससे उसने तुरन्त ही पड़ोसी राज्य के राजा के पास तैयार हो कर चलने के लिये कहा। उसने कहा कि वह उसको अपना दामाद बनाने के लिये उसको देखना चाहता था।

पहले तो किसान अपने बे पढ़े लिखे और गरीब होने की वजह से कुछ सकुचाया। वह एक राजा से कैसे बात करनी चाहिये वह इस बारे में क्या जानता था। इतने बड़े लोगों के बीच में कैसे उठना बैठना और बात करना चाहिये यह भी उसको आता नहीं था।

[75] Normal greetings in daytime in English language.

और फिर राजा के पास जाने के लिये उसके पास ठीक से कपड़े भी तो नहीं थे।

पर गीदड़ ने उसको राजा के महल जाने के लिये मना ही लिया और उसकी हर हाल में सहायता करने का वायदा किया। सो गीदड़ और किसान राजा के महल की तरफ चल दिये।

जब वे राजा के महल पहुँचे तो गीदड़ तो योर मैजेस्टी को ढूँढने चला गया और किसान महल में घुसने वाले कमरे में जूते रखने की जगह के पास वहीं फर्श पर उकड़ूँ बैठ गया और राजा का इन्तजार करने लगा।

गीदड़ राजा के पास पहुँचा और बोला — "योर मैजेस्टी मैं उस लड़के को ले आया हूँ जिसके बारे में मैं उस दिन आपसे बात कर रहा था। वह बहुत ही मामूली कपड़ों में आया है और न कुछ दिखावा ही किया है। वह अपने साथ बहुत सारे आदमी भी नहीं लाया ताकि योर मैजेस्टी को उनको ठहराने की कोई परेशानी न हो।

योर मैजेस्टी को इस बात का बुरा नहीं मानना चाहिये बल्कि उसकी समझदारी की तारीफ करनी चाहिये।"

राजा ने उठते हुए कहा — "बिल्कुल बिल्कुल। चलो मुझे उसके पास ले चलो।"

गीदड़ राजा को वहॉ ले आया जहॉ वह किसान को छोड़ गया था और बोला — "यह यहॉ है।"

राजा गीदड़ से बोला — "क्या? यह जो जूतों के पास उकड़ूँ बैठा है?"

फिर राजा किसान से बोला — "अरे दोस्त तुम वहाँ ऐसी जगह क्यों बैठे हो?"

किसान बोला — "यह एक अच्छी और साफ सुथरी जगह है योर मैजेस्टी और यह जगह मेरे जैसे गरीब के बैठने के लिये ठीक है।"

गीदड़ ने कहा — "आप ज़रा इसकी विनम्रता तो देखिये महाराज कि यह कितना विनम्र है।"

राजा बोला — "तुम आज की रात हमारे महल में रहोगे। कुछ मामले हैं जिनके बारे में मैं तुमसे बात करना चाहूँगा। कल अगर सुविधा हुई तो फिर मैं तुम्हारा घर देख कर आऊँगा।"

उस शाम राजा किसान और गीदड़ तीनों बात करते रहे। जैसी कि किसान से उम्मीद की जाती थी किसान बार बार धोखा देता रहा और चालाक गीदड़ बेचारा मामलों को सँभालता रहा। आखिर राजा इस रिश्ते के लिये तैयार हो ही गया।

पर कल क्या होगा। गीदड़ रात भर अपने दिमाग में इसी बात पर विचार करता रहा। जैसे ही राजा और किसान अगले दिन सुबह उठे तो गीदड़ ने उनसे शादी की इजाज़त माँगी और राजा ने हाँ कर दी।

तुरन्त ही गीदड़ किसान के घर की तरफ गया और उसके घर में आग लगा दी।

और जब वे वहॉ आये तो वह रोता हुआ दौड़ कर उनके पास गया और बोला — "राजा साहब मैं आपसे प्रार्थना करता हूॅ कि आप लोग और पास मत आइये। इस आदमी की जायदाद और मकान सब कुछ जल गया है। लगता है कि यह इसके किसी दुश्मन का काम है। मैं आप लोगों से प्रार्थना करता कि अभी आप लोग यहॉ से चले जाइये।"

सो बेचारा सीधा सादा राजा वहॉ से लौट गया। कुछ समय बाद राजा ने अपनी बेटी की शादी गॅवार बे पढ़े लिखे किसान से कर दी।[76]

[76] This folktale has bad coherency and has not a vey good plot.

14 मटर और बीन्स का व्यापारी[77]

बूट पहने हुए बिल्ला जैसी कहानियों में शामिल करने के लिये यह लोक कथा हमने तुम्हारे लिये यूरोप महाद्वीप के इटली देश की लोक कथाओं से ली है।

पहले वाली कहानियों और लोक कथाओं की तरह से इस लोक कथा में कोई जानवर तो ऐसा नहीं है जो एक गरीब आदमी की एक अमीर आदमी की बेटी से उसकी शादी कराने में सहायता करता है और न ही उसको अमीर बनाता है पर इसमें एक बीन का दाना है जो यह काम करता है। आओ पढ़ते हैं कि वह यह काम कैसे करता है।

यह बहुत दिन पुरानी बात है कि इटली के पलेरमो शहर[78] में डौन जिओवानी मिसिरान्ती[79] नाम का एक आदमी रहता था। वह दोपहर को शाम के खाने के सपने देखता था और शाम को रात के खाने के सपने देखता था और रात

[77] Dealer in Peas and Beans – a folktale from Italy from its Palermo area.
Adapted from the book "Italian Folktales", by Italo Calvino". Translated in English by George Martin in 1980. 200 tales. Its 120 tales have been translated in Hindi and are available from hindifolktales@gmail.com

[78] Palermo city is in Italy on its Sicily Island.

[79] Don Giovanni Misiranti – name of the trader

को दोनों समय के खाने के सपने देखता था। यानी वह हर समय खाने के ही सपने देखता रहता था।

एक दिन जब भूख उसका पेट ऐंठ रही थी तो वह बाहर गया और बोला — "ओह मेरी भी क्या किस्मत है। तूने तो बस मुझे छोड़ ही रखा है।"

तभी चलते चलते उसको अपने सामने एक बीन का दाना पड़ा दिखायी दे गया। उसने उसको उठा लिया और सोचा कितनी सुन्दर बीन है। मैं इसको एक बरतन में बो दूँगा। फिर इसमें से बीन का एक पौधा निकल आयेगा और फिर उसमें बहुत सारी सुन्दर फलियॉ लगेंगी।

उन फलियों को मैं सुखा लूँगा। उसमें से निकली बीन्स को मैं फिर एक बड़े से बरतन में बो दूँगा। उसमें फिर और बहुत सारी फलियॉ आ जायेंगी।

तीन साल के अन्दर अन्दर मेरा एक बहुत बड़ा बीन्स का बागीचा[80] हो जायेगा। और चौथे साल में तो मैं एक भंडारघर भी किराये पर ले लूँगा और मैं बीन्स का एक बहुत बड़ा व्यापारी बन जाऊँगा।

[80] Bean farm. See the picture of a bean farm

इस बीच वह चलता चलता सेन्ट ऐन्थोनी गेट[81] से आगे निकल गया। अब वहाँ तो बहुत सारे भंडारघर थे। उनमें से एक भंडारघर के सामने एक स्त्री बैठी हुई थी।

उसने उस स्त्री से पूछा — "मैम, क्या ये भंडारघर किराये पर देने के लिये हैं?"

"जी हाँ जनाब। किसको चाहिये?"

"मेरे मालिक को चाहिये। इस बारे में वह किससे बात करें?"

"ऊपर एक स्त्री रहती है उससे।"

डौन पहले तो कुछ देर सोचता रहा फिर वह अपने एक दोस्त से मिलने चल दिया। उसने अपने दोस्त से कहा — "सेन्ट जौन की खातिर[82] मेरे दोस्त तुम मुझको ना मत करना। तुम मुझे अपना एक जोड़ा कपड़ा चौबीस घंटे के लिये उधार दे दो।"

"ओह नहीं नहीं, बिल्कुल नहीं। तुम यकीनन मेरे कपड़े उधार ले सकते हो।" कह कर उसने डौन को अपने एक जोड़ी कपड़े एक दिन के लिये उधार दे दिये।

डौन ने अपने दोस्त के कपड़े पहने – यहाँ तक कि उसके दस्ताने और घड़ी भी। फिर वह एक नाई के पास अपनी हजामत बनवाने गया।

[81] St Anthony Gate

[82] For the sake of St John

वहॉ से फिर वह सेन्ट ऐन्थोनी गेट के पास आ गया। वह बीन अभी भी उसकी जेब में थी और वह उसको बार बार हाथ डाल कर देख लेता था कि वह वहॉ है कि नहीं।

वह स्त्री अभी भी वहीं बैठी हुई थी। उसने उससे कहा — "क्या वह स्त्री तुम ही हो जिससे मेरे नौकर ने भंडारघर के बारे में बात की थी?"

"जी हॉ जनाब। आप क्या उस स्त्री को देखने के लिये आये हैं जो ये भंडारघर किराये पर देती है? आप मेरे साथ साथ आइये मैं आपको अपने मालिक की पत्नी के पास ले चलती हूॅ।"

डौन का दिल बहुत धड़क रहा था पर वह उस स्त्री के पीछे पीछे चल दिया। वहॉ पहुॅच कर उसने खुद को भंडारघरों के मालिक की पत्नी को अपना परिचय दिया।

एक भले से आदमी को देख कर वह स्त्री उससे बहुत प्रभावित हुई। वह आदमी जो बहुत अच्छी तरीके से कपड़े पहने था – टोप, दस्ताने, सोने की घड़ी और सोने की जंजीर भी। वह उसको बहुत ही भला आदमी लगा।

उस स्त्री ने उसका बहुत अच्छे से स्वागत किया और फिर वे भंडारघर के बारे में बात करने बैठे।

उनकी बातचीत के बीच में एक नौजवान लड़की उस कमरे में घुसी तो डौन तो उसको देखता ही रह गया। उसने मालिक की पत्नी से पूछा कि क्या वह लड़की उसकी कोई रिश्तेदार थी?

मालिक की पत्नी ने जवाब दिया — "यह मेरी बेटी है।"

"अकेली है?"

"हॉ अभी तक तो अकेली ही है।"

"यह सुन कर मुझे बहुत खुशी हुई। मैं भी अभी तक अकेला ही हूॅ।

कुछ देर बाद डौन ने कहा — "भंडारघर के बारे में तो हम लोग तय कर ही चुके हैं अब हम इस बेटी के बारे में भी कुछ तय कर लें। वह लड़की क्या सोचती है?"

"देखेंगे।"

इतने में ही उस स्त्री का पति आ गया। डौन उठा और उसने उसको झुक कर नमस्ते की और बोला — "मैं एक जमींदार हूॅ और मैं आपके तेरह भंडारघर अपनी मटर और बीन्स और बाकी की उपज को रखने के लिये किराये पर लेना चाहूॅगा। इसके अलावा मैं आपकी बेटी का हाथ भी मॉगना चाहता हूॅ।"

"आपका नाम क्या है?"

"मेरा नाम है डौन जिओवानी मिसिरान्ती है और मैं मटर और बीन्स का व्यापारी हूॅ।"

"ठीक है डौन जिओवानी। मुझे सोचने के लिये चौबीस घंटे का समय दो फिर मैं तुम्हारी बात का जवाब दे पाऊॅगा।"

"खुशी से।" कह कर डौन वहॉ से चला गया।

उस रात माँ अपनी बेटी को एक अलग जगह ले गयी और उसको डौन जिओवानी के बारे में बताया जो मटर और बीन्स दोनों का व्यापारी था। उसने अपनी बेटी से कहा कि वह उससे शादी करना चाहता है। वह लड़की तुरन्त तैयार हो गयी।

अगले दिन डौन जिओवानी फिर अपने दोस्त के घर गया और उससे उसकी एक दूसरी पोशाक उधार ली। पर पहला काम उसने यह किया कि वह बीन उसने उस पुरानी पोशाक में से निकाल कर अपनी नयी पोशाक में रखी।

सो दूसरी पोशाक पहन कर वह फिर से उन भंडारघरों के मालिक के घर गया। लड़की का जवाब हाँ में पा कर तो बस वह सातवें आसमान पर पहुँच गया था।

वह बोला — "तब मैं उससे जितनी जल्दी हो सकता है उतनी जल्दी शादी करना चाहूँगा। क्योंकि मेरे पास इतने काम हैं कि मेरे पास बहुत ज़्यादा समय नहीं है।"

लड़की के माता पिता ने जवाब दिया — "हाँ हाँ क्यों नहीं मिस्टर डौन जिओवानी। क्या आप इस समझौते के कागज पर एक हफ्ते में दस्तखत कर देंगे?"

उस सारे समय में डौन जिओवानी अपने दोस्त से रोज नये नये कपड़े उधार लेता रहा और रोज अलग अलग कपड़े पहन कर उनके घर जाता रहा ताकि उसके ससुराल वाले उसको एक अमीर आदमी समझते रहें।

फिर उन दोनों ने एक कौन्ट्रैक्ट पर दस्तखत किये जिसके अनुसार दो हजार सोने के काउन नकद, चादरें, और बिस्तर के दूसरे कपड़ों का दहेज तय हुआ।

इतना सारा पैसा हाथ में देख कर जिओवानी को लगा कि वह तो एक नया ही आदमी हो गया है। अब वह शादी की खरीदारी करने के लिये निकला।

उसने अपनी पत्नी के लिये कुछ भेंटें खरीदीं, अपने लिये कुछ कपड़े खरीदे और और भी कुछ खरीदारी की जो उसको अमीर दिखाने के लिये जरूरी थी।

कौन्ट्रैक्ट पर दस्तखत करने के एक हफ्ते के बाद उसने बहुत बढ़िया कपड़ों में शादी कर ली। पर बीन का वह दाना हमेशा उसकी जेब में ही रखा रहा।

नये शादीशुदा जोड़े ने दावतें कीं और डौन ने उनमें पैसा खूब दिल खोल कर खर्च किया जैसे कि वह कोई बहुत बड़ा आदमी हो। पर उसकी सास उसके इस तरीके से पैसा खरचने के ढंग से कुछ बेचैन हो उठी।

एक दिन उसने डौन से कहा — "तुम मेरी बेटी को अपने खेत दिखाने कब ले जा रहे हो डौन। अब तो फसल की कटाई का समय भी आ गया है।"

डौन को पहले तो कुछ अटपटा लगा और वह कोई सफाई नहीं दे सका। फिर उसने अपनी अच्छी किस्मत से कहा कि "ओ मेरी अच्छी किस्मत तुमको एक बार फिर मेरी सहायता करनी है।"

उसके पास अपनी पत्नी और सास के लिये एक सीडान कुरसी[83] तैयार थी।

सो उसने उनसे कहा — "चलिये, अब चलने का समय आ गया। हम लोग मसीना[84] की तरफ चलेंगे। मैं आगे आगे घोड़े पर चलूँगा और आप लोग मेरे पीछे पीछे आना।"

सो डौन जिओवानी अपने घोड़े पर सवार हो कर आगे आगे चला और उसकी सास और पत्नी सीडान कुरसी में बैठ कर उसके पीछे पीछे चले।

चलते चलते जब वह एक ऐसी जगह आया जहॉ उसको लगा कि वहॉ वह उनको अपने खेत दिखा सकता है वह वहॉ रुक गया।

उसने एक किसान को बुलाया उसको बारह काउन दिये और कहा कि यह तुम्हारे लिये हैं। जब तुम एक सीडान देखो जिसमें दो स्त्रियॉ बैठी हों और वे पूछें कि ये खेत किसके हैं तो उनसे कहना

[83] Sedan chair is like palanquin which is carried by two or sometimes four people.
[84] Messina – a locality on Sicily Island of Italy.

कि ये खेत डौन जिओवानी मिसिरान्ती के हैं जो मटर ओर बीन्स दोनों का व्यापारी है।

इतने में ही वह सीडान भी वहाँ आ गयी। उसमें बैठी स्त्रियों ने पूछा ये सुन्दर खेत किसके हैं। उस किसान ने जवाब दिया कि ये खेत डौन जिओवानी मिसिरान्ती के हैं जो मटर और बीन्स दोनों के व्यापारी हैं।

माँ और बेटी दोनों ही यह सुन कर बहुत खुश हुईं और आगे बढ़ीं। एक दूसरी जगह भी ऐसा ही हुआ। डौन जिओवानी इस तरह घोड़े पर आगे आगे चलता रहा और कुछ किसानों को बारह बारह काउन देता रहा और उनके खेतों को अपने खेत बताता रहा।

यह सब उसकी उस लकी बीन की करामात थी जो उसकी जेब में रखी हुई थी। जब वे एक ऐसी जगह पहुँचे जहाँ से आगे कुछ और दिखाने को नहीं था तो उसने सोचा कि अब वह किसी सराय में पहुँच कर उन दोनों का इन्तजार करता है।

उसने चारों तरफ देखा तो उसको वहाँ पर एक बहुत बड़ा सा महल दिखायी दिया। उसकी खिड़की पर एक जवान लड़की हरे रंग की पोशाक पहने खड़ी थी।

उस लड़की ने इशारे से उसे अन्दर बुलाया। डौन जिओवानी चमकती हुई सीढ़ियों से ऊपर जाने में हिचकिचा रहा था कि कहीं ऐसा न हो कि उस महल की वे सीढ़ियाँ उसके पैरों से गन्दी हो जायें।

कि इतने में वह लड़की नीचे आयी और उसको महल का सब कुछ दिखाते हुए बोली "क्या तुमको यह महल पसन्द आया?"

डौन जिओवानी हॅस कर बोला — "अरे यह तुम क्या कह रही हो। क्या मैं इसको नापसन्द करूॅगा? अरे इस महल में तो मैं लाश बन कर भी रहना पसन्द करूॅगा।"

वह लड़की फिर बोली — "तो जाओ और जा कर इस महल को इधर उधर देखो। तुम दूसरी मंजिल तक जाओ और वहॉ भी इस महल को देखो।"

फिर उसने उसको सारे कमरे दिखाये। वहॉ तो सारे में रत्न ही रत्न लगे हुए थे, बढ़िया परदे लगे हुए थे और वहॉ की सारी चीज़ें ऐसी थी जैसी कि डौन जिओवानी ने कभी सपने में भी नहीं देखीं थीं। वह तो अब तक केवल खाने के ही सपने देखता रहा था।

"तुमने यह सब देखा? यह सब तुम्हारा है इसको ठीक से रखना। यह कौन्ट्रैक्ट है और यह मेरी तरफ से एक छोटी सी भेंट है। मैं ही तो वह बीन हूॅ जिसको तुमने जमीन से उठा कर अपनी जेब में रख लिया था। तुम इसमें रह कर आनन्द करो और मैं अब चलती हूॅ।"

डौन जिओवानी उसके पैरों पर गिरने ही वाला था और उससे कहने ही वाला था कि इस सबके लिये वह उसका कितना आभारी था पर वह हरी पोशाक वाली लड़की तो उसके ऑखों के सामने सामने ही गायब हो गयी।

और वह और वह सुन्दर महल वहीं का वहीं खड़ा रह गया। और अब वह महल उसका था – डौन जिओवानी मिसिरान्ती का।

जब डौन की सास ने वह महल देखा तो बोली — "ओह मेरी बेटी, तुम्हारी किस्मत तो कितनी अच्छी है। ओह डौन जिओवानी, मेरे बेटे, मुझे नहीं मालूम था कि तुम्हारे पास इतना अच्छा महल है। और तुमने इसके बारे में कभी बताया भी तो नहीं।"

"आप ठीक कहती हैं मॉ जी। मैं तो आपको आश्चर्यचकित कर देना चाहता था।" फिर वह उनको उस महल को दिखाने के लिये ले गया हालॉकि वह तो खुद भी उसको पहली बार ही देख रहा था।

उसने उनको चारों तरफ लगे रत्न दिखाये, एक तहखाना दिखाया जो सोने और चॉदी से भरा हुआ था। उसके बीच में एक फावड़ा रखा हुआ था। फिर उन्होंने उसकी घुड़साल देखी जिसमें बहुत सारी गाड़ियॉ भी रखी हुईं थीं और सबसे बाद में देखे उन्होंने अपने बहुत सारे नौकर चाकर।

उन्होंने उसके ससुर को लिखा कि वह अपना सब कुछ बेच दे और अब वहीं उसके पास आ कर ही रहे। डौन जिओवानी मिसिरान्ती ने कुछ इनाम उस औरत को भी भेजा जिसने उसको अपने मालिक की पत्नी से मिलवाया था।

15 डौन जोसफ़ पेयर[85]

एक बार की बात है कि तीन भाई थे। उनके पास एक नाशपाती के पेड़ था उसी पेड़ से कमाई कर के वे रहते थे। एक दिन उन तीनों में से एक भाई कुछ नाशपातियॉ तोड़ने गया तो उसने देखा कि उस पेड़ की नाशपातियॉ तो पहले से ही तोड़ी जा चुकी हैं।

उसने अपने भाइयों से कहा — "भाइयो अब हम क्या करें क्योंकि हमारी नाशपातियॉ तो पहले ही किसी ने तोड़ ली हैं।" सो उस रात सबसे बड़ा भाई अपने नाशपाती के पेड़ की चौकीदारी करने गया।

पर वह रात को सो गया। जब सुबह हुई तो दूसरा भाई वहॉ गया तो उसने बड़े भाई से पूछा "भैया तुमने क्या किया। क्या तुम कल सो गये थे। देखो न फिर किसी ने हमारी नाशपातियॉ तोड़ ली हैं। आज की रात मैं पहरा दूँगा।" सो उस रात उसके छोटे भाई ने पहरा दिया।

अगली सुबह जब उनका सबसे छोटा भाई उधर आया तो उसने देखा कि उनके पेड़ की नाशपतियॉ फिर से तोड़ी जा चुकी हैं।

---

[85] Don Joseph Pear. Taken from "Italian Popular Tales". By Thomas Frederick Crane. 1885. Read Crane's other Italian tales in the book "Italy Ki Lokpriya Kathayen", translated in Hindi in four parts available from hindifolktales@gmail.com

उसने पूछा — "क्या तुम ठीक से पहरा दे रहे थे। तुम जाओ आज की रात में इस पेड़ की रखवाली करूँगा। मुझे देखना यह है कि वे लोग मुझे भी धोखा दे सकते हैं या नहीं।"

सो उस रात सबसे छोटा भाई वहॉ पहरा देने के लिये रुक गया। वहॉ उसने पेड़ के नीचे रात को बजाना और नाचना शुरू कर दिया। जब वह नहीं बजा रहा था तो एक लोमड़ी ने देखा कि लगता है कि अब लड़का सोने चला गया सो वह वहॉ आयी पेड़ पर चढ़ी और बची हुई नाशपातियॉ तोड़ कर ले जाने लगी।

जब वह पेड़ से नीचे उतर कर जाने लगी तो लड़के ने उस पर अपनी बन्दूक का निशाना लगाया और उसे चलाने ही वाला था कि वह बोली — "मुझे मत मारो। मुझे मत मारो डौन जोसेफ़। क्योंकि मैं तुम्हें डौन जोसेफ़ पेयर के नाम से पुकारूँगी और तुम्हारी शादी राजा की बेटी से करा दूँगी।"

यह सुन कर डौन जोसेफ़ बोला — "पर अब मैं तुम्हें मिलूँगा कहॉ। और राजा तुम्हारा क्या लगता है जो वह अपनी बेटी की शादी मुझसे कर देगा। वह तो तुम्हें एक ठोकर मारेगा और तुम उसके सामने फिर कभी जाने की हिम्मत ही नहीं करोगी।"

फिर भी डौन जोसेफ़ ने दया कर के उसे जाने दिया। लोमड़ी वहॉ से एक जंगल की तरफ चली गयी। वहॉ से उसने कई तरह के शिकार पकड़े – गिलहरी बड़े खरगोश चिड़ियें और उनको राजा के दरबार में ले गयी।

अब वह तो देखने वाला दृश्य था। राजा तो उसको देखता ही रह गया। लोमड़ी बोली —"सर मैजेस्टी। मुझे डौन जोसेफ़ पेयर ने ये शिकार ले कर आपके पास भेजा है। आप उनकी तरफ से ये शिकार स्वीकार करें।"

राजा बोला — "सुनो ओ छोटी लोमड़ी। मैंने कभी डौन जोसेफ़ पेयर का नाम नहीं सुना जो तुम मेरे सामने ले रही हो।"

लोमड़ी ने वे शिकार वहीं छोड़े और फिर डौन जोसेफ़ के पास भाग गयी। डौन के पास पहुँच कर वह बोली — "आराम से जोसेफ़ आराम से। मैंने तुम्हारा पहला शिकार राजा के पास पहुँचा दिया है और उसने उसे स्वीकार भी कर लिया है।"

एक हफ्ते बाद लोमड़ी जंगल गयी। वहाँ उसने सबसे अच्छे जानवर पकड़े और उनके ले कर राजा के पास पहुँच गयी और बोली — "सर मैजेस्टी। डौन जोसेफ़ पेयर ने आपके लिये ये शिकार भेजे हैं।"

राजा बोला — "मेरी बच्ची। मुझे नहीं मालूम कि यह डौन जोसेफ़ पेयर कौन है। मुझे लगता है कि तुम्हें कहीं और भेजा जा रहा है। मैं बताऊँ तुम्हें। तुम इस डौन जोसेफ़ पेयर को यहाँ ले कर आओ ताकि मैं इन्हें जान जाऊँ कि ये कौन हैं।"

लोमड़ी को तो वे शिकार वहीं छोड़ कर जाने थे सो वह बोली — "सरकार मैं गलती पर नहीं हूँ। मुझे मेरे मालिक ने यहाँ भेजा है और कहा है कि वह राजकुमारी से शादी करना चाहते हैं।"

लोमड़ी डौन जोसेफ़ पेयर के पास लौट आयी और उससे बोली — "आराम से। सब ठीक चल रहा है। मैं राजा के पास एक बार और गयी तो फिर तो मामला तय ही समझो।"

डौन बोला — "मुझे विश्वास नहीं होता जब तक कि राजकुमारी मेरी पत्नी न बन जाये।"

इसके बाद लोमड़ी एक ओगरे[86] की पत्नी के पास गयी और उससे जा कर कहा — "क्या हम अपना सोना चॉदी बॉट लें।"

ओगरे की पत्नी बोली — "हॉ हॉ क्यों नहीं। तुम मापने वाला ले आओ तो हम यह काम भी पूरा कर लेंगे।"

लोमड़ी राजा के पास गयी और उससे बजाय यह कहने के कि "ओगरे की पत्नी आपका माप उधार मॉग रही है।" उसने कहा कि "डौन जोसेफ़ पेयर आपसे अपना सोना चॉदी नापने के लिये आपका माप कुछ देर के लिये उधार लेना चाहते हैं।"

राजा ने सोचा "क्या? इस डौन जोसेफ़ पेयर के पास इतना ख़जाना है जो इसको माप की जरूरत पड़ गयी। क्या वह मुझसे भी ज़्यादा अमीर है।"

उसने लोमड़ी को माप दे दिया।

जब वह अपनी बेटी के साथ अकेले में था तो उसने बातो बातों में उससे कहा — "ऐसा लगता है कि यह डौन जोसेफ़ पेयर तो

[86] Ogre (Ogress – feminine) is a supernatural animal. He eats human beings too.

बहुत अमीर है क्योंकि वह तो अपना सोना चाँदी अलग अलग कर रहा है।"

उधर लोमड़ी माप ले कर ओगरे की पत्नी के पास गयी और उसने सोने और चाँदी के नाप नाप कर अलग अलग ढेर लगाने शुरू कर दिये। जब उसने यह खत्म कर लिया तब लोमड़ी डौन जोसेफ़ के पास गयी और उसे नये कपड़े पहनाये।

उसने उसे एक हीरे जड़ी घड़ी पहनायी। कई अँगूठियाँ पहनायीं जिनमें से एक उसकी होने वाली दुलहिन के लिये भी थी। और उसको उसी तरह से तैयार किया जैसे उसकी शादी हो रही हो।

अब लोमड़ी ने उससे कहा — "देखो डौन जोसेफ़। मैं तुमसे पहले जाती हूँ। बाद में तुम राजा के पास आना और अपनी दुलहिन को ले कर चर्च जाना।"

डौन राजा के पास पहुँचा उसने अपनी दुलहिन को लिया और चर्च चला गया। जब उनकी शादी हो गयी तो राजकुमारी तो गाड़ी में बैठ गयी और दुलहा घोड़े पर सवार हो गया।

लोमड़ी ने डौन जोसेफ़ से इशारों से बताया कि वह उसके आगे आगे जा रही है और वह उसके पीछे पीछे आये और गाड़ी और घोड़े उसके भी पीछे आयें।

वे लोग इसी तरह से चल दिये। लोमड़ी एक भेड़ों के रहने की जगह आयी तो वहाँ एक लड़का भेड़ें चरा रहा था। जैसे ही लड़के ने लोमड़ी को देखा तो उस पर एक पत्थर मारा तो लोमड़ी रोने

लगी। रोते रोते वह बोली — "मैं तुझे मरवा दूँगी। क्या तुझे वे घुड़सवार आते दिखायी दे रहे हैं। अब मैं तुझे उनसे मरवा दूँगी।"

लड़का डर गया डर के मारे बोला — "अगर तुम मेरे साथ ऐसा कुछ न करो तो मैं फिर तुम्हें पत्थर नहीं मारूँगा।"

लोमड़ी बोली — "अगर तू चाहता है कि मैं तुझे न मरवाऊँ तो जब राजा इधर से गुजरे और पूछे कि ये भेड़ें किसकी हैं तो तू कहना कि ये भेड़ें डौन जोसेफ़ पेयर की हैं। क्योंकि डौन जोसेफ पेयर उनके दामाद हैं और वह तुझे बहुत इनाम देंगे।"

जब वे सब लोग उधर से गुजरे तो राजा ने पूछा "ये भेड़ें किसकी हैं?"

लड़के ने जैसा लोमड़ी ने उससे कहने के लिये कहा था कह दिया "ये सारी भेड़ें डौन जोसेफ़ पेयर की हैं।"

राजा यह सुन कर बहुत खुश हुआ उसने उसको कुछ पैसे दिये। सब और आगे चले। लोमड़ी डौन जोसेफ़ पेयर से दस कदम आगे चल रही थी। डौन जोसेफ़ पेयर ने लोमड़ी से फुसफुसा कर पूछा — "तुम मुझे कहाँ ले जा रही हो। ऐसा कौन सा देश है जहाँ जा कर मुझे लगेगा कि मैं बहुत अमीर हूँ। हम कहाँ जा रहे हैं।"

लोमड़ी बोली — "आराम से डौन जोसेफ़ पेयर। यह सब तुम मुझ पर छोड़ दो।"

वे लोग चलते चलते रहे। आगे चल कर लोमड़ी ने जानवरों का एक और झुंड देखा जिसे एक गड़रिया चरा रहा था। उसने भी

जैसे ही लोमड़ी को देखा तो उस पर पत्थर मारे तो लोमड़ी ने उसको भी वही धमकी दी और वही बोलने के लिये कहा जो उसने पहली जगह बोलने के लिये कहा था।

राजा उधर से गुजरा तो उसने पूछा — "ओ गड़रिये ये किसके जानवर हैं।"

"जी ये डौन जोसेफ़ पेयर के जानवर हैं।" राजा यह सुन कर बहुत खुश हुआ कि उसके दामाद के पास इतनी सम्पत्ति है उसने उसको एक सोने का सिक्का दिया।

डौन जोसेफ़ पेयर यह देख कर एक तरफ तो बहुत खुश था पर दूसरी तरफ बहुत परेशान था। वह नहीं जानता था कि इस सबका अन्त क्या होगा।

लोमड़ी ने एक बार पीछे मुड़ कर देखा तो डौन जोसेफ़ पेयर बोला — "ओ लोमड़ी तुम मुझे कहॉ ले जा रही हो। तुम तो मुझे बर्बाद कर दोगी।"

लोमड़ी चलती रही जैसे उसे इस बात से कोई मतलब ही नहीं था। तब वे एक ऐसी जगह आये जहॉ बहुत सारे घोड़े और घोड़ियॉ चर रहे थे। वह लड़का जो उन्हें चरा रहा था उसने लोमड़ी के ऊपर एक पत्थर फेंका।

उसने लड़के को डरा धमका कर उससे भी वही कहलवा दिया। जब राजा ने पूछा कि वे गोड़े किसके थे तो उसने जवाब दिया डौन जोसेफ़ पेयर के।

चलते चलते वे एक कुँए के पास तक आ गये। ओगरे की पत्नी वहीं बैठी हुई थी। उसको देखते ही लोमड़ी ने डर से काँपना और वहाँ से ऐसे भागना शुरू कर दिया जैसे वह किसी से डर कर भाग रही हो। "ओ मेरी दोस्त। देखो वे लोग आ रहे हैं। ये घुड़सवार हमें मार डालेंगे। चलो हमको इस कुँए में छिप जाना चाहिये।"

ओगरे की पत्नी भी यह सुन कर डर गयी और बोली — "हाँ हाँ हमें कुँए में छिप जाना चाहिये।"

लोमड़ी ने कहा — "क्या मैं तुम्हें पहले फेंक दूँ।"

"हाँ हाँ दोस्त तुम ऐसा ही करो।" और लोमड़ी ने उसे कुँए में धक्का दे दिया। फिर लोमड़ी उसके महल में आयी।

डौन जोसेफ़ पेयर भी अपनी पत्नी और ससुर के साथ साथ उसके पीछे पीछे महल में आ गया। लोमड़ी ने उन सबको महल घुमाया उसका खजाना दिखाया।

डौन जोसेफ़ पेयर ने जब अपनी किस्मत बदलती देखी तो वह बहुत खुश हुआ। उससे ज़्यादा उसका ससुर राजा अपनी बेटी की किस्मत देख कर हुआ। कुछ दिनों तक वहाँ खूब धूमधाम रही फिर राजा सन्तुष्ट और सुखी अपने देश लौट गया और अपनी बेटी को उसके पति के पास छोड़ गया।

एक दिन लोमड़ी अपनी खिड़की से बाहर देख रही थी तो उसने देखा डौन जोसेफ़ पेयर और उसकी पत्नी बाहर छत पर जा रहे थे।

वहाँ पहुँच कर डौन जोसेफ़ पेयर ने थोड़ी सी धूल अपने हाथ में ली और लोमड़ी के सिर पर फेंक दी।

लोमड़ी ने अपना सिर उठाया और डौन जोसेफ़ पेयर से पूछा — "इतना सब अच्छा काम करने के बाद इसका क्या मतलब है। ख्याल रखना वरना मैं बोल पड़ूँगी।"

पत्नी ने पति से पूछा — "यह लोमड़ी क्या कह रही है।"

पति बोला — "कोई खास बात नहीं। मैंने उसके ऊपर ज़रा सी धूल फेंकी तो वह गुस्सा हो गयी।" कह कर उसने थोड़ी सी धूल नीचे से और उठायी और फिर से लोमड़ी के सिर पर फेंक दी।

लोमड़ी ने फिर गुस्से में भर कर कहा — "जोसेफ़ तुम समझ लो कि मैं बोल दूँगी।"

अब डौन जोसेफ़ पेयर को डर लगने लगा कि लोमड़ी उसकी पत्नी को सब बता देगी। सो उसने एक मिट्टी का बड़ा सा बर्तन उठाया और लोमड़ी के सिर पर दे मारा। इसकी मार से लोमड़ी तुरन्त ही मर गयी।

इस तरह उस कृतघ्न ने उस लोमड़ी को मार दिया जिसने उसको आज इस जगह पहुँचाया। पर डौन जोसेफ़ पेयर अपनी पत्नी के साथ उस सम्पत्ति का सुख भोगता रहा।

List of Puss in Boots Like Stories

Puss in Boots is a very popular story of Europe, but this type of story is heard and told in other countries too. We have found the following stories like this story. If you know any other story like this, please do send it to us we will try to include it in our next edition.

1. Puss in Boots-1697 (France, Europe)
2. Puss in Boots-1562 (Italy, Europe)
3. Pippo-1634 (Italy, Europe)
4. Domingo's Cat (Brazil, South America)
5. Lord Peter (Norway, Europe)
6. Hamdanee (Zanzibar, Tanzania, Africa)
7. Sultan Sule (Nigeria, Africa)
8. Giovanauza Fox (Italy, Europe)
9. The Little Fox and the Pomegranate King (China, Asia)
10. The Fox and the King's Son (Georgia, Asia)
11. The Daughter of the Sun and the Moon (Angola, Africa)
12. Match-making Jackal (India, Asia)
13. The Clever Jackal (India, Asia)
14. Dealer in Peas and Beans (Italy, Europe)
15. Don Joseph Pear (Italy, Europe)

Books in "One Story Many Colors" Series

1. Cat and Rat Like Stories (20 stories)
2. Bluebeard Like Stories (7 stories)
3. Tom Thumb Like Stories (12 stories)
4. Six Swans Like Stories
5. Three Oranges Like Stories (9 stories)
6. Snow White Like Stories
7. Sleeping Beauty Like Stories
8. Ping King Like Stories – 3 parts
9. Puss in Boots Like Storie (15 stories)
10. Hansel and Gratel Like Stories (4 stories)
11. Red Riding Hood Like Stories
12. Cinderella Like Stories in Europe (14+11 stories)
12. Cinderella in the World (21 stories)
13. Rumplestiltuskin Like Stories (22 stories)
14. Ali Baba and Forty Thieves Like Stories (4 stories)
15. Crocodile and Monkey Like Stories
16. Lion and Man Like Stories (14 stories)
17. Pome and Peel Like Stories (6 stories)
18. Soldier and Death Like Stories
19. Tees Maar Kahan Like Stories (11 stories)
20. Lion and Rabbit like Stories
21. Frog Princess Like Stories (7 stories)

देश विदेश की लोक कथाओं की सीरीज़ में प्रकाशित पुस्तकें —

इस कड़ी में 100 से भी अधिक पुस्तकें उपलब्ध हैं। पुस्तक सूची की पूरी जानकारी के लिये लिखें — hindifolktales@gmail.com

नीचे लिखी हुई पुस्तकें हिन्दी ब्रेल में संसार भर में उन सबको निःशुल्क उपलब्ध है जो हिन्दी ब्रेल पढ़ सकते हैं।

1 नाइजीरिया की लोक कथाऐं–1
2 नाइजीरिया की लोक कथाऐं–2
3 इथियोपिया की लोक कथाऐं–1
4 रैवन की लोक कथाऐं–1

नीचे लिखी हुई पुस्तकें हार्ड कापी में बाजार में उपलब्ध हैं।

1 रैवन की लोक कथाऐं–1 — भोपाल, इन्द्रा पब्लिशिंग हाउस, 2016
2 इथियोपिया की लोक कथाऐं–1 — देहली, प्रभात प्रकाशन, 2017, 120 पृष्ठ
3 इथियोपिया की लोक कथाऐं–2 — देहली, प्रभात प्रकाशन, 2017, 120 पृष्ठ
4 शीबा की रानी मकेडा — देहली, प्रभात प्रकाशन, 2019, 160 पृष्ठ
5 राजा सोलोमन — देहली, प्रभात प्रकाशन, 2019, 144 पृष्ठ
6 रैवन की लोक कथाऐं — देहली, प्रभात प्रकाशन, 2020, 176 पृष्ठ
7 बंगाल की लोक कथाऐं — देहली, नेशनल बुक ट्रस्ट, 2020, 213 पृष्ठ

Facebook Group
https://www.facebook.com/groups/hindifolktales/?ref=bookmarks

Updated in 2022

लेखिका के बारे में

सुषमा गुप्ता का जन्म उत्तर प्रदेश के अलीगढ़ शहर में सन् **1943** में हुआ था। इन्होंने आगरा विश्वविद्यालय से समाज शास्त्र और अर्थ शास्त्र में ऐम ए किया और फिर मेरठ विश्वविद्यालय से बी ऐड किया। **1976** में ये नाइजीरिया चली गयीं। वहाँ इन्होंने यूनिवर्सिटी औफ़ इबादान से लाइब्रेरी साइन्स में ऐम ऐल ऐस किया और एक थियोलोजीकल कौलिज में **10** वर्षों तक लाइब्रेरियन का कार्य किया।

वहाँ से फिर ये इथियोपिया चली गयीं और वहाँ एडिस अबाबा यूनिवर्सिटी के इन्स्टीट्यूट औफ़ इथियोपियन स्टडीज़ की लाइब्रेरी में **3** साल कार्य किया। तत्पश्चात इनको दक्षिणी अफ्रीका के एक देश लिसोठो के विश्वविद्यालय में इन्स्टीट्यूट औफ़ सदर्न अफ्रीकन स्टडीज़ में **1** साल कार्य करने का अवसर मिला। वहाँ से **1993** में ये यू ऐस ए आ गयीं जहाँ इन्होंने फिर से मास्टर औफ़ लाइब्रेरी ऐंड इनफौर्मेशन साइन्स किया। फिर **4** साल ओटोमोटिव इन्डस्ट्री एक्शन ग्रुप के पुस्तकालय में कार्य किया।

1998 में इन्होंने सेवा निवृत्ति ले ली और अपनी एक वेब साइट बनायी – www.sushmajee.com। तब से ये उसी वेब साइट पर काम कर रहीं हैं। उस वेब साइट में हिन्दू धर्म के साथ साथ बच्चों के लिये भी काफी सामग्री है।

भिन्न भिन्न देशों में रहने से इनको अपने कार्यकाल में वहाँ की बहुत सारी लोक कथाओं को जानने का अवसर मिला – कुछ पढ़ने से, कुछ लोगों से सुनने से और कुछ ऐसे साधनों से जो केवल इन्हीं को उपलब्ध थे। उन सबको देख कर इनको ऐसा लगा कि ये लोक कथाऐं हिन्दी जानने वाले बच्चों और हिन्दी में रिसर्च करने वालों को तो कभी उपलब्ध ही नहीं हो पायेंगी – हिन्दी की तो बात ही अलग है अंग्रेजी में भी नहीं मिल पायेंगीं।

इसलिये इन्होंने न्यूनतम हिन्दी पढ़ने वालों को ध्यान में रखते हुए उन लोक कथाओं को हिन्दी में लिखना प्रारम्भ किया। इन लोक कथाओं में अफ्रीका, एशिया और दक्षिणी अमेरिका के देशों की लोक कथाओं पर अधिक ध्यान दिया गया है पर उत्तरी अमेरिका और यूरोप के देशों की भी कुछ लोक कथाऐं सम्मिलित कर ली गयी हैं।

अभी तक **2500** से अधिक लोक कथाऐं हिन्दी में लिखी जा चुकी है। इनको "देश विदेश की लोक कथाऐं" और "लोक कथाओं की क्लासिक पुस्तकें" क्रम में प्रकाशित करने का प्रयास किया जा रहा है। आशा है कि इस प्रकाशन के माध्यम से हम इन लोक कथाओं को जन जन तक पहुँचा सकेंगे।

विंडसर, कैनेडा
2022